1 सलातीन

[illegible]

1 सलातीन की किताब के मुसन्निफ़ की बाबत कोई नहीं जानता — हालाकि कुछ मुफस्सिरों ने राये पेश है कि एज्रा, हिज़िकिएल और यर्मयाह इन तीनों में से कोई इसका मुसन्निफ़ होगा — क्यूंकि इस में बयानशुद: सारे काम का बयोरा 400 साल से ज़्यादा अर्से को घेर लेता है — कलम्बंदो की तालीफ़ व तरतीब के लिए कई एक मा' नवी अशया का इस्तेमाल किया गया था — तस्नीफ़ व तालीफ़ के तरीक़े जैसे कुछ एक सुराग मौज़ूआत पूरी किताब में बुने गए हैं मा'नवी अश्या की फ़ितरी ज़रुरियात का इस्तेमाल किया गया है जो इशारा करता है एक मुअल्लिफ़ या मुसन्निफ़ की तरफ़ न कि एक से ज़्यादा मुअल्लिफों या मुसन्निफों की तरफ़।

[illegible]

किताब की तसनीफ़ की तारीख़ तक़रीबन 590 - 538 क़बल मसीह है।

इसे तब लिखा गया था जब सुलेमान का पहला हैकल पहले से मौजूद था (1 सलातीन 8:8)।

[illegible]

बनी इस्राईल और तमाम कलाम के क़रिईन।

[illegible]

2 सलातीन की किताब 1 सलातीन का ख़ात्मा है जो दाउद की मौत के बाद सुलेमान की बादशाही के उरूज की चर्चा करते हुए शुरू होता है — कहानी एक मुत्तहिद बादशाही से शुरू होती है मगर एक तक्सीम शुद:कौम जो दो हिस्सों में बटकर ख़त्म हो जाती है यानी यहूदा और इस्राईल — 1 और 2 सलातीन इब्रानी कलाम में अभी भी एक जुड़ी हुई किताब है।

[illegible]

तफरीक

बैरूनी ख़ाका

1. सुलेमान की हकुमत — 1:1-11:43
2. सलतनत मुनतशर हो जाती है — 12:1-16:34
3. एलियाह और अख़ीअब — 17:1-22:53

[illegible]

1 और दाऊद बादशाह बुड्ढा और उम्र दराज़ हुआ; और वह उसे
कपड़े उढ़ाते, लेकिन वह गर्म न होता था।
2 तब उसके ख़ादिमों ने उससे कहा, कि हमारे मालिक बादशाह
के लिए एक जवान कुँवारी ढूँडी जाए, जो बादशाह के सामने खड़ी
रहे और उसकी देख भाल किया करे, और तेरे पहलू में लेट रहा
करे ताकि हमारे मालिक बादशाह को गर्मी पहुँचे।
3 चुनाँचे उन्होंने इस्राईल की सारी हुकूमत में एक ख़ूबसूरत
लड़की तलाश करते करते शून्मीत अबीशाग को पाया, और उसे
बादशाह के पास लाए।
4 और वह लड़की बहुत हसीन थी, तब वह बादशाह की देख
भाल और उसकी ख़िदमत करने लगी; लेकिन बादशाह उससे
वाक़िफ़ न हुआ।

[illegible]

5 तब हज्जीत के बेटे अदूनियाह ने सर उठाया और कहने लगा,
"मैं बादशाह हूँगा।" और अपने लिए रथ और सवार और पचास
आदमी, जो उसके आगे — आगे दौड़ें, तैयार किए।
6 उसके बाप ने उसको कभी इतना भी कहकर ग़मगीन नहीं
किया, कि तू ने यह क्यूँ किया है? और वह बहुत ख़ूबसूरत भी था,
और अबीसलोम के बाद पैदा हुआ था।

7 और उसने ज़रोयाह के बेटे योआब और अबीयातर काहिन से
बात की; और यह दोनों अदूनियाह के पैरोकार होकर उसकी मदद
करने लगे।
8 लेकिन सदूक़ काहिन, और यहूयदा' के बेटे बिनायाह, और
नातन नबी, और सिम'ई और रे'ई और दाऊद के बहादुर लोगों ने
अदूनियाह का साथ न दिया।
9 और अदूनियाह ने भेड़ें और बैल और मोटे — मोटे जानवर
ज़ुहलत के पत्थर के पास, जो 'ऐन राजिल के बराबर है, ज़बह
किए, और अपने सब भाइयों या'नी बादशाह के बेटों की, और
सब यहूदाह के लोगों की, जो बादशाह के मुलाज़िम थे, दा'वत
की;
10 लेकिन नातन नबी और बिनायाह और बहादुर लोगों और
अपने भाई सुलेमान को न बुलाया।
11 तब नातन ने सुलेमान की माँ बतसबा' से कहा, क्या तू ने
नहीं सुना कि हज्जीत का बेटा अदूनियाह बादशाह बन बैठा है,
और हमारे मालिक दाऊद को यह मालूम नहीं?
12 अब तू आ कि मैं तुझे सलाह दूँ, ताकि तू अपनी और अपने
बेटे सुलेमान की जान बचा सके।
13 तू दाऊद बादशाह के सामने जाकर उससे कह, “ऐ मेरे
मालिक, ऐ बादशाह, क्या तू ने अपनी लौंडी से क़सम खाकर नहीं
कहा कि यक़ीनन तेरा बेटा सुलेमान मेरे बाद हुकूमत करेगा, और
वही मेरे तख़्त पर बैठेगा? पस अदूनियाह क्यूँ बादशाही करता
है?
14 और देख, तू बादशाह से बात करती ही होगी कि मैं भी तेरे
बाद आ पहुँचूँगा, और तेरी बातों की तस्दीक़ करूँगा।”
15 तब बतसबा' अन्दर कोठरी में बादशाह के पास गई; और
बादशाह बहुत बुड्ढा था, और शूनमीत अबीशाग बादशाह की
ख़िदमत करती थी।

16 और बतसबा' ने झुककर बादशाह को सिज्दा किया।
बादशाह ने कहा, “तू क्या चाहती है?”
17 उसने उससे कहा, “ऐ मेरे मालिक, तू ने ख़ुदावन्द अपने
ख़ुदा की क़सम खाकर अपनी लौंडी से कहा था, यक़ीनन तेरा बेटा
सुलेमान मेरे बाद हुकूमत करेगा, और वही मेरे तख़्त पर बैठेगा।
18 पर देख, अब तो अदूनियाह बादशाह बन बैठा है, और ऐ
मेरे मालिक बादशाह, तुझ को इसकी ख़बर नहीं।
19 और उसने बहुत से बैल और मोटे मोटे जानवर और भेड़ें
ज़बह की हैं; और बादशाह के सब बेटों और अबीयातर काहिन,
और लश्कर के सरदार योआब की दा'वत की है, लेकिन तेरे बन्दे
सुलेमान को उसने नहीं बुलाया।
20 लेकिन ऐ मेरे मालिक, सारे इस्राईल की निगाह तुझ पर है,
ताकि तू उनको बताए कि मेरे मालिक बादशाह के तख़्त पर कौन
उसके बाद बैठेगा।
21 वरना यह होगा कि जब मेरा मालिक बादशाह अपने बाप
— दादा के साथ सो जाएगा, तो मैं और मेरा बेटा सुलेमान दोनों
क़ुसूरवार ठहरेंगे।”
22 वह अभी बादशाह से बात ही कर रही थी कि नातन नबी
आ गया।
23 और उन्होंने बादशाह को ख़बर दी, “देख, नातन नबी हाज़िर
है।” और जब वह बादशाह के सामने आया, तो उसने मुँह के बल
गिर कर बादशाह को सिज्दा किया।
24 और नातन कहने लगा, ऐ मेरे मालिक बादशाह! क्या तू ने
फ़रमाया है, कि मेरे बाद अदूनियाह बादशाह हो, और वही मेरे
तख़्त पर बैठे'?
25 क्यूँकि उसने आज जाकर बैल और मोटे — मोटे जानवर
और भेड़ें कसरत से ज़बह की हैं, और बादशाह के सब बेटों और
लश्कर के सरदारों और अबीयातर काहिन की दा'वत की है; और
देख, वह उसके सामने खा पी रहे हैं और कहते हैं, 'अदूनियाह

बादशाह ज़िन्दा रहे!“
26 लेकिन मुझ तेरे ख़ादिम को, और सदूक़ काहिन और यहूयदा'
के बेटे बिनायाह और तेरे ख़ादिम सुलेमान को उसने नहीं बुलाया।
27 क्या यह बात मेरे मालिक बादशाह की तरफ़ से है? और तू
ने अपने ख़ादिमों को बताया भी नहीं कि मेरे मालिक बादशाह के
बा'द, उसके तख़्त पर कौन बैठेगा?”

[illegible]

28 तब दाऊद बादशाह ने जवाब दिया और फ़रमाया, “बतसबा'
को मेरे पास बुलाओ।” तब वह बादशाह के सामने आई और
बादशाह के सामने खड़ी हुई।
29 बादशाह ने क़सम खाकर कहा कि, ख़ुदावन्द की हयात की
क़सम जिसने मेरी जान को हर तरह की आफ़त से रिहाई दी,
30 कि सचमुच जैसी मैंने ख़ुदावन्द इस्राईल के ख़ुदा की क़सम
तुझ से खाई और कहा, कि यक़ीनन तेरा बेटा सुलेमान मेरे बाद
बादशाह होगा, और वही मेरी जगह मेरे तख़्त पर बैठेगा, तो
सचमुच मैं आज के दिन वैसा ही करूँगा।
31 तब बतसबा' ज़मीन पर मुँह के बल गिरी और बादशाह
को सिज्दा करके कहा कि “मेरा मालिक दाऊद बादशाह, हमेशा
ज़िन्दा रहे।”
32 और दाऊद बादशाह ने फ़रमाया, “कि सदूक़ काहिन आयर
नातन नबी और यहूयदा' के बेटे बिनायाह को मेरे पास बुलाओ।”
तब वह बादशाह के सामने आए।
33 बादशाह ने उनको फ़रमाया कि तुम अपने मालिक के
मुलाज़िमों को अपने साथ लो, और मेरे बेटे सुलेमान को मेरे ही
खच्चर पर सवार कराओ; और उसे जैहून को ले जाओ;
34 और वहाँ सदूक़ काहिन और नातन नबी उसे मसह करें,
कि वह इस्राईल का बादशाह हो; और तुम नरसिंगा फूँकना और
कहना कि सुलेमान बादशाह ज़िन्दा रहे!“

35 फिर तुम उसके पीछे — पीछे चले आना, और वह आकर
मेरे तख़्त पर बैठे; क्यूँकि वही मेरी जगह बादशाह होगा, और
मैंने उसे मुक़र्रर किया है कि वह इस्राईल और यहूदाह का हाकिम
हो।"
36 तब यहूयदा' के बेटे बिनायाह ने बादशाह के जवाब में कहा,
"आमीन! ख़ुदावन्द मेरे मालिक बादशाह का ख़ुदा भी ऐसा ही
कहे।
37 जैसे ख़ुदावन्द मेरे मालिक बादशाह के साथ रहा, वैसे ही
वह सुलेमान के साथ रहे; और उसके तख़्त को मेरे मालिक दाऊद
बादशाह के तख़्त से बड़ा बनाए।"
38 इसलिए सदूक़ काहिन और नातन नबी और यहूयदा' का
बेटा बिनायाह और करेती और फ़लेती गए, और सुलेमान को
दाऊद बादशाह के खच्चर पर सवार कराया और उसे जैहून पर
लाए।
39 और सदूक़ काहिन ने ख़ेमे से तेल का सींग लिया और
सुलेमान को मसह किया। और उन्होंने नरसिंगा फूंका और सब
लोगों ने कहा, सुलेमान बादशाह ज़िन्दा रहे!"
40 और सब लोग उसके पीछे आए और उन्होंने बाँसुलियाँ
बजाईं और बड़ी ख़ुशी मनाई, ऐसा कि ज़मीन उनके शोरओ —
ग़ुल से गूँज उठी।
41 और अदूनियाह और उसके सब मेहमान जो उसके साथ थे,
खा ही चुके थे कि उन्होंने यह सुना। और जब योआब को नरसिंगे
की आवाज़ सुनाई दी तो उसने कहा, शहर में यह हंगामा और
शोर क्यूँ मच रहा है?"
42 वह यह कह ही रहा था कि देखो, अबीयातर काहिन का बेटा
यूनतन आया; और अदूनियाह ने उससे कहा, "भीतर आ; क्यूँकि
तू लायक़ शख़्स है, और अच्छी ख़बर लाया होगा।"
43 यूनतन ने अदूनियाह को जवाब दिया, वाक़ई हमारे मालिक

दाऊद बादशाह ने सुलेमान को बादशाह बना दिया है।
44 और बादशाह ने सदूक़ काहिन और नातन नबी और यहूयदा'
के बेटे बिनायाह और करेतियों और फ़लेतियों को उसके साथ
भेजा। तब उन्होंने बादशाह के ख़च्चर पर उसे सवार कराया।
45 और सदूक़ काहिन और नातन नबी ने जैहून पर उसको मसह
करके बादशाह बनाया है; तब वह वहीं से ख़ुशी करते आए हैं, ऐसा
कि शहर गूँज गया। वह शोर जो तुम ने सुना यही है।
46 और सुलेमान तख़्त — ए — हुकूमत पर बैठ भी गया है।
47 इसके 'अलावा बादशाह के मुलाज़िम हमारे मालिक दाऊद
बादशाह को मुबारकबाद देने आए और कहने लगे कि तेरा ख़ुदा,
सुलेमान के नाम को तेरे नाम से ज़्यादा मुम्ताज़ करे, और उसके
तख़्त को तेरे तख़्त से बड़ा बनाए; और बादशाह अपने बिस्तर पर
सिजदे में हो गया।
48 और बादशाह ने भी ऐसा फ़रमाया कि ख़ुदावन्द इस्राईल
का ख़ुदा मुबारक हो, जिसने एक वारिस बख़्शा कि वह मेरी ही
आँखों के देखते हुए आज मेरे तख़्त पर बैठे।
49 फिर तो अदूनियाह के सब मेहमान डर गए, और उठ खड़े
हुए और हर एक ने अपना रास्ता लिया।
50 और अदूनियाह सुलेमान की वजह से डर के मारे उठा, और
जाकर मज़बह के सींग पकड़ लिए।
51 और सुलेमान को यह बताया गया कि "देख, अदूनियाह
सुलेमान बादशाह से डरता है, क्यूँकि उसने मज़बह के सींग पकड़
रख्खे हैं; और कहता है कि सुलेमान बादशाह आज के दिन मुझ
से क़सम खाए, कि वह अपने ख़ादिम को तलवार से क़त्ल नहीं
करेगा।"
52 सुलेमान ने कहा, "अगर वह अपने को लायक़ साबित करे,
तो उसका एक बाल भी ज़मीन पर नहीं गिरेगा; लेकिन अगर
उसमें शरारत पाई जाएगी तो वह मारा जाएगा।"

53 तब सुलेमान बादशाह ने लोग भेजे, और वह उसे मज़बह पर
से उतार लाए। उसने आकर सुलेमान बादशाह को सिज्दा किया;
और सुलेमान ने उससे कहा, “अपने घर जा।”

2

[illegible]

1 और दाऊद के मरने के दिन नज़दीकआए, तब उसने अपने
बेटे सुलेमान को वसीय्यत की और कहा कि,
2 “मैं उसी रास्ते जाने वाला हूँ जो सारे जहान का है; इसलिए
तू मज़बूत हो और मर्दानगी दिखा।
3 और जो मूसा की शरी'अत में लिखा है, उसके मुताबिक़
ख़ुदावन्द अपने ख़ुदा की हिदायत को मानकर उसके रास्तों पर
चल; और उसके क़ानून पर और उसके फ़रमानों और हुक्मों और
शहादतों पर 'अमल कर, ताकि जो कुछ तू करे और जहाँ कहीं तू
जाए, सब में तुझे कामयाबी हो,
4 और ख़ुदावन्द अपनी उस बात को क़ाईम रख्खे, जो उसने
मेरे हक़ में कही कि, 'अगर तेरी औलाद अपने रास्ते की हिफ़ाज़त
करके अपने सारे दिल और अपनी सारी जान से मेरे सामने
सच्चाई से चले, तो इस्राईल के तख़्त पर तेरे यहाँ आदमी की
कमी न होगी।
5 “और तू ख़ुद जानता है कि ज़रोयाह के बेटे योआब ने मुझ से
क्या — क्या किया, या'नी उसने इस्राईली लश्कर के दो सरदारों,
नेर के बेटे अबनेर और यतर के बेटे 'अमासा से क्या किया, जिनको
उसने क़त्ल किया और सुलह के वक़्त ख़ून — ए — जंग बहाया,
और ख़ून — ए — जंग को अपने पटके पर जो उसकी कमर में
बंधा था और अपनी जूतियों पर जो उसके पाँवों में थी लगाया।
6 इसलिए तू अपनी हिकमत से काम लेना और उसके सफ़ेद
सर को क़ब्र में सलामत उतरने न देना।

7 लेकिन बरज़िली जिल'आदी के बेटों पर महेरबानी करना, और वह उनमें शामिल हों जो तेरे दस्तरख़्वान पर खाना खाया करेंगे, क्यूँकि वह ऐसा ही करने को मेरे पास आए जब मैं तेरे भाई अबीसलोम की वजह से भागा था।

8 और देख, बिनयमीनी जीरा का बेटा बहूरीमी सिम'ई तेरे साथ है, जिसने उस दिन जब कि मैं महनायम को जाता था बहुत बुरी तरह मुझ पर ला'नत की, लेकिन वह यरदन पर मुझ से मिलने को आया, और मैंने ख़ुदावन्द की क़सम खाकर उससे कहा कि "मैं तुझे तलवार से क़त्ल नहीं करूँगा।

9 तब तू उसको बेगुनाह न ठहराना, क्यूँकि तू "अक़्लमन्द आदमी है और तू जानता है कि तुझे उसके साथ क्या करना चाहिए, इसलिए तू उसका सफ़ेद सर लहू लुहान करके क़ब्र में उतारना।"

10 और दाऊद अपने बाप — दादा के साथ सो गया और दाऊद के शहर में दफ़्न हुआ।

11 और कुल मुद्दत जिसमें दाऊद ने इस्राईल पर हुकूमत की चालीस साल की थी; सात साल तो उसने हबरून में हुकूमत की, और सैंतीस साल येरूशलेम में।

12 और सुलेमान अपने बाप दाऊद के तख़्त पर बैठा और उसकी हुकूमत बहुत ही मज़्बूत हुई।

[illegible]

13 तब हज्जीत का बेटा अदूनियाह, सुलेमान की माँ बतसबा' के पास आया; उसने पूछा, "तू सुलह के ख़्याल से आया है?" उसने कहा, "सुलह के ख़्याल से।"

14 फिर उसने कहा, "मुझे तुझ से कुछ कहना है।" उसने कहा, "कह।"

15 उसने कहा, "तू जानती है कि हुकूमत मेरी थी, और सब इस्राईली मेरी तरफ़ मुतवज्जिह थे कि मैं हुकूमत करूँ, लेकिन

हुकूमत पलट गई और मेरे भाई की हो गई, क्यूँकि ख़ुदावन्द की
तरफ़ से यह उसी की थी।
16 इसलिए मेरी तुझ से एक दरख़्वास्त है, नामंज़ूर न कर।"
उसने कहा, "बयान कर।"
17 उसने कहा, "ज़रा सुलेमान बादशाह से कह, क्यूँकि वह तेरी
बात को नहीं टालेगा, कि अबीशाग शून्मीत को मुझे ब्याह दे।"
18 बतसबा' ने कहा, "अच्छा, मैं तेरे लिए बादशाह से
'दरख़्वास्त करूँगी।"
19 तब बतसबा' सुलेमान बादशाह के पास गई, ताकि उससे
अदूनियाह के लिए 'दरख़्वास्त करे। बादशाह उसके इस्तक़बाल
के वास्ते उठा और उसके सामने झुका, फिर अपने तख़्त पर बैठा;
और उसने बादशाह की माँ के लिए एक तख़्त लगवाया, तब वह
उसके दहने हाथ बैठी;
20 और कहने लगी, "मेरी तुझ से एक छोटी सी दरख़्वास्त है;
तू मुझ से इन्कार न करना।" बादशाह ने उससे कहा, "ऐ मेरी माँ,
इरशाद फ़रमा; मुझे तुझ से इन्कार न होगा।"
21 उसने कहा, "अबीशाग शून्मीत तेरे भाई अदूनियाह को
ब्याह दी जाए।"
22 सुलेमान बादशाह ने अपनी माँ को जवाब दिया, "तू
अबीशाग शून्मीत ही को अदूनियाह के लिए क्यूँ माँगती है?
उसके लिए हुकूमत भी माँग, क्यूँकि वह तो मेरा बड़ा भाई है;
बल्कि उसके लिए क्या, अबीयातर काहिन और ज़रोयाह के बेटे
योआब के लिए भी माँग।"
23 तब सुलेमान बादशाह ने ख़ुदावन्द की क़सम खाई और कहा
कि "अगर अदूनियाह ने यह बात अपनी ही जान के ख़िलाफ़ नहीं
कही, तो ख़ुदा मुझ से ऐसा ही, बल्कि इससे भी ज़्यादा करे।
24 इसलिए अब ख़ुदावन्द की हयात की क़सम जिसने मुझ को
क़याम बख़्शा, और मुझ को मेरे बाप दाऊद के तख़्त पर बिठाया,

और मेरे लिए अपने वा'दे के मुताबिक़ एक घर बनाया, यक़ीनन
अदूनियाह आज ही क़त्ल किया जाएगा।"
25 और सुलेमान बादशाह ने यहूयदा' के बेटे बिनायाह को
भेजा: उसने उस पर ऐसा वार किया कि वह मर गया।
26 फिर बादशाह ने अबीयातर काहिन से कहा, "तू अनतोत
को अपने खेतों में चला जा क्यूँकि तू क़त्ल के लायक़ है, लेकिन मैं
इस वक़्त तुझ को क़त्ल नहीं करता क्यूँकि तू मेरे बाप दाऊद के
सामने ख़ुदावन्द यहोवाह का सन्दूक़ उठाया करता था; और जो
जो मुसीबत मेरे बाप पर आई वह तुझ पर भी आई।"
27 तब सुलेमान ने अबीयातर को ख़ुदावन्द के काहिन के उहदे
से बरतरफ़ किया, ताकि वह ख़ुदावन्द के उस क़ौल को पूरा करे
जो उसने शीलोह में एली के घराने के हक़ में कहा था।
28 और यह ख़बर योआब तक पहुँची: क्यूँकि योआब
अदूनियाह का तो पैरोकार हो गया था, अगर्चे वह अबीसलोम
का पैरोकार नहीं हुआ था। इसलिए योआब ख़ुदावन्द के ख़ेमे को
भाग गया, और मज़बह के सींग पकड़ लिए।
29 और सुलेमान बादशाह को ख़बर हुई, "योआब ख़ुदावन्द के
ख़ैमे को भाग गया है; और देख, वह मज़बह के पास है।" तब
सुलेमान ने यहूयदा' के बेटे बिनायाह को यह कहकर भेजा कि,
"जाकर उस पर वार कर।"
30 तब बिनायाह ख़ुदावन्द के ख़ैमे को गया, और उसने उससे
कहा, "बादशाह यूँ फ़रमाता है कि तू बाहर निकल आ।" उसने
कहा, "नहीं, बल्कि मैं यहीं मरूँगा।" तब बिनायाह ने लौट कर
बादशाह को ख़बर दी कि "योआब ने ऐसा कहा है, और उसने
मुझे ऐसा जवाब दिया।"
31 तब बादशाह ने उससे कहा, "जैसा उसने कहा वैसा ही कर,
और उस पर वार कर और उसे दफ़्न कर दे; ताकि तू उस ख़ून को
जो योआब ने बे वजह बहाया, मुझ पर से और मेरे बाप के घर पर

से दूर कर दे।

32 और ख़ुदावन्द उसका ख़ून उल्टा उसी के सर पर लाएगा,
क्यूँकि उसने दो शख़्सों पर जो उससे ज़्यादा रास्तबाज़ और अच्छे
थे, या'नी नेर के बेटे अबनेर पर जो इस्राईली लश्कर का सरदार
था और यतर के बेटे 'अमासा पर जो यहूदाह की फ़ौज का सरदार
था, वार किया और उनको तलवार से क़त्ल किया, और मेरे बाप
दाऊद को मा'लूम न था।

33 इसलिए उनका ख़ून योआब के सर पर और उसकी नसल के
सर पर हमेशा तक रहेगा, लेकिन दाऊद पर और उसकी नसल पर
और उसके घर पर और उसके तख़्त पर हमेशा तक ख़ुदावन्द की
तरफ़ से सलामती होगी।"

34 तब यहूयदा' का बेटा बिनायाह गया, और उसने उस पर
वार करके उसे क़त्ल किया; और वह वीरान के बीच अपने ही घर
में दफ़्न हुआ।

35 और बादशाह ने यहूयदा' के बेटे बिनायाह को उसकी जगह
लश्कर पर मुक़र्रर किया; और सदूक़ काहिन को बादशाह ने
अबीयातर की जगह रखा।

36 फिर बादशाह ने सिम'ई को बुला भेजा और उससे कहा कि
"येरूशलेम में अपने लिए एक घर बना ले और वहीं रह, और वहाँ
से कहीं न जाना;

37 क्यूँकि जिस दिन तू बाहर निकलेगा और नहर — ए —
क़िद्रोन के पार जाएगा, तू यक़ीन जान ले कि तू ज़रूर मारा
जाएगा, और तेरा ख़ून तेरे ही सर पर होगा।"

38 और सिम'ई ने बादशाह से कहा, "यह बात अच्छी है; जैसा
मेरे मालिक बादशाह ने कहा है, तेरा ख़ादिम वैसा ही करेगा।"
इसलिए सिम्ई बहुत दिनों तक येरूशलेम में रहा।

39 और तीन साल के आख़िर में ऐसा हुआ कि सिम्ई के नौकरों
में से दो आदमी जात के बादशाह अकीस — बिन — मा'काह

के यहाँ भाग गए। और उन्होंने सिम'ई को बताया कि, “देख, तेरे
नौकर जात में है।”
40 तब सिम'ई ने उठकर अपने गधे पर ज़ीन कसा, और अपने
नौकरों की तलाश में जात को अकीस के पास गया; और सिम्'ई
जाकर अपने नौकरों को जात से ले आया।
41 और यह ख़बर सुलेमान को मिली कि सिम'ई येरूशलेम से
जात को गया था और वापस आ गया है,
42 तब बादशाह ने सिम'ई को बुला भेजा और उससे कहा, “क्या
मैंने तुझे ख़ुदावन्द की क़सम न खिलाई और तुझ को बता न दिया
कि, 'यक़ीन जान ले कि जिस दिन तू बाहर निकला और इधर —
उधर कहीं गया, तो ज़रूर मारा जाएगा'? और तू ने मुझ से यह
कहा कि जो बात मैंने सुनी, वह अच्छी है।
43 इसलिए तूने ख़ुदावन्द की क़सम को, और उस हुक्म को
जिसकी मैंने तुझे ताकीद की, क्यूँ न माना?”
44 और बादशाह ने सिम'ई से यह भी कहा, “तू उस सारी शरारत
को जो तू ने मेरे बाप दाऊद से की, जिससे तेरा दिल वाकिफ़ है
जानता है; इसलिए ख़ुदावन्द तेरी शरारत को उल्टा तेरे ही सर
पर लाएगा।
45 लेकिन सुलेमान बादशाह मुबारक होगा, और दाऊद का
तख़्त ख़ुदावन्द के सामने हमेशा क़ाईम रहेगा।”
46 और बादशाह ने यहूयदा' के बेटे बिनायाह को हुक्म दिया,
तब उसने बाहर जाकर उस पर ऐसा वार किया कि वह मर गया।
और हुकूमत सुलेमान के हाथ में मज़बूत हो गई।

3

??????? ?? ?????????? ??????

1 और सुलेमान ने मिस्र के बादशाह फ़िर'औन से रिश्तेदारी
की, और फ़िर'औन की बेटी ब्याह ली; और जब तक अपना महल

और ख़ुदावन्द का घर और येरूशलेम के चरों तरफ़ दीवार न बना
चुका, उसे दाऊद के शहर में लाकर रख्वा।
2 लेकिन लोग ऊँची जगहों में क़ुर्बानी करते थे, क्यूँकि उन दिनों
तक कोई घर ख़ुदावन्द के नाम के लिए नहीं बना था।
3 और सुलेमान ख़ुदावन्द से मुहब्बत रखता और अपने बाप
दाऊद के क़ानून पर चलता था। इतना ज़रूर है कि वह ऊँची
जगहों में क़ुर्बानी करता और बख़ूर जलाता था।
4 और बादशाह जिबा'ऊन को गया ताकि क़ुर्बानी करे, क्यूँकि
वह ख़ास ऊँची जगह थी, और सुलेमान ने उस मज़बह पर एक
हज़ार सोख़्तनी क़ुर्बानियाँ पेश कीं।
5 जिबाऊन में ख़ुदावन्द रात के वक़्त सुलेमान को ख़्वाब में
दिखाई दिया, और ख़ुदावन्द ने कहा, "माँग, मैं तुझे क्या दूँ।"
6 सुलेमान ने कहा, "तू ने अपने ख़ादिम मेरे बाप दाऊद पर बड़ा
एहसान किया, इसलिए कि वह तेरे सामने सच्चाई और सदाक़त
और तेरे साथ सीधे दिल से चलता रहा, और तू ने उसके वास्ते
यह बड़ा एहसान रख छोड़ा था कि तू ने उसे एक बेटा इनायत
किया जो उसके तख़्त पर बैठे, जैसा आज के दिन है।
7 और अब ऐ ख़ुदावन्द, मेरे ख़ुदा! तू ने अपने ख़ादिम को मेरे
बाप दाऊद की जगह बादशाह बनाया है, और मैं छोटा लड़का
ही हूँ और मुझे बाहर जाने और भीतर आने का तमीज़ नहीं।
8 और तेरा ख़ादिम तेरी क़ौम के बीच में है, जिसे तू ने चुन लिया
है; वह ऐसी क़ौम है जो कसरत के ज़रिए' न गिनी जा सकती है
न शुमार हो सकती है।
9 तब तू अपने ख़ादिम को अपनी क़ौम का इन्साफ़ करने के
लिए समझने वाला दिल 'इनायत कर, ताकि मैं बुरे और भले में
फ़र्क़ कर सकूँ; क्यूँकि तेरी इस बड़ी क़ौम का इन्साफ़ कौन कर
सकता है?"
10 और यह बात ख़ुदावन्द को पसन्द आई कि सुलेमान ने यह

चीज़ माँगी।
11 और ख़ुदा ने उससे कहा, “चूँकि तू ने यह चीज़ माँगी, और
अपने लिए लम्बी उम्र की दरख़्वास्त न की और न अपने लिए
दौलत का सवाल किया और न अपने दुश्मनों की जान माँगीं,
बल्कि इन्साफ़ पसन्दी के लिए तू ने अपने वास्ते 'अक़्लमन्दी की
दरख़्वास्त की है।
12 इसलिए देख, मैंने तेरी दरख़्वास्त के मुताबिक़ किया; मैंने
एक 'अक़्लमन्द और समझने वाला दिल तुझ को बख़्शा, ऐसा कि
तेरी तरह न तो कोई तुझ से पहले हुआ और न कोई तेरे बाद तुझ
सा पैदा होगा।
13 और मैंने तुझ को कुछ और भी दिया जो तू ने नही माँगा,
या'नी दौलत और 'इज़्ज़त ऐसा कि बादशाहों में तेरी उम्र भर कोई
तेरी तरह न होगा।
14 और अगर तू मेरे रास्तों पर चले, और मेरे क़ानून और मेरे
अहकाम को माने जैसे तेरा बाप दाऊद चलता रहा, तो मैं तेरी
उम्र लम्बी करूँगा।”
15 फिर सुलेमान जाग गया, और देखा कि एक ख़्वाब था; और
वह येरूशलेम में आया और ख़ुदावन्द के 'अहद के सन्दूक़ के आगे
खड़ा हुआ और सोख़्तनी क़ुर्बानियाँ पेश कीं और सलामती की
क़ुर्बानियाँ पेश कीं और अपने सब मुलाज़िमों की दा'वत की।
16 उस वक़्त दो 'औरतें जो कस्बियाँ थीं, बादशाह के पास आईं
और उसके आगे खड़ी हुईं।
17 और एक 'औरत कहने लगी, ऐ मेरे मालिक! मैं और यह
'औरत दोनों एक ही घर में रहती हैं; और इसके साथ घर में रहते
हुए मेरे एक बच्चा हुआ।
18 और मेरे जच्चा हो जाने के बा'द, तीसरे दिन ऐसा हुआ कि
यह 'औरत भी ज़च्चा हो गई; और हम एक साथ ही थीं कोई ग़ैर
— शख़्स उस घर में न था, सिवा हम दोनों के जो घर ही में थीं।

19 और इस 'औरत का बच्चा रात को मर गया, क्यूँकि यह उसके
ऊपर ही लेट गई थी।
20 तब यह आधी रात को उठी; और जिस वक़्त तेरी लौड़ी
सोती थी। मेरे बेटे को मेरी बग़ल से लेकर अपनी गोद में लिटा
लिया, और अपने मरे हुए बच्चे को मेरी गोद में डाल दिया।
21 सुबह को जब मैं उठी कि अपने बच्चे को दूध पिलाऊँ, तो
क्या देखती हूँ कि वह मरा पड़ा है; लेकिन जब मैंने सुबह को ग़ौर
किया, तो देखा कि यह मेरा लड़का नहीं है जो मेरे हुआ था।
22 "फिर वह दूसरी 'औरत कहने लगी, नहीं, यह जो ज़िन्दा
है मेरा बेटा है और मरा हुआ तेरा बेटा है।" इसने जवाब दिया,
"नहीं, मरा हुआ तेरा बेटा है और ज़िन्दा मेरा बेटा है।" तब वह
बादशाह के सामने इसी तरह कहती रहीं।
23 तब बादशाह ने कहा, "एक कहती है, 'यह जो ज़िन्दा है मेरा
बेटा है, और जो मर गया है वह तेरा बेटा है, और दूसरी कहती
है, 'नहीं, बल्कि जो मर गया है वह तेरा बेटा है, और जो ज़िन्दा
है वह मेरा बेटा है।"
24 तब बादशाह ने कहा, "मुझे एक तलवार ला दो।" तब वह
बादशाह के पास तलवार ले आए।
25 फिर बादशाह ने फ़रमाया, "इस जीते बच्चे को चीर कर दो
टुकड़े कर डालो, और आधा एक को और आधा दूसरी को दे दो।"
26 तब उस 'औरत ने जिसका वह ज़िन्दा बच्चा था बादशाह से
दरख़्वास्त की, क्यूँकि उसके दिल में अपने बेटे की ममता थी, तब
वह कहने लगी, "ऐ मेरे मालिक! यह ज़िन्दा बच्चा उसी को दे दे,
लेकिन उसे जान से न मरवा।" लेकिन दूसरी ने कहा, "यह न मेरा
हो न तेरा, उसे चीर डालो।"
27 तब बादशाह ने हुक्म किया, "ज़िन्दा बच्चा उसी को दो, और
उसे जान से न मारो; क्यूँकि वही उसकी माँ है।"
28 और सारे इस्राईल ने यह इन्साफ़ जो बादशाह ने किया सुना,

और वह बादशाह से डरने लगे; क्यूँकि उन्होंने देखा कि 'अदालत
करने के लिए ख़ुदा की हिकमत उसके दिल में है।

4

[illegible]

1 और सुलेमान बादशाह तमाम इस्राईल का बादशाह था।
2 और जो सरदार उसके पास थे, वह यह थे: सदूक़ का बेटा
अज़रियाह काहिन,
3 और सीसा के बेटे इलीहोरिफ़ और अख़ियाह मुंशी थे, और
अख़ीलूद का बेटा यहूसफ़त मुवर्रिख़ था;
4 और यहूयदा' का बेटा बिनायाह लश्कर का सरदार, और
सदूक़ और अबीयातर काहिन थे;
5 और नातन का बेटा अज़रियाह मन्सबदारों का दारोग़ा था,
और नातन का बेटा ज़बूद काहिन और बादशाह का दोस्त था;
6 और अख़ीसर महल का दीवान, और 'अबदा का बेटा
अदूनिराम बेगार का मुन्सरिम था।
7 और सुलेमान ने सब इस्राईल पर बारह मन्सबदार मुक़र्रर
किए, जो बादशाह और उसके घराने के लिए ख़ुराक पहुँचाते थे।
हर एक को साल में महीना भर ख़ूराक पहुँचानी पड़ती थी।
8 उनके नाम यह हैं: इफ़्राईम के पहाड़ी मुल्क में बिनहूर;
9 और मक़स और सा'लबीम और बैतशम्स और ऐलोन
बैतहनान में बिन दिक़र
10 और अरबूत में बिन हसद था, और शोको और हिफ़र की
सारी सर — ज़मीन उसके 'इलाक़े में थी;
11 और दोर के सारे मुर्तफ़ा' इलाक़े में बिन अबीनदाब था, और
सुलेमान की बेटी ताफ़त उसकी बीवी थी;
12 और अख़ीलूद का बेटा बा'ना था, जिसके ज़िम्मा ता'नक
और मजिद्दो और सारा बैतशान था, जो ज़रतान से मुत्तसिल

और यज़र'एल के नीचे बैतशान से अबील महोला तक या'नी
युक़म'आम से उधर तक था;
13 और बिन जबर रामात जिल'आद में था, और मनस्सी के
बेटे याईर की बस्तियाँ जो जिल'आद में हैं उसके ज़िम्मा थीं, और
बसन में अरजूब का 'इलाक़ा भी इसी के ज़िम्मा था जिसमें साठ
बड़े शहर थे जिनकी शहर पनाहें और पीतल के बेंडे थे;
14 और इददु का बेटा अख़ीनदाब महनायम में था;
15 और अख़ीमा'ज़ नफ़्ताली में था, इसने भी सुलेमान की बेटी
बसीमत को ब्याह लिया था;
16 और हूसी का बेटा बा'ना आशर और ब'अलोत में था;
17 और फ़रूह का बेटा यहूसफ़त इश्कार में था;
18 और ऐला का बेटा सिमई बिनयमीन में था;
19 और ऊरी का बेटा जबर जिल'आद के 'इलाक़े में था, जो
अमोरियों के बादशाह सीहोन और बसन के बादशाह 'ओज का
मुल्क था, उस मुल्क का वही अकेला मन्सबदार था।
20 और यहूदाह और इस्राईल के लोग कसरत में समुन्दर के
किनारे की रेत की तरह थे, और खाते — पीते और ख़ुश रहते थे।
21 और सुलेमान दरिया — ए — फ़ुरात से फ़िलिस्तियों के
मुल्क तक, और मिस्र की सरहद तक सब हुकूमतों पर हाकिम
था। वह उसके लिए हदिये लाती थीं, और सुलेमान की उम्र भर
उसकी फ़रमाबरदार रहीं।
22 और सुलेमान की एक दिन की ख़ुराक यह थी: तीस कोर
मैदा और साठ कोर आटा,
23 और दस मोटे — मोटे बैल और चराई पर के बीस बैल, एक
सौ भेड़े, और इनके 'अलावा चिकारे और हिरन और छोटे हिरन
और मोटे ताज़ा मुर्ग़।
24 क्यूँकि वह दरिया — ए — फ़ुरात की इस तरफ़ के सब मुल्क
पर, तिफ़सह से ग़ज़्ज़ा तक, या'नी सब बादशाहों पर जो दरिया

— ए — फ़ुरात की इस तरफ़ थे फ़रमानरवा था, और उसके चारों
तरफ़ सब पास पड़ोस में सबसे उसकी सुलह थी।
25 और सुलेमान की उम्र भर यहूदाह और इस्राईल का एक —
एक आदमी अपनी ताक और अपने अंजीर के दरख़्त के नीचे, दान
से बैरसबा' तक अमन से रहता था।
26 और सुलेमान के यहाँ उसके रथों के लिए चालीस हज़ार थान
और बारह हज़ार सवार थे'।
27 और उन मन्सबदारों में से हर एक अपने महीने में सुलेमान
बादशाह के लिए, और उन सबके लिए जो सुलेमान बादशाह के
दस्तरख़्वान पर आते थे, ख़ूराक पहुँचाता था; वह किसी चीज़ की
कमी न होने देते थे।
28 और लोग अपने — अपने फ़र्ज़ के मुताबिक़ घोड़ों और तेज़
रफ़्तार समन्दों के लिए जौ और भूसा उसी जगह ले आते थे जहाँ
वह मन्सबदार होते थे।
29 और ख़ुदा ने सुलेमान को हिकमत और समझ बहुत ही
ज़्यादा, और दिल की बड़ाई भी 'इनायत की जैसी समुन्दर के
किनारे की रेत होती है।
30 और सुलेमान की हिकमत सब अहल — ए — मशरिक़ की
हिकमत, और मिस्र की सारी हिकमत पर फ़ोक़ियत रखती थी;
31 इसलिए कि वह सब आदमियों से, बल्कि अज़राही ऐतान
और हैमान और कलकूल और दरदा' से, जो बनी महूल थे, ज़्यादा
दानिशमन्द था; और चारों तरफ़ की सब क़ौमों में उसकी शोहरत
थी।
32 और उसने तीन हज़ार मिसालें कहीं और उसके एक हज़ार
पाँच गीत थे;
33 और उसने दरख़्तों का, या'नी लुबनान के देवदार से लेकर
ज़ूफ़ा तक का जो दीवारों पर उगता है, बयान किया; और चौपायों
और परिन्दों और रेंगने वाले जानदारों और मछलियों का भी

बयान किया।
34 और सब क़ौमों में से ज़मीन के सब बादशाहों की तरफ़ से
जिन्होंने उसकी हिकमत की शोहरत सुनी थी, लोग सुलेमान की
हिकमत को सुनने आते थे।

5

[illegible]

1 और सूर के बादशाह हीराम ने अपने ख़ादिमों को सुलेमान के
पास भेजा, क्यूँकि उसने सुना था कि उन्होंने उसे उसके बाप की
जगह मसह करके बादशाह बनाया है; इसलिए कि हीराम हमेशा
दाऊद का दोस्त रहा था।
2 और सुलेमान ने हीराम को कहला भेजा,
3 "तू जानता है कि मेरा बाप दाऊद, ख़ुदावन्द अपने ख़ुदा के
नाम के लिए घर न बना सका; क्यूँकि उसके चारों ओर हर तरफ़
लड़ाइयाँ होती रहीं, जब तक कि ख़ुदावन्द ने उन सब को उसके
पाँवों के तलवों के नीचे न कर दिया।
4 और अब ख़ुदावन्द मेरे ख़ुदा ने मुझ को हर तरफ़ अमन दिया
है; न तो कोई मुख़ालिफ़ है, न आफ़त की मार।
5 इसलिए देख, ख़ुदावन्द अपने ख़ुदा के नाम के लिए एक घर
बनाने का मेरा इरादा है, जैसा ख़ुदावन्द ने मेरे बाप दाऊद से कहा
था, 'तेरा बेटा, जिसको मैं तेरी जगह तेरे तख़्त पर बिठाऊँगा, वही
मेरे नाम के लिए घर बनाएगा।
6 इसलिए अब तू हुक्म कर कि वह मेरे लिए लुबनान से देवदार
के दरख़्तों को काटें; और मेरे मुलाज़िम तेरे मुलाज़िमों के साथ
रहेंगे, और मैं तेरे मुलाज़िमों के लिए जितनी मज़दूरी तू कहेगा
तुझे दूँगा; क्यूँकि तू जानता है कि हम में ऐसा कोई नहीं जो
सैदानियों की तरह लकड़ी काटना जानता हो।"

7 जब हीराम ने सुलेमान की बातें सुनी, तो बहुत ही ख़ुश हुआ
और कहने लगा कि “आज के दिन ख़ुदावन्द मुबारक हो, जिसने
दाऊद को इस बड़ी क़ौम के लिए एक 'अक़्लमन्द बेटा बख़्शा।”
8 और हीराम ने सुलेमान को कहला भेजा कि “जो पैग़ाम तू
ने मुझे भेजा मैंने उसको सुन लिया है, और मैं देवदार की लकड़ी
और सनोबर की लकड़ी के बारे में तेरी मर्ज़ी पूरी करूँगा।
9 मेरे मुलाज़िम उनको लुबनान से उतारकर समुन्दर तक
लाएँगे, और मैं उनके बेड़े बन्धवा दूँगा; ताकि समुन्दर ही समुन्दर
उस जगह जाएँ जिसे तू ठहराए। और वहाँ उनको खुलवा दूँगा,
फिर तू उनको ले लेना, और तू मेरे घराने के लिए ख़ुराक देकर मेरी
मर्ज़ी पूरी करना।”
10 फिर हीराम ने सुलेमान को उसकी मर्ज़ी के मुताबिक़ देवदार
की लकड़ी और सनोबर की लकड़ी दी;
11 और सुलेमान ने हीराम को उसके घराने के खाने के लिए
बीस हज़ार कोर' गेहूँ और बीस कोर ख़ालिस तेल दिया; इसी तरह
सुलेमान हीराम को हर साल देता रहा।
12 और ख़ुदावन्द ने सुलेमान को, जैसा उसने उससे वा'दा किया
था हिकमत बख़्शी; और हीराम और सुलेमान के दर्मियान सुलह
थी, और उन दोनों ने बाहम 'अहद बाँध लिया।
13 और सुलेमान बादशाह ने सारे इस्राईल में से बेगारी लगाए,
वह बेगारी तीस हज़ार आदमी थे,
14 और वह हर महीने उनमें से दस — दस हज़ार को बारी —
बारी से लुबनान भेजता था। तब वह एक महीने लुबनान पर और
दो महीने अपने घर रहते; और अदूनिराम उन बेगारियों के ऊपर
था।
15 और सुलेमान के सत्तर हज़ार बोझ उठाने वाले, और अस्सी
हज़ार दरख़्त काटने वाले पहाड़ों में थे।
16 इनके 'अलावा सुलेमान के तीन हज़ार तीन सौ ख़ास
मन्सबदार थे, जो इस काम पर मुख़्तार थे और उन लोगों पर जो

काम करते थे सरदार थे।
17 और बादशाह के हुक्म से वह बड़े बड़े बेशक़ीमत पत्थर
निकाल कर लाए, ताकि घर की बुनियाद घड़े हुए पत्थरों की डाली
जाए।
18 और सुलेमान के राजगीरों, और हीराम के राजगीरों, और
जिबलियों ने उनको तराशा और घर की ता'मीर के लिए लकड़ी
और पत्थरों को तैयार किया।

6

1 और बनी — इस्राईल के मुल्क — ए — मिस्र से निकल आने
के बाद चार सौ अस्सीवें साल, इस्राईल पर सुलेमान की हुकूमत
के चौथे साल, ज़ीव के महीने में जो दूसरा महीना है, ऐसा हुआ
कि उसने ख़ुदावन्द का घर बनाना शुरू' किया।
2 और जो घर सुलेमान बादशाह ने ख़ुदावन्द के लिए बनाया
उसकी लम्बाई साठ हाथ' और चौड़ाई बीस हाथ और ऊँचाई तीस
हाथ थी।
3 और उस घर की हैकल के सामने एक बरआमदा, उस घर की
चौड़ाई के मुताबिक़ बीस हाथ लम्बा था, और उस घर के सामने
उसकी चौड़ाई दस हाथ थी।
4 और उसने उस घर के लिए झरोके बनाए जिनमें जाली जड़ी
हुई थी।
5 और उसने चारों तरफ़ घर की दीवार से लगी हुई, या'नी हैकल
और इल्हामगाह की दीवारों से लगी हुई, चारों तरफ़ मन्ज़िलें
बनाई और हुजरे भी चारों तरफ़ बनाए।
6 सबसे निचली मन्ज़िल पाँच हाथ चौड़ी, और बीच की छ:
हाथ चौड़ी, और तीसरी सात हाथ चौड़ी थी; क्यूँकि उसने घर की
दीवार के चारों तरफ़ बाहर के रुख पुश्ते बनाए थे, ताकि कड़ियाँ
घर की दीवारों को पकड़े हुए न हों।

7 और वह घर जब ता'मीर हो रहा था, तो ऐसे पत्थरों का
बनाया गया जो कान पर तैयार किए जाते थे; इसलिए उसकी
ता'मीर के वक़्त न मार तोल, न कुल्हाड़ी, न लोहे के किसी औज़ार
की आवाज़ उस घर में सुनाई दी।
8 और बीच के हुजरों का दरवाज़ा उस घर की दहनी तरफ़ था,
और चक्करदार सीढ़ियों से बीच की मन्ज़िल के हुजरों में, और
बीच की मन्ज़िल से तीसरी मन्ज़िल को जाया करते थे।
9 तब उसने वह घर बनाकर उसे पूरा किया, और उस घर को
देवदार के शहतीरों और तख़्तों से पाटा।
10 और उसने उस पूरे घर से लगी हुई पाँच — पाँच हाथ ऊँची
मन्ज़िलें बनाई, और वह देवदार की लकड़ियों के सहारे उस घर
पर टिकी हुई थीं।
11 और ख़ुदावन्द का कलाम सुलेमान पर नाज़िल हुआ,
12 "यह घर जो तू बनाता है, इसलिए अगर तू मेरे क़ानून पर
चले और मेरे हुक्मों को पूरा करे और मेरे फ़रमानों को मानकर उन
पर 'अमल करे, तो मैं अपना वह क़ौल जो मैंने तेरे बाप दाऊद से
किया तेरे साथ क़ाईम रखूँगा।
13 और मैं बनी — इस्राईल के दर्मियान रहूँगा और अपनी क़ौम
इस्राईल को तर्क न करूँगा।"
14 इसलिए सुलेमान ने वह घर बनाकर उसे पूरा किया।
15 और उसने अन्दर घर की दीवारों पर देवदार के तख़्ते लगाए।
इस घर के फ़र्श से छत की दीवारों तक उसने उन पर लकड़ी
लगाई, और उसने उस घर के फ़र्श को सनोबर के तख़्तों से पाट
दिया।
16 और उसने उस घर के पिछले हिस्से में बीस हाथ तक, फ़र्श
से दीवारों तक देवदार के तख़्ते लगाए, उसने इसे उसके अन्दर
बनाया ताकि वह इल्हामगाह या'नी पाकतरीन मकान हो।
17 और वह घर या'नी इल्हामगाह के सामने की हैकल चालीस

हाथ लम्बी थी।
18 और उस घर के अन्दर — अन्दर देवदार था, जिस पर लट्टू
और खिले हुए फूल खुदे हुए थे; सब देवदार ही था और पत्थर
अलग नज़र नहीं आता था।
19 और उसने उस घर के अन्दर बीच में इलहामगाह तैयार की,
ताकि ख़ुदावन्द के 'अहद का सन्दूक़ वहाँ रख्खा जाए।
20 और इल्हामगाह अन्दर ही अन्दर से बीस हाथ लम्बी और
बीस हाथ चौड़ी और बीस हाथ ऊँची थी; और उसने उस पर
ख़ालिस सोना मंढा, और मज़बह को देवदार से पाटा।
21 और सुलेमान ने उस घर को अन्दर ख़ालिस सोने से मंढा,
और इल्हामगाह के सामने उसने सोने की ज़जीरें तान दीं और उस
पर भी सोना मंढा।
22 और उस पूरे घर को, जब तक कि वह सारा घर पूरा न हो
गया, उसने सोने से मंढा; और इल्हामगाह के पूरे मज़बह पर भी
उसने सोना मंढा।
23 और इल्हामगाह में उसने ज़ैतून की लकड़ी के दो करूबी दस
— दस हाथ ऊँचे बनाए।
24 और करूबी का एक बाज़ू पाँच हाथ का और उसका दूसरा
बाज़ू भी पाँच ही हाथ का था; एक बाज़ू के सिरे से दूसरे बाज़ू के
सिरे तक दस हाथ का फ़ासला था।
25 और दस ही हाथ का दूसरा करूबी था; दोनों करूबी एक ही
नाप और एक ही सूरत के थे।
26 एक करूबी की ऊंचाई दस हाथ थी, और इतनी ही दूसरे
करूबी की थी।
27 और उसने दोनों करूबियों को भीतर के मकान के अन्दर रखा;
और करूबियों के बाज़ू फैले हुए थे, ऐसा कि एक का बाज़ू एक
दीवार से, और दूसरे का बाज़ू दूसरी दीवार से लगा हुआ था; और
इनके बाज़ू घर के बीच में एक दूसरे से मिले हुए थे।
28 और उसने करूबियों पर सोना मंढा।

29 उसने उस घर की सब दीवारों पर, चारों तरफ़ अन्दर और बाहर करूबियों और खजूर के दरख़्तोंऔर खिले हुए फूलों की खुदी हुई सूरतें कन्दा की।

30 और उस घर के फ़र्श पर उसने अन्दर और बाहर सोना मंढा।

31 और इलहामगाह में दाख़िल होने के लिए उसने ज़ैतून की लकड़ी के दरवाज़े बनाए: ऊपर की चौखट और बाज़ुओं का चौड़ाई दीवार का पाँचवा हिस्सा था।

32 दोनों दरवाज़े ज़ैतून की लकड़ी के थे; और उसने उन पर करूबियों और खजूर के दरख़्तों और खिले हुए फूलों की खुदी हुई सूरतें कन्दा कीं, और उन पर सोना मंढा और इस सोने को करूबियों पर और खजूर के दरख़्तों पर फैला दिया।

33 ऐसे ही हैकल में दाख़िल होने के लिए उसने ज़ैतून की लकड़ी की चौखट बनाई, जो दीवार का चौथा हिस्सा थी।

34 और सनोबर की लकड़ी के दो दरवाज़े थे; एक दरवाज़े के दोनों पट दुहरे हो जाते, और दूसरे दरवाज़े के भी दोनों पट दुहरे हो जाते थे।

35 और इन पर करूबियों और खजूर के दरख़्तोंऔर खिले हुए फूलों को उसने खुदवाया, और खुदे हुए काम पर सोना मंढा।

36 और अन्दर के सहन की तीन सफ़े तराशे हुए पत्थर की बनाई, और एक सफ़ देवदार के शहतीरों की।

37 चौथे साल ज़ीव के महीने में ख़ुदावन्द के घर की बुनियाद डाली गई;

38 और ग्यारहवें साल बूल के महीने में, जो आठवाँ महीना है, वह घर अपने सब हिस्सों समेत अपने नक़्शे के मुताबिक़ बनकर तैयार हुआ। ऐसा उसको बनाने में उसे सात साल लगे।

7

[illegible]

1 और सुलेमान तेरह साल अपने महल की ता'मीर में लगा
रहा, और अपने महल को ख़त्म किया;
2 क्यूँकि उसने अपना महल लुबनान के बन की लकड़ी का
बनाया, उसकी लम्बाई सौ हाथ और चौड़ाई पचास हाथ और
ऊँचाई तीस हाथ थी, और वह देवदार के सुतूनों की चार क़तारों
पर बना था; और सुतूनों पर देवदार के शहतीर थे।
3 और वह पैंतालीस शहतीरों के ऊपर जो सुतूनों पर टिके थे,
पाट दिया गया था। हर क़तार में पन्द्रह शहतीर थे।
4 और खिड़कियों की तीन क़तारें थी, और तीनों क़तारों में हर
एक रोशनदान दूसरे रोशनदान के सामने था।
5 और सब दरवाज़े और चौखटें मुरब्बा' शक्ल की थीं, और तीनों
क़तारों में हर एक रोशनदान दूसरे रोशनदान के सामने था।
6 और उसने सुतूनों का बरआमदा बनाया; उसकी लम्बाई
पचास हाथ और चौड़ाई तीस हाथ, और इनके सामने एक डयोढ़ी
थी, और इनके आगे सुतून और मोटे — मोटे शहतीर थे।
7 और उसने तख़्त के लिए एक बरआमदा, या'नी 'अदालत का
बरआमदा बनाया जहाँ वह 'अदालत कर सके; और फ़र्श — से
— फ़र्श तक उसे देवदार से पाट दिया।
8 और उसके रहने का महल जो उसी बरआमदे के अन्दर दूसरे
सहन में था, ऐसे ही काम का बना हुआ था। और सुलेमान ने
फ़िर'औन की बेटी के लिए, जिसे उसने ब्याहा था, उसी बरआमदे
के तरह का एक महल बनाया
9 यह सब अन्दर और बाहर बुनियाद से मुन्डेर तक बेशक़ीमत
पत्थरों, या'नी तराशे हुए पत्थरों के बने हुए थे, जो नाप के
मुताबिक़ आरों से चीरे गए थे, और ऐसा ही बाहर बाहर बड़े सहन
तक था।
10 और बुनियाद बेशक़ीमत पत्थरों, या'नी बड़े — बड़े पत्थरों
की थी; यह पत्थर दस — दस हाथ और आठ — आठ हाथ के थे।
11 और ऊपर नाप के मुताबिक़ बेशक़ीमत पत्थर, या'नी घड़े

हुए पत्थर और देवदार की लकड़ी लगी हुई थी।
12 और बड़े सहन में चारों तरफ़ घड़े हुए पत्थरों की तीन क़तारें
और देवदार के शहतीरों की एक क़तार, वैसी ही थी जैसी ख़ुदावन्द
के घर के अन्दरूनी सहन और उस घर के बरआमदे में थी।
13 फिर सुलेमान बादशाह ने सूर से हीराम को बुलवा लिया।
14 वह नफ़्ताली के क़बीले की एक बेवा 'औरत का बेटा था, और
उसका बाप सूर का बाशिन्दा था और ठठेरा था; और वह पीतल के
सब काम की कारीगरी में हिकमत और समझ और महारत रखता
था। इसलिए उसने सुलेमान बादशाह के पास आकर उसका सब
काम बनाया।
15 क्यूँकि उसने अठारह — अठारह हाथ ऊँचे पीतल के दो
सुतून बनाए, और एक — एक का घेर बारह हाथ के सूत के बराबर
था यह अन्दर से खोखले और इसके पीतल की मोटाई चार उंगल
थी।
16 और उसने सुतूनों की चोटियों पर रखने के लिए पीतल ढाल
कर दो ताज बनाये एक ताज की ऊँचाई पाँच और दूसरे ताज की
ऊँचाई भी पाँच हाथ थी।
17 और उन ताजों के लिए जो सुतूनों की चोटियों पर थे,
चारखाने की जालियाँ और जंजीरनुमा हार थे, सात एक ताज के
लिए और सात दूसरे ताज के लिए।
18 तब उसने वह सुतून बनाए, और सुतूनों' की चोटी के ऊपर
के ताजों को ढाँकने के लिए एक जाली के काम पर चारों तरफ़ दो
क़तारें थीं, और दूसरे ताज के लिए भी उसने ऐसा ही किया।
19 और उन चार — चार हाथ के ताजों पर जो बरआमदे के
सुतूनों की चोटी पर थे सोसन का काम था;
20 और उन दोनों सुतूनों पर, ऊपर की तरफ़ भी जाली के बराबर
की गोलाई के पास ताज बने थे; और उस दूसरे ताज पर क़तार दर
क़तार चारों तरफ़ दो सौ अनार थे।
21 और उसने हैकल के बरआमदे में वह सुतून खड़े किए; और

उसने दहने सुतून को खड़ा करके उसका नाम याकिन रखा, और
बाएँ सुतून को खड़ा करके उसका नाम बो'एलियाज़र रखा।
22 और सुतूनों की चोटी पर सोसन का काम था; ऐसे सुतूनों
का काम ख़त्म हुआ।
23 फिर उसने ढाला हुआ एक बड़ा हौज़ बनाया, वह एक किनारे
से दूसरे किनारे तक दस हाथ था; वह गोल था, और ऊँचाई उसकी
पाँच हाथ थी, और उसका घेर चारों तरफ़ तीस हाथ के सूत के
बराबर था।
24 और उसके किनारे के नीचे चारों तरफ़ दसों हाथ तक लट्टू थे,
जो उसे या'नी बड़े हौज़ को घेरे हुए थे; यह लट्टू दो क़तारों में थे,
और जब वह ढाला गया तब ही यह भी ढाले गए थे।
25 और वह बारह बैलों पर रखा गया; तीन के मुँह शिमाल की
तरफ़, और तीन के मुँह मग़रिब की तरफ़, और तीन के मुँह जुनूब
की तरफ़, और तीन के मुँह मशरिक़ की तरफ़ थे; और वह बड़ा
हौज़ उन ही पर ऊपर की तरफ़ था, और उन सभों का पिछला धड़
अन्दर के रुख़ था।
26 और दिल उसका चार उंगल था, और उसका किनारा प्याले
के किनारे की तरह गुल — ए — सोसन की तरह था, और उसमें
दो हज़ार बत की समाई थी।
27 और उसने पीतल की दस कुर्सियाँ बनाई, एक एक कुर्सी की
लम्बाई चार हाथ और चौड़ाई चार हाथ और उँचाई तीन हाथ थी।
28 और उन कुर्सियों की कारीगरी इस तरह की थीं; इनके
हाशिये थे, और पटरों के दर्मियान भी हाशिये थे;
29 और उन हाशियों पर जो पटरों के दर्मियान थे, शेर और बैल
और करूबी बने थे; और उन पटरों पर भी एक कुर्सी ऊपर की तरफ़
थी, और शेरों और बैलों के नीचे लटकते काम के हार थे।
30 और हर कुर्सी के लिए चार चार पीतल के पहिये और पीतल
ही के धुरे थे, और उसके चारों पायों में टेकें लगी थीं; यह ढली हुई

टेकें हौज़ के नीचे थीं, और हर एक के पहलू में हार बने थे।

31 और उसका मुँह ताज के अन्दर और बाहर एक हाथ था, और
वह मुँह डेढ़ हाथ था और उसका काम कुर्सी के काम की तरह गोल
था; और उसी मुँह पर नक़्क़ाशी का काम था और उनके हाशिये
गोल नहीं बल्कि चौकोर थे।

32 और वह चारों पहिये हाशियों के नीचे थे, और पहियों के धुरे
कुर्सी में लगे थे; और हर पहिये की उँचाई डेढ़ हाथ थी।

33 और पहियों का काम रथ के पहिये के जैसा था, और उनके
धुरे और उनकी पुठियाँ और उनके आरे और उनकी नाभें सब के
सब ढाले हुए थे।

34 और हर कुर्सी के चारों कोनों पर चार टेकें थीं, और टेकें और
कुर्सी एक ही टुकड़े की थीं।

35 और हर कुर्सी के सिरे पर आध हाथ ऊँची चारों तरफ़ गोलाई
थी, और कुर्सी के सिरे की कंगनियाँ और हाशिये उसी के टुकड़े के
थे।

36 और उसकी कंगनियों के पाटों पर और उसके हाशियों पर
उसने करूबियों और शेरों और खजूर के दरख़्तों को, हर एक की
जगह के मुताबिक़ कन्दा किया, और चारों तरफ़ हार थे।

37 दसों कुर्सियों को उसने इस तरह बनाया, और उन सबका
एक ही साँचा और एक ही नाप और एक ही सूरत थी।

38 और उसने पीतल के दस हौज़ बनाए, हर एक हौज़ में चालीस
बत की समाई थी; और हर एक हौज़ चार हाथ का था; और उन
दसों कुर्सियों में से हर एक पर एक हौज़ था।

39 उसने पाँच कुर्सियाँ घर की दहनी तरफ़, और पाँच घर की
बाई तरफ़ रखीं, और बड़े हौज़ को घर के दहने मशरिक़ की तरफ़
जुनूब के रुख़ पर रख्खा।

40 हीराम ने हौज़ों और बेलचों और कटोरों को भी बनाया।
इसलिए हीराम ने वह सब काम जिसे वह सुलेमान बादशाह की

ख़ातिर ख़ुदावन्द के घर में बना रहा था पूरा किया;
41 या'नी दोनों सुतून और सुतूनों की चोटी पर ताजों के दोनों
प्याले, और सुतूनों की चोटी पर के ताजों के दोनों प्यालों की
ढाँकने की दोनों जालियाँ;
42 और दोनों जालियों के लिए चार सौ अनार, या'नी सुतूनों पर
के ताजों के दोनों प्यालों के ढाँकने की हर जाली के लिए अनारों
की दो दो क़तारें;
43 और दसों कुर्सियाँ और दसों कुर्सियों पर के दसों हौज़;
44 और वह बड़ा हौज़ और बड़े हौज़ के नीचे के बारह बैल;
45 और वह देगें और बेल्चे और कटोरे। यह सब बर्तन जो
हीराम ने सुलेमान बादशाह की ख़ातिर ख़ुदावन्द के घर में बनाए,
झलकते हुए पीतल के थे।
46 बादशाह ने उन सबको यरदन के मैदान में सुक्कात और
ज़रतान के बीच की चिकनी मिट्टी वाली ज़मीन में ढाला।
47 और सुलेमान ने उन सब बर्तन को बग़ैर तोले छोड़ दिया,
क्यूँकि वह बहुत से थे; इसलिए उस पीतल का वज़न मा'लूम न
हो सका।
48 और सुलेमान ने वह सब बर्तन बनाए जो ख़ुदावन्द के घर में
थे, या'नी वह सोने का मज़बह, और सोने की मेज़ जिस पर नज़र
की रोटी रहती थी,
49 और ख़ालिस सोने के वह शमा'दान जो इल्हामगाह के आगे
पाँच दहने और पाँच बाएँ थे, और सोने के फूल और चिराग, और
चिमटे;
50 और ख़ालिस सोने के प्याले और गुलतराश और कटोरे और
चमचे और ऊदसोज़; और अन्दरूनी घर, या'नी पाकतरीन मकान
के दरवाज़े के लिए और घर के या'नी हैकल के दरवाज़े के लिए
सोने के क़ब्ज़े।
51 ऐसे वह सब काम जो सुलेमान बादशाह ने ख़ुदावन्द के घर
में बनाया ख़त्म हुआ; और सुलेमान अपने बाप दाऊद की मख़्सूस

की हुई चीज़ो, या'नी सोने और चाँदी और बर्तनों को अन्दर लाया,
और उनको ख़ुदावन्द के घर के खज़ानों में रखा।

8

□□□□ □□□ □□□□□□□ □□□ □□□□□□□□□□□ □□□ □□□ □□□□ □□□□ □□□□□

1 तब सुलेमान ने इस्राईल के बुज़ुर्गों और क़बीलों के सब
सरदारों को, जो बनी इस्राईल के आबाई ख़ान्दानों के रईस थे,
अपने पास येरूशलेम में जमा' किया ताकि वह दाऊद के शहर
से, जो सिय्यून है, ख़ुदावन्द के 'अहद के सन्दूक़ को ले आएँ।
2 इसलिए उस 'ईद में इस्राईल के सब लोग माह — ए —
ऐतानीम में, जो सातवाँ महीना है, सुलेमान बादशाह के पास
जमा' हुए।
3 और इस्राईल के सब बुज़ुर्ग आए, और काहिनों ने सन्दूक़
उठाया।
4 और वह ख़ुदावन्द के सन्दूक़ को, और ख़ेमा — ए —
इजितमा'अ को, और उन सब मुक़द्दस बर्तनों को जो ख़ेमे के अन्दर
थे ले आए; उनको काहिन और लावी लाए थे।
5 और सुलेमान बादशाह ने और उसके साथ इस्राईल की सारी
जमा'अत ने, जो उसके पास जमा' थी, सन्दूक़ के सामने खड़े
होकर इतनी भेड़ — बकरियाँ और बैल ज़बह किए कि उनको
कसरत की वजह से उनकी गिनती या हिसाब न हो सका।
6 और काहिन ख़ुदावन्द के 'अहद के सन्दूक़ को उसकी जगह
पर, उस घर की इल्हामगाह में, या'नी पाकतरीन मकान में 'ऐन
करूबियों के बाज़ुओं के नीचे ले आए।
7 क्यूँकि करूबी अपने बाज़ुओं को सन्दूक़ की जगह के ऊपर
फैलाए हुए थे, और वह करूबी सन्दूक़ को और उसकी चोबों को
ऊपर से ढाँके हुए थे।

8 और वह चोबें ऐसी लम्बी थीं के उन चोंबों के सिरे पाक मकान
से इल्हामगाह के सामने दिखाई देते थे, लेकिन बाहर से नहीं
दिखाई देते थे। और वह आज तक वहीं हैं।
9 उस सन्दूक़ में कुछ न था सिवा पत्थर की उन दो लौहों
के जिनको वहाँ मूसा ने होरिब में रख दिया था, जिस वक़्त के
ख़ुदावन्द ने बनी इस्राईल से जब वह मुल्क — ए — मिस्र से
निकल आए, 'अहद बाँधा था।
10 फिर ऐसा हुआ कि जब काहिन पाक मकान से बाहर निकल
आए, तो ख़ुदावन्द का घर अब्र से भर गया:
11 इसलिए काहिन उस अब्र की वजह से ख़िदमत के लिए खड़े
न हो सके, इसलिए कि ख़ुदावन्द का घर उसके जलाल से भर गया
था।
12 तब सुलेमान ने कहा कि “ख़ुदावन्द ने फ़रमाया था कि वह
गहरी तारीकी में रहेगा।
13 मैंने हक़ीक़त में एक घर तेरे रहने के लिए, बल्कि तेरी हमेशा
की सुकूनत के वास्ते एक जगह बनाई है।”
14 और बादशाह ने अपना मुँह फेरा और इस्राईल की सारी
जमा'अत को बरकत दी, और इस्राईल की सारी जमा'अत खड़ी
रही;
15 और उसने कहा कि ख़ुदावन्द इस्राईल का ख़ुदा मुबारक हो!
जिसने अपने मुँह से मेरे बाप दाऊद से कलाम किया, और उसे
अपने हाथ से यह कह कर पूरा किया कि।
16 “जिस दिन से मैं अपनी क़ौम इस्राईल को मिस्र से निकाल
लाया, मैंने इस्राईल के सब क़बीलों में से भी किसी शहर को नहीं
चुना कि एक घर बनाया जाए, ताकि मेरा नाम वहाँ हो; लेकिन
मैंने दाऊद को चुन लिया कि वह मेरी क़ौम इस्राईल पर हाकिम
हो।
17 और मेरे बाप दाऊद के दिल में था कि ख़ुदावन्द इस्राईल के
ख़ुदा के नाम के लिए एक घर बनाए।

18 लेकिन ख़ुदावन्द ने मेरे बाप दाऊद से कहा, 'चूँकि मेरे नाम
के लिए एक घर बनाने का ख़्याल तेरे दिल में था, तब तू ने अच्छा
किया कि अपने दिल में ऐसा ठाना;
19 तोभी तू उस घर को न बनाना, बल्कि तेरा बेटा जो तेरे सुल्ब
से निकलेगा वह मेरे नाम के लिए घर बनाएगा।
20 और ख़ुदावन्द ने अपनी बात, जो उसने कही थी, क़ाईम
की है; क्यूँकि मैं अपने बाप दाऊद की जगह उठा हूँ, और जैसा
ख़ुदावन्द ने वा'दा किया था, मैं इस्राईल के तख़्त पर बैठा हूँ और
मैंने ख़ुदावन्द इस्राईल के ख़ुदा के नाम के लिए उस घर को बनाया
है।
21 और मैंने वहाँ एक जगह उस सन्दूक़ के लिए मुक़र्रर कर दी
है, जिसमें ख़ुदावन्द का वह 'अहद है जो उसने हमारे बाप — दादा
से, जब वह उनको मुल्क — ए — मिस्र से निकाल लाया, बाँधा
था।"
22 और सुलेमान ने इस्राईल की सारी जमा'अत के सामने
ख़ुदावन्द के मज़बह के आगे खड़े होकर अपने हाथ आसमान की
तरफ़ फ़ैलाए
23 और कहा, ऐ ख़ुदावन्द, इस्राईल के ख़ुदा! तेरी तरह न तो
ऊपर आसमान में, न नीचे ज़मीन पर कोई ख़ुदा है; तू अपने उन
बन्दों के लिए जो तेरे सामने अपने सारे दिल से चलते हैं, 'अहद
और रहमत को निगाह रखता है।
24 तू ने अपने बन्दा मेरे बाप दाऊद के हक़ में वह बात क़ाईम
रख्खी, जिसका तू ने उससे वा'दा किया था; तू ने अपने मुँह से
फ़रमाया और अपने हाथ से उसे पूरा किया, जैसा आज के दिन
है।
25 इसलिए अब ऐ ख़ुदावन्द इस्राईल के ख़ुदा! तू अपने बन्दा
मेरे बाप दाऊद के साथ उस क़ौल को भी पूरा कर जो तूने उससे
किया था कि 'तेरे आदमियों से मेरे सामने इस्राईल के तख़्त पर

बैठने वाले की कमी न होगी; बशर्ते कि तेरी औलाद, जैसे तू मेरे
सामने चलता रहा वैसे ही मेरे सामने चलने के लिए, अपने रास्ते
की एहतियात रखखे।
26 इसलिए अब ऐ इस्राईल के ख़ुदा, तेरा वह क़ौल सच्चा
साबित किया जाए, जो तू ने अपने बन्दे मेरे बाप दाऊद से किया।
27 लेकिन क्या ख़ुदा हक़ीक़त में ज़मीन पर सुकूनत करेगा?
देख, आसमान बल्कि आसमानों के आसमान में भी तू समा नहीं
सकता, तो यह घर तो कुछ भी नहीं जिसे मैंने बनाया।
28 तोभी, ऐ ख़ुदावन्द मेरे ख़ुदा, अपने बन्दा की दुआ और
मुनाजात का लिहाज़ करके, उस फ़रियाद और दुआ को सुन ले
जो तेरा बन्दा आज के दिन तेरे सामने करता है,
29 ताकि तेरी आँखें इस घर की तरफ़, या'नी उसी जगह की
तरफ़ जिसकी ज़रिए' तू ने फ़रमाया कि 'मैं अपना नाम वहाँ
रखूँगा,' दिन और रात खुली रहें; ताकि तू उस दुआ को सुने जो
तेरा बन्दा इस मक़ाम की तरफ़ रुख़ करके तुझ से करेगा।
30 और तू अपने बन्दा और अपनी क़ौम इस्राईल की मुनाजात
को, जब वह इस जगह की तरफ रुख करके करें सुन लेना, बल्कि
तू आसमान पर से जो तेरी सुकूनत गाह है सुन लेना, और सुनकर
मु'आफ़ कर देना।
31 “अगर कोई शख़्स अपने पड़ौसी का गुनाह करे, और उसे
क़सम खिलाने के लिए उसको हल्फ़ दिया जाए, और वह आकर
इस घर में तेरे मज़बह के आगे क़सम खाए:
32 तो तू आसमान पर से सुनकर 'अमल करना और अपने बन्दों
का इन्साफ़ करना, और बदकार पर फ़तवा लगाकर उसके 'आमाल
को उसी के सिर डालना, और सादिक़ को सच्चा ठहराकर उसकी
सदाक़त के मुताबिक उसे बदला देना।
33 जब तेरी क़ौम इस्राईल तेरा गुनाह करने के ज़रिए' अपने
दुश्मनों से शिकस्त खाए और फिर तेरी तरफ़ रुजू' लाये और तेरे

नाम का इकरार करके इस घर में तुझ से दुआ और मुनाजात करे;
34 तो तू आसमान पर से सुनकर अपनी क़ौम इस्राईल का
गुनाह मु'आफ़ करना, और उनको इस मुल्क में जो तूने उनके बाप
दादा को दिया फिर ले आना।
35 "जब इस वजह से कि उन्होंने तेरा गुनाह किया हो, आसमान
बन्द हो जाए और बारिश न हो, और वह इस मक़ाम की तरफ़ रुख़
करके दुआ करें और तेरे नाम का इक़रार करें, और अपने गुनाह से
बाज़ आएँ जब तू उनको दुख दे;
36 तो तू आसमान पर से सुन कर अपने बन्दों और अपनी क़ौम
इस्राईल का गुनाह मु'आफ़ कर देना, क्यूँकि तू उनको उस अच्छी
रास्ते की ता'लीम देता है जिस पर उनको चलना फ़र्ज़ है, और
अपने मुल्क पर जिसे तू ने अपनी क़ौम को मीरास के लिए दिया
है, पानी बरसाना।
37 "अगर मुल्क में काल हो, अगर वबा हो, अगर बाद — ऐ
— समूम या गेरूई या टिड्डी या कमला हो, अगर उनके दुश्मन
उनके शहरों के मुल्क में उनको घेर लें, ग़रज़ कैसी ही बला कैसा
ही रोग हो;
38 तो जो दुआ और मुनाजात किसी एक शख़्स या तेरी क़ौम
इस्राईल की तरफ़ से ही, जिनमें से हर शख़्स अपने दिल का दुख
जानकर अपने हाथ इस घर की तरफ़ फैलाए;
39 तो तू आसमान पर से जो तेरी सुकुनतगाह है सुनकर मु'आफ़
कर देना, और ऐसा करना कि हर आदमी को, जिसके दिल को तू
जानता है, उसी की सारे चाल चलन के मुताबिक़ बदला देना;
क्यूँकि सिर्फ़ तू ही सब बनी — आदम के दिलों को जानता है;
40 ताकि जितनी मुद्दत तक वह उस मुल्क में जिसे तू ने हमारे
बाप — दादा को दिया ज़िन्दा रहें, तेरा ख़ौफ़ माने।
41 'अब रहा वह परदेसी जो तेरी क़ौम इस्राईल में से नहीं है,
वह जब दूर मुल्क से तेरे नाम की ख़ातिर आए,

42 क्यूँकि वह तेरे बुज़ुर्ग नाम और क़वी हाथ और बुलन्द बाज़ू
का हाल सुनेंगे इसलिए जब वह आए और इस घर की तरफ़ रुख़
करके दुआ करे,
43 तो तू आसमान पर से जो तेरी सुकूनत गाह है सुन लेना,
और जिस — जिस बात के लिए वह परदेसी तुझ से फ़रयाद करे
तू उसके मुताबिक़ करना, ताकि ज़मीन की सब क़ौमें बनी इस्राईल
की मानिन्द तेरे नाम को पहचाने मानें, और जान लें कि यह घर
जिसे मैंने बनाया है तेरे नाम का कहलाता है।
44 'अगर तेरे लोग चाहे किसी रास्ते से तू उनको भेजे, अपने
दुश्मनों से लड़ने को निकलें, और वह ख़ुदावन्द से उस शहर की
तरफ़ जिसे तू ने चुना है, और उस घर की तरफ़ जिसे मैंने तेरे नाम
के लिए बनाया है, रुख़ करके दुआ करें,
45 तो तू आसमान पर से उनकी दुआ और मुनाजात सुनकर
उनकी हिमायत करना।
46 'अगर वह तेरा गुनाह करें क्यूँकि कोई ऐसा आदमी नहीं
जो गुनाह न करता हो और तू उनसे नाराज़ होकर उनको दुश्मन
के हवाले कर दे, ऐसा कि वह दुश्मन उनको ग़ुलाम करके अपने
मुल्क में ले जाए, ख़्वाह वह दूर हो या नज़दीक,
47 तोभी अगर वह उस मुल्क में जहाँ वह ग़ुलाम होकर पहुँचाए
गए, होश में आयें और रुजू' लायें और अपने ग़ुलाम करने वालों
के मुल्क में तुझसे मुनाजात करें और कहें कि हम ने गुनाह किया,
हम टेढ़ी चाल चले, और हम ने शरारत की;
48 इसलिए अगर वह अपने दुश्मनों के मुल्क में जो उनको क़ैद
करके ले गए, अपने सारे दिल और अपनी सारी जान से तेरी तरफ़
फिरें और अपने मुल्क की तरफ़, जो तू ने उनके बाप — दादा को
दिया, और इस शहर की तरफ़, जिसे तू ने चुन लिया, और इस घर
की तरफ़, जो मैंने तेरे नाम के लिए बनाया है, रुख़ करके तुझ से
दुआ करें,

49 तो तू आसमान पर से, जो तेरी सुकूनत गाह है, उनकी दुआ
और मुनाजात सुनकर उनकी हिमायत करना,
50 और अपनी क़ौम को, जिसने तेरा गुनाह किया, और उनकी
सब ख़ताओं को, जो उनसे तेरे ख़िलाफ़ सरज़द हों, मु'आफ़ कर
देना, और उनके ग़ुलाम करने वालों के आगे उन पर रहम करना
ताकि वह उन पर रहम करें।
51 क्यूँकि वह तेरी क़ौम और तेरी मीरास हैं, जिसे तू मिस्र से
लोहे के भट्टे के बीच में से निकाल लाया।
52 सो तेरी आँखें तेरे बन्दा की मुनाजात और तेरी क़ौम इस्राईल
की मुनाजात की तरफ़ खुली रहें, ताकि जब कभी वह तुझ से
फ़रियाद करें, तू उनकी सुने;
53 क्यूँकि तू ने ज़मीन की सब क़ौमों में से उनको अलग किया
कि वह तेरी मीरास हों, जैसा ऐ मालिक ख़ुदावन्द, तू ने अपने
बन्दे मूसा की ज़रिए' फ़रमाया, जिस वक़्त तू हमारे बाप — दादा
को मिस्र से निकाल लाया।"
54 और ऐसा हुआ कि जब सुलेमान ख़ुदावन्द से यह सब
मुनाजात कर चुका, तो वह ख़ुदावन्द के मज़बह के सामने से,
जहाँ वह अपने हाथ आसमान की तरफ़ फैलाए हुए घुटने टेके
था, उठा।
55 और खड़े होकर इस्राईल की सारी जमा'अत को ऊँची
आवाज़ से बरकत दी और कहा,
56 "ख़ुदावन्द, जिसने अपने सब वा'दों के मुताबिक़ अपनी क़ौम
इस्राईल को आराम बख़्शा मुबारक हो; क्यूँकि जो सारा अच्छा
वा'दा उसने अपने बन्दे मूसा की ज़रिए' किया, उसमें से एक बात
भी ख़ाली न गई।
57 ख़ुदावन्द हमारा ख़ुदा हमारे साथ रहे जैसे वह हमारे बाप
— दादा के साथ रहा, और न हम को तर्क करे न छोड़े।
58 ताकि वह हमारे दिलों को अपनी तरफ़ माइल करे कि हम
उसकी सब रास्तों पर चलें, और उसके फ़रमानों और क़ानून और

अहकाम को, जो उसने हमारे बाप — दादा को दिए मानें।
59 और यह मेरी बातें जिनको मैंने ख़ुदावन्द के सामने मुनाजात
में पेश किया है, दिन और रात ख़ुदावन्द हमारे ख़ुदा के नज़दीक
रहें, ताकि वह अपने बन्दा की दाद और अपनी क़ौम इस्राईल की
दाद हर दिन की ज़रूरत के मुताबिक़ दे;
60 जिससे ज़मीन की सब क़ौमें जान लें कि ख़ुदावन्द ही ख़ुदा
है और उसके सिवा और कोई नहीं।
61 इसलिए तुम्हारा दिल आज की तरह ख़ुदावन्द हमारे ख़ुदा
के साथ उसके क़ानून पर चलने, और उसके हुक्मों को मानने के
लिए कामिल रहे।"
62 और बादशाह ने और उसके साथ सारे इस्राईल ने ख़ुदावन्द
के सामने क़ुर्बानी पेश की।
63 सुलेमान ने जो सलामती के ज़बीहों की क़ुर्बानी ख़ुदावन्द के
सामने पेशकीं उसमें उसने बाईस हज़ार बैल और एक लाख बीस
हज़ार भेड़ें पेश कीं। ऐसे बादशाह ने और सब बनी — इस्राईल ने
ख़ुदावन्द का घर मख़्सूस किया।
64 उसी दिन बादशाह ने सहन के दर्मियानी हिस्से को जो
ख़ुदावन्द के घर के सामने था मुक़द्दस किया, क्यूँकि उसने वहीं
सोख़्तनी क़ुर्बानी और नज़र की क़ुर्बानी और सलामती के ज़बीहों
की चर्बी पेश की, इसलिए कि पीतल का मज़बह जो ख़ुदावन्द के
सामने था, इतना छोटा था कि उस पर सोख़्तनी क़ुर्बानी और
नज़र की क़ुर्बानी और सलामती के ज़बोहों की चर्बी के लिए
गुन्जाइश न थी।
65 इसलिए सुलेमान ने और उसके साथ सारे इस्राईल, या'नी
एक बड़ी जमा'अत, ने जो हमात के मदख़ल से लेकर मिस्र की
नहर तक की हुदूद से आई थी, ख़ुदावन्द हमारे ख़ुदा के सामने
सात दिन और फिर सात दिन और, या'नी चौदह दिन, 'ईद मनाई।
66 और आठवें दिन उसने उन लोगों को रुख़सत कर दिया।

तब उन्होंने बादशाह को मुबारकबाद दी, और उस सारी नेकी
के ज़रिए' जो ख़ुदावन्द ने अपने बन्दा दाऊद और अपनी क़ौम
इस्राईल से की थी, अपने डेरों को दिल में ख़ुश और ख़ुश होकर
लौट गए।

9

[illegible]

1 और ऐसा हुआ कि जब सुलेमान ख़ुदावन्द का घर और शाही
महल बना चुका, और जो कुछ सुलेमान करना चाहता था वह
सब ख़त्म हो गया,
2 तो ख़ुदावन्द सुलेमान को दूसरी बार दिखाई दिया, जैसे वह
जिब'ऊन में दिखाई दिया था।
3 और ख़ुदावन्द ने उससे कहा, मैंने तेरी दुआ और मुनाजात जो
तूने मेरे सामने की है सुन ली, और इस घर में, जिसे तू ने बनाया
है, अपना नाम हमेशा तक रखने के लिए मैंने उसे मुक़द्दस किया;
और मेरी आँखें और मेरा दिल सदा वहाँ लगे रहेंगे।
4 अब रहा तू इसलिए अगर तू जैसे तेरा बाप दाऊद चला,
वैसे ही मेरे सामने ख़ुलूस — ए — दिल और सच्चाई से चल कर
उस सब के मुताबिक़ जो मैंने तुझे फ़रमाया 'अमल करे, और मेरे
क़ानून और अहकाम को माने;
5 तो मैं तेरी हुकूमत का तख़्त इस्राईल के ऊपर हमेशा क़ाईम
रखूँगा, जैसा मैंने तेरे बाप दाऊद से वा'दा किया और कहा कि
'तेरी नस्ल में इस्राईल के तख़्त पर बैठने के लिए आदमी की कमी
न होगी।
6 लेकिन तुम हो या तुम्हारी औलाद, अगर तुम मेरी पैरवी से
बरगश्ता हो जाओ और मेरे अहकाम और क़ानून को, जो मैंने
तुम्हारे आगे रख्खे हैं, न मानो बल्कि जाकर और मा'बूदों की
इबादत करने और उनको सिज्दा करने लगो,

7 तो मैं इस्राईल को उस मुल्क से जो मैंने उनको दिया है काट
डालूँगा; और उस घर को जिसे मैंने अपने नाम के लिए मुक़द्दस
किया है, अपनी नज़र से दूर कर दूँगा; और इस्राईल सब क़ौमों में
उसकी मिसाल होगी और उस पर उँगली उठेगी।
8 और अगरचे यह घर ऐसा मुम्ताज़ है तोभी हर एक जो इसके
पास से गुज़रेगा, हैरान होगा और सुसकारेगा, और वह कहेंगे,
'ख़ुदावन्द ने इस मुल्क और इस घर से ऐसा क्यूँ किया?'
9 तब वह जवाब देंगे, इसलिए कि उन्होंने ख़ुदावन्द अपने ख़ुदा
को, जो उनके बाप — दादा को मुल्क — ए — मिस्र से निकाल
लाया, छोड़ दिया और ग़ैर मा'बूदों को थाम कर उनको सिज्दा
करने और उनकी इबादत करने लगे; इसी लिए ख़ुदावन्द ने उन
पर यह सारी मुसीबत नाज़िल की।"
10 और बीस साल के बाद जिनमें सुलेमान ने वह दोनों घर,
या'नी ख़ुदावन्द का घर और शाही महल बनाए, ऐसा हु'आ कि
11 चूँकि सूर के बादशाह हीराम ने सुलेमान के लिए देवदार
की और सनोबर की लकड़ी और सोना उसकी मर्ज़ी के मुताबिक़
इन्तिज़ाम किया था, इसलिए सुलेमान बादशाह ने गलील के
मुल्क में बीस शहर हीराम को दिए।
12 और हीराम उन शहरों को जो सुलेमान ने उसे दिए थे, देखने
के लिए सूर से निकला पर वह उसे पसन्द न आए।
13 तब उसने कहा, "ऐ मेरे भाई, यह क्या शहर हैं जो तू ने मुझे
दिए?" और उसने उनका नाम क़ुबूल का मुल्क रखा, जो आज
तक चला आता है।
14 और हीराम ने बादशाह के पास एक सौ बीस क़िन्तार सोना
भेजा।
15 और सुलेमान बादशाह ने जो बेगारी लगाए, तो इसी लिए
कि वह ख़ुदावन्द के घर और अपने महल को और मिल्लो और
येरूशलेम की शहरपनाह और हसूर और मजिद्दो और जज़र को

बनाए।
16 मिस्र के बादशाह फ़िर'औन ने हमला करके और जज़र को
घेर करके उसे आग से फूँक दिया था, और उन कना'आनियों को
जो उस शहर में बसे हुए थे क़त्ल करके उसे अपनी बेटी को, जो
सुलेमान की बीवी थी, जहेज़ में दे दिया था,
17 तब सुलेमान ने जज़र और बैतहोरून असफ़ल को,
18 और बालात और बियाबान के तमर को बनाया, जो मुल्क के
अन्दर हैं।
19 और ज़ख़ीरों के सब शहरों को जो सुलेमान के पास थे, और
अपने रथों के लिए शहरों को, और अपने सवारों के लिए शहरों
को, और जो कुछ सुलेमान ने अपनी मर्ज़ी से येरूशलेम में और
लुबनान में और अपनी मुल्क की सारी ज़मीन में बनाना चाहा
बनाया।
20 और वह सब लोग जो अमोरियों और हित्तियों और
फ़रिज़्ज़ीयों और हव्वियों यबूसियों में से बाक़ी रह गए थे और
बनी — इस्राईल में से न थे,
21 इसलिए उनकी औलाद को जो उनके बाद मुल्क में बाक़ी
रही, जिनको बनी — इस्राईल पूरे तौर पर मिटा न सके, सुलेमान
ने ग़ुलाम बनाकर बेगार में लगाया जैसा आज तक है।
22 लेकिन सुलेमान ने बनी — इस्राईल में से किसी को ग़ुलाम
न बनाया, बल्कि वह उसके जंगी मर्द और मुलाज़िम और हाकिम
और फ़ौजी सरदार और उसके रथों और सवारों के हाकिम थे।
23 और वह ख़ास मन्सबदार जो सुलेमान के काम पर मुक़र्रर थे,
पाँच सौ पचास थे; यह उन लोगों पर जो काम बना रहे थे सरदार
थे।
24 और फ़िर'औन की बेटी दाऊद के शहर से अपने उस महल
में, जो सुलेमान ने उसके लिए बनाया था, आई तब सुलेमान ने
मिल्लो की ता'मीर किया।
25 और सुलेमान साल में तीन बार उस मज़बह पर जो उसने

ख़ुदावन्द के लिए बनाया था, सोख़्तनी क़ुर्बानियाँ और सलामती के ज़बीहे पेश करता था, और उनके साथ उस मज़बह पर जो ख़ुदावन्द के आगे था ख़ुशबू जलाता था। इस तरह उसने उस घर को पूरा किया।
26 फिर सुलेमान बादशाह ने 'असयोन जाबर में, जो अदोम
के मुल्क में बहर — ए — क़ुलज़ुम के किनारे ऐलोत के पास है,
जहाज़ों का बेड़ा बनाया।
27 और हीराम ने अपने मुलाज़िम सुलेमान के मुलाज़िमों के
साथ उस बेड़े में भेजे, वह मल्लाह थे जो समुन्दर से वाक़िफ़ थे।
28 और वह ओफ़ीर को गए और वहाँ से चार सौ बीस क़िन्तार
सोना लेकर उसे सुलेमान बादशाह के पास लाए।

10

[illegible]

1 और जब सबा की मलिका ने ख़ुदावन्द के नाम के ज़रिए'
सुलेमान की शोहरत सुनी, तो वह आई ताकि मुशकिल सवालों
से उसे आज़माए।
2 और वह बहुत बड़ी जिलौ के साथ येरूशलेम में आई; और
उसके साथ ऊँट थे, जिन पर मशाल्हे और बहुत सा सोना और
क़ीमती जवाहर लदे थे, और जब वह सुलेमान के पास पहुँची तो
उसने उन सब बातों के बारे में जो उसके दिल में थीं उससे बात
की।
3 सुलेमान ने उसके सब सवालों का जवाब दिया, बादशाह से
कोई बात ऐसी छुपी न थी जो उसे न बताई।
4 और जब सबा की मलिका ने सुलेमान की सारी हिकमत और
उस महल को जो उसने बनाया था,
5 और उसके दस्तरख़्वान की ने'मतों, और उसके मुलाज़िमों के
बैठने के तरीक़े, और उसके ख़ादिमों की हुज़ूरी और उनकी पोशाक,

और उसके साक़ियों, और उस सीढ़ी को जिससे वह ख़ुदावन्द के
घर को जाता' था देखा, तो उसके होश उड़ गए।
6 उसने बादशाह से कहा कि "वह सच्ची ख़बर थी जो मैंने तेरे
कामों और तेरी हिकमत के बारे में अपने मुल्क में सुनी थी।
7 तोभी मैंने वह बातों पर यक़ीन न कीं, जब तक ख़ुद आकर
अपनी आँखों से यह देख न लिया, और मुझे तो आधा भी नहीं
बताया गया था: क्यूँकि तेरी हिकमत औरतेरी कामयाबी उस
शोहरत से जो मैंने सुनी बहुत ज़्यादा है।
8 ख़ुशनसीब हैं तेरे लोग! और ख़ुशनसीब हैं तेरे यह मुलाज़िम,
जो बराबर तेरे सामने खड़े रहते और तेरी हिकमत सुनते हैं।
9 ख़ुदावन्द तेरा ख़ुदा मुबारक हो, जो तुझ से ऐसा ख़ुश हुआ कि
तुझे इस्राईल के तख़्त पर बिठाया है; चूँकि ख़ुदावन्द ने इस्राईल से
हमेशा मुहब्बत रख्खी है, इसलिए उसने तुझे 'अदल और इन्साफ़
करने को बादशाह बनाया।"
10 और उसने बादशाह को एक सौ बीस क़िन्तार सोना और
मसाल्हे का बहुत बड़ा ढेर और क़ीमती जवाहर दिए; और जैसे
मसाल्हे सबा की मलिका ने सुलेमान बादशाह को दिए, वैसे फिर
कभी ऐसी बहुतायत के साथ न आए।
11 और हीराम का बेड़ा भी जो ओफ़ीर से सोना लाता था, बड़ी
कसरत से चन्दन के दरख़्त और क़ीमती जवाहर ओफ़ीर से लाया।
12 तब बादशाह ने ख़ुदावन्द के घर और शाही महल के लिए
चन्दन की लकड़ी के सुतून, और बरबत और गाने वालों के लिए
सितार बनाए; चन्दन के ऐसे दरख़्त न कभी आए थे, और न कभी
आज के दिन तक दिखाई दिए।
13 और सुलेमान बादशाह ने सबा की मलिका को सब कुछ,
जिसकी वह मुश्ताक़ हुई और जो कुछ उसने माँगा दिया; 'अलावा
इसके सुलेमान ने उसको अपनी शाहाना सख़ावत से भी इनायत
किया। फिर वह अपने मुलाज़िमों के साथ अपनी मुल्क को लौट

गई।
14 जितना सोना एक साल में सुलेमान के पास आता था, उसका
वज़न सोने का छ: सौ छियासठ क़िन्तार था।
15 'अलावा इसके ब्योपारियों और सौदागरों की तिजारत और
मिली जुली क़ौमों के सब सलातीन, और मुल्क के सूबेदारों की
तरफ़ से भी सोना आता था।
16 और सुलेमान बादशाह ने सोना घड़कर दो सौ ढालें बनाई,
छ: सौ मिस्क़ाल सोना एक एक ढाल में लगा।
17 और उसने घड़े हुए सोने की तीन सौ ढालें बनाई; एक एक
ढाल में डेढ़ सेर सोना लगा, और बादशाह ने उनको लुबनानी बन
के घर में रख्खा।
18 इनके 'अलावा बादशाह ने हाथी दाँत का एक बड़ा तख़्त
बनाया, और उस पर सबसे चोखा सोना मंढा।
19 उस तख़्त में छ: सीढ़ियाँ थीं, और तख़्त के ऊपर का हिस्सा
पीछे से गोल था, और बैठने की जगह की दोनों तरफ़ टेकें थीं,
और टेकों के पास दो शेर खड़े थे:
20 और उन छ: सीढ़ियों के इधर और उधर बारह शेर खड़े थे।
किसी हुकूमत में ऐसा कभी नहीं बना।
21 और सुलेमान बादशाह के पीने के सब बरतन सोने के थे, और
लुबनानी बन के घर के भी सब बरतन ख़ालिस सोने के थे, चाँदी
का एक भी न था, क्यूँकि सुलेमान के दिनों में उसकी कुछ क़द्र न
थी।
22 क्यूँकि बादशाह के पास समुन्दर में हीराम के बेड़े के साथ
एक तरसीस बेड़ा भी था। यह तरसीसी बेड़ा तीन साल में एक
बार आता था, और सोना और चाँदी और हाथी दाँत, और बन्दर,
और मोर लाता था।
23 इसलिए सुलेमान बादशाह दौलत और हिकमत में ज़मीन
के सब बादशाहों पर सबक़त ले गया।
24 और सारा जहान सुलेमान के दीदार का तालिब था, ताकि
उसकी हिकमत को जो ख़ुदा ने उसके दिल में डाली थी सुनें,

25 और उनमें से हर एक आदमी चाँदी के बर्तन, और सोने के
बरतन कपड़े और हथियार और मसाल्हे और घोड़े, और खच्चर
हदिये के तौर पर अपने हिस्से के मुवाफ़िक़ लाता था।
26 और सुलेमान ने रथ और सवार इकट्ठे कर लिए; उसके पास
एक हज़ार चार सौ रथ और बारह हज़ार सवार थे, जिनको उसने
रथों के शहरों में और बादशाह के साथ येरूशलेम में रखा।
27 और बादशाह ने येरूशलेम में इफ़रात की वजह से चाँदी को
तो ऐसा कर दिया जैसे पत्थर, और देवदारों को ऐसा जैसे नशेब
के मुल्क के गूलर के दरख़्त होते हैं।
28 और जो घोड़े सुलेमान के पास थे वह मिस्र से मगाए गए
थे, और बादशाह के सौदागर एक एक झुण्ड की क़ीमत लगाकर
उनके झुण्ड के झुण्ड लिया करते थे।
29 और एक रथ चाँदी की छ: सौ मिस्क़ाल में आता और मिस्र
से रवाना होता, और घोड़ा डेढ़ सौ मिस्क़ाल में आता था, और
ऐसे ही हित्तियों के सब बादशाहों और अरामी बादशाहों के लिए,
वह इनको उन्हीं के ज़रिए' से मंगाते थे।

11

□□□□□□□□ □□ □□□□ □□ □□□□□□□□

1 और सुलेमान बादशाह फ़िर'औन की बेटी के 'अलावा बहुत
सी अजनबी 'औरतों से, या'नी मोआबी, 'अम्मोनी, अदोमी,
सैदानी और हित्ती औरतों से मुहब्बत करने लगा;
2 यह उन क़ौमों की थीं जिनके बारे में ख़ुदावन्द ने बनी —
इस्राईल से कहा था कि तुम उनके बीच न जाना, और न वह तुम्हारे
बीच आएँ, क्यूँकि वह ज़रूर तुम्हारे दिलों को अपने मा'बूदों की
तरफ़ माइल कर लेंगी "सुलेमान इन्हीं के 'इश्क़ का दम भरने
लगा।

3 और उसके पास सात सौ शाहज़ादियाँ उसकी बीवियाँ और
तीन सौ बाँदी थीं, और उसकी बीवियों ने उसके दिल को फेर
दिया।
4 क्यूँकि जब सुलेमान बुड्ढा हो गया, तो उसकी बीवियों ने उसके
दिल को ग़ैर मा'बूदों की तरफ़ माइल कर लिया; और उसका दिल
ख़ुदावन्द अपने ख़ुदा के साथ कामिल न रहा, जैसा उसके बाप
दाऊद का दिल था।
5 क्यूँकि सुलेमान सैदानियों की देवी इसतारात, और
'अम्मोनियों के नफ़रती मिलकोम की पैरवी करने लगा।
6 और सुलेमान ने ख़ुदावन्द के आगे बदी की, और उसने
ख़ुदावन्द की पूरी पैरवी न की जैसी उसके बाप दाऊद ने की थी।
7 फिर सुलेमान ने मोआबियों के नफ़रती कमोस के लिए उस
पहाड़ पर जो येरूशलेम के सामने है, और बनी 'अम्मोन के
नफ़रती मोलक के लिए ऊँचा मक़ाम बना दिया।
8 उसने ऐसा ही अपनी सब अजनबी बीवियों की ख़ातिर किया,
जो अपने मा'बूदों के सामने ख़ुशबू जलाती और क़ुर्बानी पेश
करती थीं।
9 और ख़ुदावन्द सुलेमान से नाराज़ हुआ, क्यूँकि उसका दिल
ख़ुदावन्द इस्राईल के ख़ुदा से फिर गया था जिसने उसे दो बार
दिखाई देकर
10 उसको इस बात का हुक्म किया था कि वह ग़ैर मा'बूदों
की पैरवी न करे; लेकिन उसने वह बात न मानी जिसका हुक्म
ख़ुदावन्द ने दिया था।
11 इस वजह से ख़ुदावन्द ने सुलेमान को कहा, चूँकि तुझ से
यह काम हुआ, और तू ने मेरे 'अहद और मेरे क़ानून को जिनका
मैंने तुझे हुक्म दिया नहीं माना, इसलिए मैं हुकूमत को ज़रूर तुझ
से छीनकर तेरे ख़ादिम को दूँगा।
12 तोभी तेरे बाप दाऊद की ख़ातिर मैं तेरे दिनों में यह नहीं
करूँगा; बल्कि उसे तेरे बेटे के हाथ से छीनूँगा।

13 फिर भी मैं सारी हुकूमत को नहीं छीनूँगा, बल्कि अपने बन्दे
दाऊद की ख़ातिर और येरूशलेम की ख़ातिर, जिसे मैंने चुन लिया
है, एक क़बीला तेरे बेटे को दूँगा।
14 तब ख़ुदावन्द ने अदोमी हदद को सुलेमान का मुख़ालिफ़
बना कर खड़ा किया, यह अदोम की शाही नसल से था।
15 क्यूँकि जब दाऊद अदोम में था और लश्कर का सरदार
योआब अदोम में हर एक आदमी को क़त्ल करके उन मक़्तूलों
को दफ़्न करने गया,
16 क्यूँकि योआब और सब इस्राईल छ: महीने तक वहीं रहे,
जब तक कि उसने अदोम में हर एक आदमी को क़त्ल न कर
डाला।
17 तो हदद कई एक अदोमियों के साथ, जो उसके बाप के
मुलाज़िम थे, मिस्र को जाने को भाग निकला, उस वक़्त हदद
छोटा लड़का ही था।
18 और वह मिदियान से निकलकर फ़ारान में आए, और फ़ारान
से लोग साथ लेकर शाह — ए — मिस्र फ़िर'औन के पास मिस्र
में गए। उसने उसको एक घर दिया और उसके लिए ख़ुराक मुक़र्रर
की और उसे जागीर दी।
19 और हदद की फ़िर'औन के सामने इतना रसूख हासिल हुआ
कि उसने अपनी साली, या'नी मलिका तहफ़नीस की बहन उसी
को ब्याह दी।
20 और तहफ़नीस की बहन के उससे उसका बेटा जनूबत पैदा
हुआ जिसका दूध तहफ़नीस ने फ़िर'औन के महल में छुड़ाया; और
जनूबत फ़िर'औन के बेटों के साथ फिर'औन के महल में रहा।
21 इसलिए जब हदद ने मिस्र में सुना कि दाऊद अपने बाप
— दादा के साथ सो गया और लश्कर का सरदार योआब भी मर
गया है, तो हदद ने फ़िर'औन से कहा, मुझे रुख़्सत कर दे, ताकि
मैं अपने मुल्क को चला जाऊँ।"
22 तब फ़िर'औन ने उससे कहा, "भला तुझे मेरे पास किस चीज़

की कमी हुई कि तू अपने मुल्क को जाने के लिए तैयार है?" उसने
कहा, "कुछ नहीं, फिर भी तू मुझे जिस तरह हो रुख़्सत ही कर
दे।"
23 और ख़ुदा ने उसके लिए एक और मुख़ालिफ़ इलीयदा' के
बेटे रज़ोन को खड़ा किया, जो अपने आक़ा ज़ोबाह के बादशाह
हदद'एलियाज़र के पास से भाग गया था;
24 और उसने अपने पास लोग जमा' कर लिए, और जब दाऊद
ने ज़ोबाह वालों को क़त्ल किया, तो वह एक फ़ौज का सरदार
हो गया; और वह दमिश्क़ को जाकर वहीं रहने और दमिश्क़ में
हुकूमत करने लगे।
25 इसलिए हदद की शरारत के 'अलावा यह भी सुलेमान की
सारी उम्र इस्राईल का दुश्मन रहा; और उसने इस्राईल से नफ़रत
रखी और अराम पर हुकूमत करता रहा।
26 और सरीदा के इफ़्राईमी नबात का बेटा यरूबोआम, जो
सुलेमान का मुलाज़िम था और जिसकी माँ का नाम, जो बेवा थी,
सरू'आ था; उसने भी बादशाह के ख़िलाफ़ अपना हाथ उठाया।
27 और बादशाह के ख़िलाफ़ उसके हाथ उठाने की यह वजह
हुई कि बादशाह मिल्लो को बनाता था, और अपने बाप दाऊद के
शहर के रखने की मरम्मत करता था।
28 और वह शख़्स यरूबोआम एक ताक़तवर सूर्मा था, और
सुलेमान ने उस जवान को देखा कि मेहनती है, इसलिए उसने
उसे बनी यूसुफ़ के सारे काम पर मुख़्तार बना दिया।
29 उस वक़्त जब युरब'आम येरूशलेम से निकल कर जा रहा
था, तो सैलानी अख़ियाह नबी उसे रास्ते में मिला, और अख़ियाह
एक नई चादर ओढ़े हुए था; यह दोनों मैदान में अकेले थे।
30 इसलिए अख़ियाह ने उस नई चादर को जो उस पर थी लेकर
उसके बारह टुकड़े फाड़े।
31 और उसने युरब'आम से कहा कि "तू अपने लिए दस टुकड़े

ले ले; क्यूँकि ख़ुदावन्द इस्राईल का ख़ुदा ऐसा कहता है कि देख,
मैं सुलेमान के हाथ से हुकूमत छीन लूँगा, और दस क़बीले तुझे
दूँगा।
32 लेकिन मेरे बन्दे दाऊद की ख़ातिर और येरूशलेम या'नी
उस शहर की ख़ातिर, जिसे मैंने बनी — इस्राईल के सब क़बीलों
में से चुन लिया है, एक क़बीला उसके पास रहेगा
33 क्यूँकि उन्होंने मुझे छोड़ दिया और सैदानियों की देवी
इस्तारात और मोआबियों के मा'बूद कमोस और बनी 'अमोन के
मा'बूद मिलकोम की इबादत की है, और मेरे रास्तों पर न चले कि
वह काम करते जो मेरी नज़र में भला था, और मेरे क़ानून और
अहकाम को मानते जैसा उसके बाप दाऊद ने किया।
34 फिर भी मैं सारी मुल्क उसके हाथ से नहीं ले लूँगा, बल्कि
अपने बन्दा दाऊद की ख़ातिर, जिसे मैंने इसलिए चुन लिया कि
उसने मेरे अहकाम और क़ानून माने, मैं इसकी उम्र भर इसे पेशवा
बनाए रखूँगा।
35 लेकिन उसके बेटे के हाथ से हुकूमत या'नी दस क़बीलों को
लेकर तुझे दूँगा;
36 और उसके बेटे को एक क़बीला दूँगा, ताकि मेरे बन्दे दाऊद
का चराग़ येरूशलेम, या'नी उस शहर में जिसे मैंने अपना नाम
रखने के लिए चुन लिया है, हमेशा मेरे आगे रहे।
37 और मैं तुझे लूँगा, और तू अपने दिल की पूरी ख़्वाहिश के
मुवाफ़िक हुकूमत करेगा और इस्राईल का बादशाह होगा।
38 और ऐसा होगा कि अगर तू उन सब बातों को जिनका मैं तुझे
हुक्म दूँ सुने, और मेरी रास्तों पर चले, और जो काम मेरी नज़र में
भला है उसको करे, और मेरे क़ानूनऔर अहकाम को माने, जैसा
मेरे बन्दा दाऊद ने किया, तो मैं तेरे साथ रहूँगा, और तेरे लिए
एक मज़बूत घर बनाऊँगा, जैसा मैंने दाऊद के लिए बनाया, और
इस्राईल को तुझे दे दूँगा।

39 और मैं इसी वजह से दाऊद की नसल को दुख दूँगा, लेकिन
हमेशा तक नहीं।”
40 इसलिए सुलेमान युरब'आम के क़त्ल के पीछे पड़ गया,
लेकिन युरब'आम उठकर मिस्र को शाह — ए — मिस्र सीसक के
पास भाग गया और सुलेमान की वफ़ात तक मिस्र में रहा।
41 सुलेमान का बाक़ी हाल और सब कुछ जो उसने किया
और उसकी हिकमत: इसलिए क्या वह सुलेमान के अहवाल की
किताब में दर्ज नहीं?
42 और वह मुद्दत जिसमें सुलेमान ने येरूशलेम में सब इस्राईल
पर हुकूमत की चालीस साल की थी।
43 और सुलेमान अपने बाप — दादा के साथ सो गया, और
अपने बाप दाऊद के शहर में दफ़्न हुआ, और उसका बेटा
रहुब'आम उसकी जगह बादशाह हुआ।

12

[illegible]

1 और रहुब'आम सिकम को गया, क्यूँकि सारा इस्राईल उसे
बादशाह बनाने की सिकम को गया था।
2 और जब नबात के बेटे युरब'आम ने, जो अभी मिस्र में था,
यह सुना; क्यूँकि युरब'आम सुलेमान बादशाह के सामने से भाग
गया था, और वह मिस्र में रहता था:
3 इसलिए उन्होंने लोग भेजकर उसे बुलवाया तो यरुब'आम
और इस्राईल की सारी जमा'अत आकर रहुब'आम से ऐसे कहने
लगी कि।
4 “तेरे बाप ने हमारा बोझ सख़्त कर दिया था; तब तू अब अपने
बाप की उस सख़्त ख़िदमत को और उस भारी बोझे को, जो उसने
हम पर रखा, हल्का कर दे, और हम तेरी ख़िदमत करेंगे।”
5 तब उसने उनसे कहा, “अभी तुम तीन दिन के लिए चले
जाओ, तब फिर मेरे पास आना।” तब वह लोग चले गए।

6 और रहुब'आम बादशाह ने उन उम्र दराज़ लोगों से जो उसके
बाप सुलेमान के जीते जी उसके सामने खड़े रहते थे, सलाह ली
और कहा कि "इन लोगों को जवाब देने के लिए तुम मुझे क्या
सलाह देते हो?"
7 उन्होंने उससे यह कहा कि "अगर तू आज के दिन इस क़ौम
का ख़ादिम बन जाए, और उनकी ख़िदमत करे और उनको जवाब
दे और उनसे मीठी बातें करे, तो वह हमेशा तेरे ख़ादिम बने रहेंगे।"
8 लेकिन उसने उन उम्र दराज़ लोगों की सलाह जो उन्होंने उसे
दी, छोड़कर उन जवानों से जो उसके साथ बड़े हुए थे और उसके
सामने खड़े थे, सलाह ली;
9 और उनसे पूछा कि "तुम क्या सलाह देते हो, ताकि हम इन
लोगों को जवाब दे सकें जिन्होंने मुझ से ऐसा कहा है कि उस बोझे
को जो तेरे बाप ने हम पर रख्खा हल्का कर दे?"
10 इन जवानों ने जो उसके साथ बड़े हुए थे उससे कहा, तू उन
लोगों को ऐसा जवाब देना जिन्होंने तुझ से कहा है कि तेरे बाप
ने हमारे बोझे को भारी किया, तू उसको हमारे लिए हल्का कर दे
"तब तू उनसे ऐसा कहना कि मेरी छिंगुली मेरे बाप की कमर से
भी मोटी है।
11 और अब अगर्चे मेरे बाप ने भारी बोझ तुम पर रख्खा है,
तोभी मैं तुम्हारे बोझे को और ज़्यादा भारी करूँगा, मेरे बाप ने तुम
को कोड़ों से ठीक किया, मैं तुम को बिच्छुओं से ठीक बनाऊँगा।"
12 तब युरब'आम और सब लोग तीसरे दिन रहुब'आम के पास
हाज़िर हुए, जैसा बादशाह ने उनको हुक्म दिया था कि "तीसरे
दिन मेरे पास फिर आना।"
13 और बादशाह ने उन लोगों को सख़्त जवाब दिया और उम्र
दराज़ लोगों की उस सलाह को जो उन्होंने उसे दी थी छोड़ दिया,
14 और जवानों की सलाह के मुवाफ़िक़ उनसे यह कहा कि "मेरे
बाप ने तो तुम पर भारी बोझ रखा, लेकिन मैं तुम्हारे बोझे को

ज़्यादा भारी करूँगा; मेरे बाप ने तुम को कोड़ों से ठीक किया,
लेकिन मैं तुम को बिच्छुओं से ठीक बनाऊँगा।"
15 इसलिए बादशाह ने लोगों की न सुनी क्यूँकि यह
मु'आमिला ख़ुदावन्द की तरफ़ से था, ताकि ख़ुदावन्द अपनी
बात को जो उसने सैलानी अख़ियाह की ज़रिए' नबात के बेटे
युरब'आम से कही थी पूरा करे।
16 और जब सारे इस्राईल ने देखा कि बादशाह ने उनकी न सुनी
तो उन्होंने बादशाह को ऐसा जवाब दिया कि "दाऊद में हमारा
क्या हिस्सा है? यस्सी के बेटे में हमारी मीरास नहीं। ऐ इस्राईल,
अपने डेरो को चले जाओ; और अब ऐ दाऊद तू अपने घर को
संभाल! तब इस्राईली अपने डेरों को चल दिए।"
17 लेकिन जितने इस्राईली यहूदाह के शहरों में रहते थे उन पर
रहुब'आम हुकूमत करता रहा।
18 फिर रहुब'आम बादशाह ने अदूराम को भेजा जो बेगारियों
के ऊपर था, और सारे इस्राईल ने उस पर पथराव किया और वह
मर गया। तब रहुब'आम बादशाह ने अपने रथ पर सवार होने में
जल्दी की ताकि येरूशलेम को भाग जाए।
19 ऐसे इस्राईल दाऊद के घराने से बाग़ी हुआ और आज तक
है।
20 जब सारे इस्राईल ने सुना कि युरब'आम लौट आया है, तो
उन्होंने लोग भेज कर उसे जमा'अत में बुलवाया और उसे सारे
इस्राईल का बादशाह बनाया, और यहूदाह के क़बीले के 'अलावा
किसी ने दाऊद के घराने की पैरवी न की।
21 जब रहुब'आम येरूशलेम में पहुँचा तो उसने यहूदाह के सारे
घराने और बिनयमीन के क़बीले को, जो सब एक लाख अस्सी
हज़ार चुने हुए जंगी मर्द थे, इकट्ठा किया ताकि वह इस्राईल के
घराने से लड़कर हुकूमत को फिर सुलेमान के बेटे रहुब'आम के
क़ब्ज़े में करा दें।

22 लेकिन समायाह को जो मर्द — ए — ख़ुदा था, ख़ुदा का यह
पैग़ाम आया
23 कि "यहूदाह के बादशाह सुलेमान के बेटे रहुब'आम और
यहूदाह और बिनयमीन के सारे घराने और क़ौम के बाकी लोगों
से कह कि
24 ख़ुदावन्द ऐसा फ़रमाता है कि: तुम चढ़ाई न करो और न
अपने भाइयों बनी — इस्राईल से लड़ो, बल्कि हर शख़्स अपने
घर को लौटे, क्यूँकि यह बात मेरी तरफ़ से है।" इसलिए उन्होंने
ख़ुदावन्द की बात मानी और ख़ुदावन्द के हुक्म के मुताबिक़ लौटे
और अपना रास्ता लिया।
25 तब युरब'आम ने इफ़्राईम के पहाड़ी मुल्क में सिकम को
ता'मीर किया और उसमें रहने लगा, और वहाँ से निकल कर उसने
फ़नूएल को ता'मीर किया।
26 और युरब'आम ने अपने दिल में कहा कि "अब हुकूमत
दाऊद के घराने में फिर चली जाएगी।
27 अगर यह लोग येरूशलेम में ख़ुदावन्द के घर में क़ुर्बानी
अदा करने को जाया करें, तो इनके दिल अपने मालिक, या'नी
यहूदाह के बादशाह रहुब'आम, की तरफ़ माइल होंगे और वह
मुझ को क़त्ल करके शाह — ए — यहूदाह रहुब'आम की तरफ़
फिर जाएँगे।"
28 इसलिए उस बादशाह ने सलाह लेकर सोने के दो बछड़े
बनाए और लोगों से कहा, "येरूशलेम को जाना तुम्हारी ताक़त
से बाहर है; ऐ इस्राईल, अपने मा'बूदों को देख, जो तुझे मुल्क —
ए — मिस्र से निकाल लाए।"
29 और उसने एक को बैतएल में क़ाईम किया, दूसरे को दान में
रखा।
30 और यह गुनाह का ज़रिए' ठहरा, क्यूँकि लोग उस एक की
इबादत करने के लिए दान तक जाने लगे।

31 और उसने ऊँची जगहों के घर बनाए, और लोगों में से
जोबनी लावी न थे काहिन बनाए।
32 और युरब'आम ने आठवें महीने की पन्द्रहवीं तारीख़ के लिए,
उस ईद की तरह जो यहूदाह में होती है एक ईद ठहराई और उस
मज़बह के पास गया, ऐसा ही उसने बैतएल में किया; और उन
बछड़ों के लिए जो उसने बनाए थे क़ुर्बानी पेशकी, और उसने
बैतएल में अपने बनाए हुए ऊँचे मक़ामों के लिए काहिनों को
रख्खा।
33 और आठवें महीने की पन्द्रहवीं तारीख़ की, या'नी उस महीने
में जिसे उसने अपने ही दिल से ठहराया था, वह उस मज़बह के
पास जो उसने बैतएल में बनाया था गया, और बनी — इस्राईल
के लिए ईद ठहराई और ख़ुशबू जलाने को मज़बह के पास गया।

13

[illegible]

1 और देखो, ख़ुदावन्द के हुक्म से एक नबी यहूदाह से बैतएल
में आया, और युरब'आम ख़ुशबू जलाने को मज़बह के पास खड़ा
था।
2 और वह ख़ुदावन्द के हुक्म से मज़बह के ख़िलाफ़ चिल्लाकर
कहने लगा, ऐ मज़बह, ऐ मज़बह! ख़ुदावन्द ऐसा फ़रमाता है कि
"देख, दाऊद के घराने से एक लड़का बनाम यूसियाह पैदा होगा।
तब वह ऊँचे मक़ामों के काहिनों की, जो तुझ पर ख़ुशबू जलाते
हैं, तुझ पर क़ुर्बानी करेगा और वह आदमियों की हड्डियाँ तुझ पर
जलाएँगे।"
3 और उसने उसी दिन एक निशान दिया और कहा, वह निशान
जो ख़ुदावन्द ने बताया है, "यह है कि देखो, मज़बह फट जाएगा
और वह राख जो उस पर है गिर जाएगी।"
4 और ऐसा हुआ कि जब बादशाह ने उस नबी का कलाम, जो
उसने बैतएल में मज़बह के ख़िलाफ़ चिल्ला कर कहा था, सुना

तो युरब'आम ने मज़बह पर से पकड़ लो! और उसका वह हाथ
जो उसने उसकी तरफ़ बढ़ाया था ख़ुश्क हो गया, ऐसा कि वह उसे
फिर अपनी तरफ़ खींच न सका।
5 और उस निशान के मुताबिक़ जो उस नबी ने ख़ुदावन्द के
हुक्म से दिया था, वह मज़बह भी फट गया और राख मज़बह पर
से गिर गई।
6 तब बादशाह ने उस नबी से कहा कि "अब ख़ुदावन्द अपने
ख़ुदा से इल्तिजा कर और मेरे लिए दुआ कर, ताकि मेरा हाथ
मेरे लिए फिर बहाल हो जाए।" तब उस नबी ने ख़ुदावन्द से
इल्तिजा की और बादशाह का हाथ उसके लिए बहाल हुआ, और
जैसा पहले था वैसा ही हो गया।
7 और बादशाह ने उस नबी से कहा कि "मेरे साथ घर चल और
ताज़ा दम हो, और मैं तुझे इनाम दूँगा।"
8 उस नबी ने बादशाह को जवाब दिया कि "अगर तू अपना
आधा घर भी मुझे दे, तोभी मैं तेरे साथ नहीं जाने का और न मैं
इस जगह रोटी खाऊँ और न पानी पियूँ।
9 क्यूँकि ख़ुदावन्द का हुक्म मुझे ताकीद के साथ यह हुआ है
कि तू न रोटी खाना न पानी पीना, न उस रास्ते से लौटना जिससे
तू जाए।"
10 तब वह दूसरे रास्ते से गया और जिस रास्ते से बैतएल में
आया था उससे न लौटा।
11 और बैतएल में एक बुड्ढा नबी रहता था, तब उसके बेटों में
से एक ने आकर वह सब काम जो उस नबी ने उस दिन बैतएल में
किए उसे बताए, और जो बातें उसने बादशाह से कहीं थीं उनको
भी अपने बाप से बयान किया।
12 और उनके बाप ने उनसे कहा, "वह किस रास्ते से गया?"
उसके बेटों ने देख लिया था कि वह नबी जो यहूदाह से आया था,
किस रास्ते से गया है।
13 तब उसने अपने बेटों से कहा, "मेरे लिए गधे पर ज़ीन कस

दो।" तब उन्होंने उसके लिए गधे पर ज़ीन कस दिया और वह उस
पर सवार हुआ,

14 और उस नबी के पीछे चला और उसे बलूत के एक दरख़्त के
नीचे बैठे पाया। तब उसने उससे कहा, "क्या तू वही नबी है जो
यहूदाह से आया था?" उसने कहा, "हाँ।"

15 तब उसने उससे कहा, "मेरे साथ घर चल और रोटी खा।"

16 उसने कहा, मैं तेरे साथ लौट नहीं सकता और न तेरे घर जा
सकता हूँ, और मैं तेरे साथ इस जगह न रोटी खाऊँ न पानी पियूँ।

17 क्यूँकि ख़ुदावन्द का मुझ को यूँ हुक्म हुआ है कि "तू वहाँ
न रोटी खाना न पानी पीना, और न उस रास्ते से होकर लौटना
जिससे तू जाए।"

18 तब उसने उससे कहा, "मैं भी तेरी तरह नबी हूँ, और
ख़ुदावन्द के हुक्म से एक फ़रिश्ते ने मुझ से यह कहा कि उसे
अपने साथ अपने घर में लौटा कर ले आ, ताकि वह रोटी खाए
और पानी पिए।" लेकिन उसने उससे झूठ कहा।

19 इसलिए वह उसके साथ लौट गया और उसके घर में रोटी
खाई और पानी पिया।

20 जब वह दस्तरख़्वान पर बैठे थे तो ख़ुदावन्द का कलाम उस
नबी पर, जो उसे लौटा लाया था, नाज़िल हुआ।

21 और उसने उस नबी से, जो यहूदाह से आया था, चिल्ला कर
कहा, ख़ुदावन्द ऐसा फ़रमाता है, "इसलिए कि तू ने ख़ुदावन्द
के कलाम से नाफ़रमानी की, और उस हुक्म को नहीं माना जो
ख़ुदावन्द तेरे ख़ुदा ने तुझे दिया था।

22 बल्कि तू लौट आया और तू ने उसी जगह जिसके ज़रिए'
ख़ुदावन्द ने तुझे फ़रमाया था कि न रोटी खाना, न पानी पीना,
रोटी भी खाई और पानी भी पिया; इसलिए तेरी लाश तेरे बाप
दादा की क़ब्र तक नहीं पहुँचेगी।"

23 जब वह रोटी खा चुका और पानी पी चुका, तो उसने उसके
लिए या'नी उस नबी के लिए जिसे वह लौटा लाया था, गधे पर
ज़ीन कस दिया।
24 जब वह रवाना हुआ तो रास्ते में उसे एक शेर मिला जिसने
उसे मार डाला, इसलिए उसकी लाश रास्ते में पड़ी रही और गधा
उसके पास खड़ा रहा, शेर भी उस लाश के पास खड़ा रहा।
25 और लोग उधर से गुज़रे और देखा कि लाश रास्ते में पड़ी
है और शेर लाश के पास खड़ा है, फिर उन्होंने उस शहर में जहाँ
वह बुड्ढा नबी रहता था यह बताया।
26 और जब उस नबी ने, जो उसे रास्ते से लौटा लाया था, यह
सुना तो कहा, "यह वही नबी है जिसने ख़ुदावन्द के कलाम की
नाफ़रमानी की, इसी लिए ख़ुदावन्द ने उसको शेर के हवाले कर
दिया; और उसने ख़ुदावन्द के उस सुखन के मुताबिक़ जो उसने
उससे कहा था, उसे फाड़ा और मार डाला।"
27 फिर उसने अपने बेटों से कहा कि "मेरे लिए गधे पर ज़ीन
कस दो।" इसलिए उन्होंने ज़ीन कस दिया।
28 तब वह गया और उसने उसकी लाश रास्ते में पड़ी हुई, और
गधे और शेर को लाश के पास खड़े पाया; क्यूँकि शेर ने न लाश
को खाया और न गधे को फाड़ा था।
29 तब उस नबी ने उस नबी की लाश उठाकर उसे गधे पर रखा
और ले आया, और वह बुड्ढा नबी उस पर मातम करने और उसे
दफ़्न करने को अपने शहर में आया।
30 और उसने उसकी लाश को अपनी क़ब्र में रखा, और उन्होंने
उस पर मातम किया और कहा, 'हाय, मेरे भाई!"
31 और जब वह उसे दफ़्न कर चुका, तो उसने अपने बेटों से
कहा कि "जब मैं मर जाऊँ, तो मुझ को उसी क़ब्र में दफ़्न करना
जिसमें यह नबी दफ़्न हुआ है। मेरी हड्डियाँ उसकी हड्डियों के
बराबर रखना।
32 इसलिए कि वह बात जो उसने ख़ुदावन्द के हुक्म से बैतएल

के मज़बह के ख़िलाफ़ और उन सब ऊँचे मक़ामों के घरों के
खिलाफ़, जो सामरिया के कस्बों में हैं, कही है ज़रूर पूरी होगी।"
33 इस माजरे के बाद भी युरब'आम अपनी बुरे रास्ते से बाज़ न
आया, बल्कि उसने 'अवाम में से ऊँचे मक़ामों के काहिन ठहराए;
जिस किसी ने चाहा उसे उसने मख़्सूस किया, ताकि ऊँचे मक़ामों
के लिए काहिन हों।
34 और यह काम युरब'आम के घराने के लिए, उसे काट डालने
और उसे रू — ए — ज़मीन पर से मिटाऔर बरबाद करने के लिए
गुनाह ठहरा।

14

[illegible]

1 उस वक़्त युरब'आम का बेटा अबियाह बीमार पड़ा।
2 और युरब'आम ने अपनी बीवी से कहा, "ज़रा उठ कर अपना
भेस बदल डाल, ताकि पहचान न हो सके कि तू युरब'आम की
बीवी है, और शीलोह को चली जा। देख, अख़ियाह नबी वहाँ है
जिसने मेरे बारे में कहा था कि मैं इस क़ौम का बादशाह हूँगा।
3 और दस रोटियाँ और पपड़ियाँ और शहद का एक मर्तबान
अपने साथ ले, और उसके पास जा; वह तुझे बता देगा कि लड़के
का क्या हाल होगा।"
4 तब युरब'आम की बीवी ने ऐसा ही किया, और उठकर शीलोह
को गई और अख़ियाह के घर पहुँची; लेकिन अख़ियाह को कुछ
नज़र नहीं आता था, क्यूँकि बुढ़ापे की वजह से उसकी आँखें रह
गई थीं।
5 और ख़ुदावन्द ने अख़ियाह से कहा, "देख, युरब'आम की
बीवी तुझ से अपने बेटे के बारे में पूछने आ रही है, क्यूँकि वह
बीमार है। तब तू उससे ऐसा ऐसा कहना, क्यूँकि जब वह अन्दर
आएगी तो अपने आपको दूसरी 'औरत बनाएगी।"

6 और जैसे ही वह दरवाज़े से अन्दर आई, और अख़ियाह ने
उसके पाँव की आहट सुनी तो उसने उससे कहा, “ऐ युरब'आम
की बीवी, अन्दर आ! तू क्यूँ अपने को दूसरी बनाती है? क्यूँकि
मैं तो तेरे ही पास सख़्त पैग़ाम के साथ भेजा गया हूँ।
7 इसलिए जाकर युरब'आम से कह, 'ख़ुदावन्द इस्राईल का
ख़ुदा ऐसा फ़रमाता है, हालाँकि मैंने तुझे लोगों में से लेकर
सरफ़राज़ किया, और अपनी कौम इस्राईल पर तुझे बादशाह
बनाया।
8 और दाऊद के घराने से हुकूमत छीन ली और तुझे दी; तोभी
तू मेरे बन्दे दाऊद की तरह न हुआ, जिसने मेरे हुक्म माने और
अपने सारे दिल से मेरी पैरवी की ताकि सिर्फ़ वही करे जो मेरी
नज़र में ठीक था,
9 लेकिन तू ने उन सभों से जो तुझ से पहले हुए ज़्यादा बदी
की, और जाकर अपने लिए और और मा'बूद और ढाले हुए बुत
बनाए ताकि मुझे ग़ुस्सा दिलाए; बल्कि तू ने मुझे अपनी पीठ के
पीछे फेंका।
10 इसलिए देख, मैं युरब'आम के घराने पर बला नाज़िल
करूँगा, और युरब'आम की नसल के हर एक लड़के को, यानी हर
एक को जो इस्राईल में बन्द है और उसको जो आज़ाद छूटा हुआ
है, काट डालूँगा, और युरब'आम के घराने की सफ़ाई कर दूँगा,
जैसे कोई गोबर की सफ़ाई करता हो, जब तक वह सब दूर न हो
जाए।
11 युरब'आम का जो कोई शहर में मरेगा उसे कुत्ते खाएँगे और
जो मैदान में मरेगा उसे हवा के परिन्दे चट कर जाएँगे, क्यूँकि
ख़ुदावन्द ने यह फ़रमाया है।
12 इसलिए तू उठ और अपने घर जा, और जैसे ही तेरा क़दम
शहर में पड़ेगा वह लड़का मर जाएगा।
13 और सारा इस्राईल उसके लिए रोएगा और उसे दफ़न करेगा

क्यूँकि युरब'आम की औलाद में से सिर्फ़ उसी को क़ब्र नसीब होगी,
इसलिए कि युरब'आम के घराने में से इसी में कुछ पाया गया जो
ख़ुदावन्द इस्राईल के ख़ुदा के नज़दीक भला है।
14 'अलावा इसके ख़ुदावन्द अपनी तरफ़ से इस्राईल के लिए
एक ऐसा बादशाह पैदा करेगा जो उसी दिन युरब'आम के घराने
को काट डालेगा, लेकिन कब? यह अभी होगा।
15 क्यूँकि ख़ुदावन्द इस्राईल को ऐसा मारेगा जैसे सरकण्डा
पानी में हिलाया जाता है, और वह इस्राईल को इस अच्छे मुल्क
से जो उसने उनके बाप दादा को दिया था उखाड़ फेंकेगा, और
उनको दरिया — ए — फ़ुरात के पार बिखेर देगा; क्यूँकि उन्होंने
अपने लिए यसीरतें बनाई और ख़ुदावन्द को ग़ुस्सा दिलाया है।
16 और वह इस्राईल को युरब'आम के उन गुनाहों की वजह
से छोड़ देगा जो उसने ख़ुद किए, और जिनसे उसने इस्राईल से
गुनाह कराया।"
17 और युरब'आम की बीवी उठकर रवाना हुई और तिरज़ा में
आई, और जैसे ही वह घर की चौखट पर पहुँची वह लड़का मर
गया;
18 और सारे इस्राईल ने जैसा ख़ुदावन्द ने अपने बन्दे अख़ियाह
नबी की ज़रिए' फ़रमाया था, उसे दफ़न करके उस पर नौहा किया।
19 युरब'आम का बाक़ी हाल कि वह किस किस तरह लड़ा और
उसने क्यूँकर हुकूमत की, वह इस्राईल के बादशाहों की तवारीख़
की किताब में लिखा है।
20 और जितनी मुद्दत तक युरब'आम ने हुकूमत की वह बाईस
साल की थी, और वह अपने बाप दादा के साथ सो गया और
उसका बेटा नदब उसकी जगह बादशाह हुआ।
21 सुलेमान का बेटा रहुब'आम यहूदाह में बादशाह था।
रहुब'आम इकतालीस साल का था, जब वह बादशाही करने लगा
और उसने येरूशलेम यानी उस शहर में, जिसे ख़ुदावन्द ने बनी

— इस्राईल के सब क़बीलों में से चुना था ताकि अपना नाम वहाँ
रख्खे, सतरह साल हुकूमत की; और उसकी माँ का नाम ना'मा
था जो 'अमोनी 'औरत थी।
22 और यहूदाह ने ख़ुदावन्द के सामने बदी की और जो गुनाह
उनके बाप — दादा ने किए थे उनसे भी ज़्यादा उन्होंने अपने
गुनाहों से, जो उनसे सरज़द हुए, उसकी ग़ैरत को भड़काया।
23 क्यूँकि उन्होंने अपने लिए हर एक ऊँचे टीले पर और हर एक
हरे दरख़्त के नीचे, ऊँचे मक़ाम और सुतून और यसीरतें बनाई,
24 और उस मुल्क में लूती भी थे। वह उन क़ौमों के सब मकरूह
काम करते थे, जिनको ख़ुदावन्द ने बनी इस्राईल के सामने से
निकाल दिया था।
25 रहुब'आम बादशाह के पाँचवें साल में शाह — ए — मिस्र
सीसक ने येरूशलेम पर पेश की।
26 और उसने ख़ुदावन्द के घर के ख़ज़ानों और शाही महल के
ख़ज़ानों को ले लिया, बल्कि उसने सब कुछ ले लिया, और सोने
की वह सब ढालें भी ले गया जो सुलेमान ने बनाई थीं।
27 और रहुब'आम बादशाह ने उनके बदले पीतल की ढालें
बनाई और उनको मुहाफ़िज़ सिपाहियों के सरदारों के हवाले किया
जो शाही महल के दरवाज़े पर पहरा देते थे।
28 और जब बादशाह ख़ुदावन्द के घर में जाता तो वह सिपाही
उनको लेकर चलते, और फिर उनको वापस लाकर सिपाहियों की
कोठरी में रख देते थे।
29 और रहुब'आम का बाक़ी हाल और सब कुछ जो उसने किया,
तो क्या वह यहूदाह के बादशाहों की तवारीख़ की किताब में लिखा
नहीं है?
30 और रहुब'आम और युरब'आम में बराबर जंग रही।
31 और रहुब'आम अपने बाप — दादा के साथ सो गया और
दाऊद के शहर में अपने बाप — दादा के साथ दफ़न हुआ, उसकी

माँ का नाम ना'मा था जो 'अम्मोनी 'औरत थी; और उसका बेटा
अबियाम उसकी जगह बादशाह हुआ।

15

[illegible]

1 और नबात के बेटे यरुब'आम की हुकूमत के अठारहवें साल
से अबियाम यहूदाह पर हुकूमत करने लगा।
2 उसने येरूशलेम में तीन साल बादशाही की। उसकी माँ का
नाम मा'का था, जो अबीसलोम की बेटी थी।
3 उसने अपने बाप के सब गुनाहों में, जो उसने उससे पहले किए
थे, उसके चाल चलन इख़्तियार किए और उसका दिल ख़ुदावन्द
अपने ख़ुदा के साथ कामिल न था, जैसा उसके बाप दाऊद का
दिल था।
4 बावजूद इसके ख़ुदावन्द उसके ख़ुदा ने दाऊद की ख़ातिर
येरूशलेम में उसे एक चराग़ दिया, या'नी उसके बेटे को उसके
बाद ठहराया और येरूशलेम को बरकरार रख्खा।
5 इसलिए कि दाऊद ने वह काम किया जो ख़ुदावन्द की नज़र
में ठीक था और अपनी सारी उम्र ख़ुदावन्द के किसी हुक्म से बाहर
न हुआ, 'अलावा हित्ती ऊरिय्याह के मु'आमिले के।
6 और रहुब'आम और युरब'आम के बीच उसकी सारी उम्र जंग
रही;
7 और अबियाम का बाक़ी हाल और सब कुछ जो उसने किया,
इसलिए क्या वह यहूदाह के बादशाहों की तवारीख़ की किताब में
लिखा नहीं है? और अबियाम और युरब'आम में जंग होती रही।
8 और अबियाम अपने बाप दादा के साथ सो गया, और उन्होंने
उसे दाऊद के शहर में दफ़न किया; और उसका बेटा आसा उसकी
जगह बादशाह हुआ।
9 शाह — ए — इस्राईल युरब'आम के बीसवें साल से आसा
यहूदाह पर हुकूमत करने लगा।

10 उसने इकतालीस साल येरूशलेम में हुकूमत की; उस की
माँ का नाम मा'काथा, जो अबीसलोम की बेटी थी।
11 और आसा ने अपने बाप दाऊद की तरह वह काम किया जो
ख़ुदावन्द की नज़र में ठीक था।
12 उसने लूतियों को मुल्क से निकाल दिया, और उन सब बुतों
को जिनको उसके बाप दादा ने बनाया था दूर कर दिया।
13 और उसने अपनी माँ मा'का को भी मलिका के रुतबे से उतार
दिया, क्यूँकि उसने एक यसीरत के लिए एक नफ़रत अंगेज़ बुत
बनाया था। तब आसा ने उसके बुत को काट डाला और वादी —
ए — क़िद्रोन में उसे जला दिया।
14 लेकिन ऊँचे मक़ाम ढाए न गए, तोभी आसा का दिल उम्र
भर ख़ुदावन्द के साथ कामिल रहा।
15 और उसने वह चीजें जो उसके बाप ने नज़र की थीं, और वह
चीज़ें जो उसने आप नज़र की थीं, या'नी चाँदी और सोना और
बर्तन, सबको ख़ुदावन्द के घर में दाख़िल किया।
16 आसा और शाह — ए — इस्राईल बाशा में उनकी उम्र भर
जंग रही।
17 और शाह — ए — इस्राईल बाशा ने यहूदाह पर चढ़ाई की
और रामा को बनाया, ताकि शाह — ए — यहूदाह आसा के पास
किसी की आना जाना न हो सके।
18 तब आसा ने सब चाँदी और सोने को, जो ख़ुदावन्द के घर के
ख़ज़ानों में बाक़ी रहा था, और शाही महल के ख़ज़ानों को लेकर
उनको अपने ख़ादिमों के हवाले किया, और आसा बादशाह ने
उनको शाह — ए — अराम बिनहदद के पास, जो हज़ियून के
बेटे तब रिम्मून का बेटा था और दमिश्क़ में रहता था, रवाना
किया और कहला भेजा,
19 कि "मेरे और तेरे बीच और मेरे बाप और तेरे बाप के बीच
'अहद — ओ — पैमान है। देख, मैंने तेरे लिए चाँदी और सोने
का हदिया भेजा है; तब तू आकर शाह — ए — इस्राईल बा'शा

से 'अहद को तोड़दे, ताकि वह मेरे पास से चला जाए।"
20 और बिन हदद ने आसा बादशाह की बात मानी और अपने
लश्कर के सरदारों को इस्राईली शहरों पर चढ़ाई करने को भेजा,
और 'अय्यून और दान और अबील बैत मा'का और सारे किनरत
और नफ़्ताली के सारे मुल्क को मारा।
21 जब बाशा ने यह सुना तो रामा के बनाने से हाथ खींचा और
तिरज़ा में रहने लगा।
22 तब आसा बादशाह ने सारे यहूदाह में 'एलान कराया और
कोई छोड़ा न गया; तब वह रामा के पत्थर को और उसकी
लकड़ियों को, जिन से बा'शा उसे ता'मीर कर रहा था, उठा ले गए;
और आसा बादशाह ने उनसे बिनयमीन के जिबा' और मिसफ़ाह
को बनाया।
23 आसा का बाकी सब हाल और उसकी सारी ताक़त, और सब
कुछ जो उसने किया, और जो शहर उसने बनाए, तो क्या वह
यहूदाह के बादशाहों की तवारीख़ की किताब में क़लमबन्द नहीं
है? लेकिन उसके बुढ़ापे के वक़्त में उसे पाँवों का रोग लग गया।
24 और आसा अपने बाप — दादा के साथ सो गया, और अपने
बाप — दादा के साथ अपने बाप दाऊद के शहर में दफ़्न हुआ;
और उसका बेटा यहूसफ़त उसकी जगह बादशाह हुआ।
25 शाह — ए — यहूदाह आसा की हुकूमत के दूसरे साल से
युरब'आम का बेटा नदब इस्राईल पर हुकूमत करने लगा, और
उसने इस्राईल पर दो साल हुकूमत की।
26 और उसने ख़ुदावन्द की नज़र में बदी की और अपने बाप
की रास्ते और उसके गुनाह के चाल चलन इख़्तियार किए, जिससे
उसने इस्राईल से गुनाह कराया था।
27 अख़ियाह के बेटे बा'शा ने, जो इश्कार के घराने का था,
उसके ख़िलाफ़ साज़िश की और बाशा ने जिब्बतून में, जो
फ़िलिस्तियों का था, उसे क़त्ल किया; क्यूँकि नदब और सारे

इस्राईल ने जिब्बतून का घेरा कर रखा था।

28 शाह — ए — यहूदाह आसा के तीसरे ही साल बाशा ने उसे क़त्ल किया, और उसकी जगह हुकूमत करने लगा।

29 और जूँही वह बादशाह हुआ उसने युरब'आम के सारे घराने को क़त्ल किया; और जैसा ख़ुदावन्द ने अपने ख़ादिम अख़ियाह सैलानी की ज़रिए' फ़रमाया था, उसने युरब'आम के लिए किसी साँस लेने वाले को भी, जब तक उसे हलाक न कर डाला, न छोड़ा।

30 युरब'आम के उन गुनाहों की वजह से जो उसने ख़ुद किए, और जिनसे उसने इस्राईल से गुनाह कराया, और उसके उस ग़ुस्सा दिलाने की वजह से, जिससे उसने ख़ुदावन्द इस्राईल के ख़ुदा के ग़ज़ब को भड़काया।

31 और नदब का बाक़ी हाल और सब कुछ जो उसने किया, इसलिए क्या वह इस्राईल के बादशाहों की तवारीख़ की किताब में क़लमबन्द नहीं?

32 आसा और शाह — ए — इस्राईल बा'शा के दर्मियान उनकी उम्र भर जंग रही।

33 शाह — ए — यहूदाह आसा के तीसरे साल से अख़ियाह का बेटा बा'शा तिरज़ा में सारे इस्राईल पर बादशाही करने लगा, और उसने चौबीस साल हुकूमत की।

34 और उसने ख़ुदावन्द की नज़र में बदी की, और युरब'आम की रास्ते और उसके गुनाह के चाल चलन इख़्तियार किया जिससे उसने इस्राईल से गुनाह कराया।

16

1 और हनानी के बेटे याहू पर ख़ुदावन्द का यह कलाम बा'शा के ख़िलाफ़ नाज़िल हुआ,

2 “इसलिए के मैंने तुझे ख़ाक पर से उठाया और अपनी क़ौम
इस्राईल का पेशवा बनाया, और तू युरब'आम की रास्ते पर चला,
और तू ने मेरी क़ौम इस्राईल से गुनाह करा के उनके गुनाहों से
मुझे ग़ुस्सा दिलाया।
3 इसलिए देख, मैं बा'शा और उसके घराने की पूरी सफ़ाई कर
दूँगा और तेरे घराने को नबात के बेटे युरब'आम के घराने की तरह
बना दूँगा।
4 बा'शा का जो कोई शहर में मरेगा उसे कुत्ते खाएँगे, और जो
मैदान में मरेगा उसे हवा के परिन्दे चट कर जाएँगे।”
5 बा'शा का बाक़ी हाल और जो कुछ उसने किया और उसकी
ताक़त, इसलिए क्या वह इस्राईल के बादशाहों की तवारीख़ की
किताब में लिखा नहीं है?
6 और बा'शा अपने बाप दादा के साथ सो गया और तिरज़ा में
दफ़न हुआ, और उसका बेटा ऐला उसकी जगह बादशाह हुआ।
7 और हनानी के बेटे याहू के ज़रिए' ख़ुदावन्द का कलाम बा'शा
और उसके घराने के ख़िलाफ़ उस सारी बदी की वजह से भी
नाज़िल हुआ, जो उसने ख़ुदावन्द की नज़र में की और अपने हाथों
के काम से उसे ग़ुस्सा दिलाया, और युरब'आम के घराने की तरह
बना, और इस वजह से भी कि उसने उसे क़त्ल किया।

[illegible]

8 शाह — ए — यहूदाह आसा के छब्बीसवें साल से बा'शा का
बेटा ऐला तिरज़ा में बनी इस्राईल पर हुकूमत करने लगा, और
उसने दो साल हुकूमत की।
9 और उसके ख़ादिम ज़िमरी ने, जो उसके आधे रथों का दारोग़ा
था, उसके ख़िलाफ़ साज़िश की। उस वक़्त वह तिरज़ा में था, और
अरज़ा के घर में जो तिरज़ा में उसके घर का दीवान था, शराब पी
कर मतवाला होता जाता था।

10 तब ज़िमरी ने आसा शाह — ए — यहूदाह के सत्ताइसवें
साल अन्दर जाकर उस पर वार किया और उसे क़त्ल कर दिया,
और उसकी जगह हुकूमत करने लगा।
11 जब वह बादशाही करने लगा, तो तख़्त पर बैठते ही उसने
बा'शा के सारे घराने को क़त्ल किया, और न तो उसके रिश्तेदारों
का और न उसके दोस्तों का कोई लड़का बाक़ी छोड़ा।
12 ऐसे ज़िमरी ने ख़ुदावन्द के उस कहे के मुताबिक़, जो उसने
बा'शा के ख़िलाफ़ याहू नबी के ज़रिए' फ़रमाया था, बाशा के सारे
घराने को मिटा दिया।
13 बाशा के सब गुनाहों और उसके बेटे ऐला के गुनाहों की
वजह से जो उन्होंने किए, और जिनसे उन्होंने इस्राईल से गुनाह
कराया, ताकि ख़ुदावन्द इस्राईल के ख़ुदा को अपने बातिल कामों
से ग़ुस्सा दिलाएँ।
14 ऐला का बाक़ी हाल और सब कुछ जो उसने किया,
इसलिए क्या वह इस्राईल के बादशाहों की तवारीख़ की किताब
में क़लमबन्द नहीं?
15 शाह — ए — यहूदाह आसा के सत्ताइसवें साल में ज़िमरी
ने तिरज़ा में सात दिन बादशाही की; उस वक़्त लोग जिब्बतून के
मुक़ाबिल, जो फ़िलिस्तियों का था, ख़ेमाज़न थे।
16 और उन लोगों ने, जो ख़ैमाज़न थे, यह चर्चा सुना के ज़िमरी
ने साज़िश की और बादशाह को मार भी डाला है, इसलिए
सारे इस्राईल ने उमरी को, जो लश्कर का सरदार था, उस दिन
लश्करगाह में इस्राईल का बादशाह बनाया।
17 तब 'उमरी और उसके साथ सारा इस्राईल जिब्बतून से
रवाना हुआ और उन्होंने तिरज़ा का घेरा कर लिया।
18 और ऐसा हुआ कि जब ज़िमरी ने देखा कि शहर का घिराव
हो गया, तो शाही महल के मज़बूत हिस्से में जाकर शाही महल
में आग लगा दी और जल मरा।

19 अपने उन गुनाहों की वजह से जो उसने किए, कि ख़ुदावन्द
की नज़र में बदी की और युरब'आम के रास्ते और उसके गुनाह
के चाल चलन इख़्तियार किए जो उसने किया, ताकि इस्राईल से
गुनाह कराए।
20 ज़िमरी का बाक़ी हाल और जो बग़ावत उसने की, इसलिए
क्या वह इस्राईल के बादशाहों की तवारीख़ की किताब में
क़लमबन्द नहीं?
21 उस वक़्त इस्राईली दो हिस्से हो गए, आधे आदमी जीनत
के बेटे तिबनी के पैरोकार हो गए ताकि उसे बादशाह बनाएँ और
आधे 'उमरी के पैरोकार थे।
22 लेकिन जो 'उमरी के पैरोकार थे उन पर, जो जीनत के बेटे
तिबनी के पैरोकार थे, ग़ालिब आए। इसलिए तिबनी मर गया
और उमरी बादशाह हुआ।
23 शाह — ए — यहूदाह आसा के इकतीसवें साल में उमरी
इस्राईल पर हुकूमत करने लगा, उसने बारह साल हुकूमत की;
तिरज़ा में छ: साल उसकी हुकूमत रही।
24 और उसने सामरिया का पहाड़ समर से दो क़िन्तार' चाँदी में
ख़रीदा, और उस पहाड़ पर एक शहर बनाया और उस शहर का
नाम, जो उसने बनाया था, पहाड़ के मालिक समर के नाम पर
सामरिया रखा।
25 और उमरी ने ख़ुदावन्द की नज़र में बदी की, और उन सब
से जो उससे पहले हुए बदतर काम किए।
26 क्यूँकि उसने नबात के बेटे युरब'आम की सब रास्तों और
उसके गुनाहों की चाल चलन इख़्तियार की, जिनसे उसने इस्राईल
से गुनाह कराया ताकि वह ख़ुदावन्द इस्राईल के ख़ुदा को अपने
बातिल कामों से ग़ुस्सा दिलाएँ।
27 और उमरी के बाक़ी काम जो उसने किए और उसका ज़ोर
जो उसने दिखाया, इसलिए क्या वह इस्राईल के बादशाहों की
तवारीख़ की किताब में क़लमबन्द नहीं?

28 तब उमरी अपने बाप — दादा के साथ सो गया और
सामरिया में दफ़्न हुआ, और उसका बेटा अख़ीअब उसकी जगह
बादशाह हुआ।
29 शाह — ए — यहूदाह आसा के अठतीसवें साल से उमरी
का बेटा अख़ीअब इस्राईल पर हुकूमत करने लगा, और उमरी के
बेटे अख़ीअब ने सामरिया में इस्राईल पर बाईस साल हुकूमत
की।
30 और उमरी के बेटे अख़ीअब ने जितने उससे पहले हुए थे,
उन सभों से ज़्यादा ख़ुदावन्द की नज़र में बदी की।
31 और गोया नबात के बेटे युरब'आम के गुनाहों के चाल चलन
इख़्तियार करना उसके लिए एक हल्की सी बात थी, इसलिए
उसने सैदानियों के बादशाह इतबाल की बेटी ईज़बिल से ब्याह
किया, और जाकर बाल की इबादत करने और उसे सिज्दा करने
लगा।
32 और बाल के मन्दिर में, जिसे उसने सामरिया में बनाया था,
बाल के लिए एक मज़बह तैयार किया।
33 और अख़ीअब ने यसीरत बनाई, और अख़ीअब ने इस्राईल
के सब बादशाहों से ज़्यादा, जो उससे पहले हुए थे, ख़ुदावन्द
इस्राईल के ख़ुदा को ग़ुस्सा दिलाने के काम किए।
34 उसके दिनों में बैतएली हीएल ने यरीहू को ता'मीर किया।
जब उसने उसकी बुनियाद डाली तो उसका पहलौठा बेटा
अबीराम मरा, और जब उसके फाटक लगाए तो उसका सबसे
छोटा बेटा सजूब मर गया, यह ख़ुदावन्द के कलाम के मुताबिक़
हुआ जो उसने नून के बेटे यशूअ के ज़रिए' फ़रमाया था।

17

[illegible]

1 एलियाह तिशबी ने जो जिल'आद के परदेसियों में से था,
अख़ीअब से कहा कि “ख़ुदावन्द इस्राईल के ख़ुदा की हयात की

क़सम, जिसके सामने मैं खड़ा हूँ, इन बरसों में न ओस पड़ेगी न
बारिश होगी, जब तक मैं न कहूँ।”
2 और ख़ुदावन्द का यह कलाम उस पर नाज़िल हुआ कि
3 “यहाँ से चल दे और मशरिक़ की तरफ़ अपना रुख कर और
करीत के नाले के पास, जो यरदन के सामने है, जा छिप।
4 और तू उसी नाले में से पीना, और मैंने कौवों को हुक्म किया
है कि वह तेरी परवरिश करें।”
5 तब उसने जाकर ख़ुदावन्द के कलाम के मुताबिक़ किया,
क्यूँकि वह गया और करीत के नाले के पास जो यरदन के सामने
है रहने लगा।
6 और कौवे उसके लिए सुबह को रोटी और गोश्त, और शाम
को भी रोटी और गोश्त लाते थे, और वह उस नाले में से पिया
करता था।
7 और कुछ 'अरसे के बाद वह नाला सूख गया इसलिए कि उस
मुल्क में बारिश नहीं हुई थी।

[illegible]

8 तब ख़ुदावन्द का यह कलाम उस पर नाज़िल हुआ, कि
9 “उठ और सैदा के सारपत को जा और वहीं रह। देख, मैंने एक
बेवा को वहाँ हुक्म दिया है कि तेरी परवरिश करे।”
10 तब वह उठकर सारपत को गया, और जब वह शहर के फाटक
पर पहुँचा तो देखा, कि एक बेवा वहाँ लकड़ियाँ चुन रही है; तब
उसने उसे पुकार कर कहा, “ज़रा मुझे थोड़ा सा पानी किसी बर्तन
में ला दे कि मैं पियूं।”
11 जब वह लेने चली, तो उसने पुकार कर कहा, “ज़रा अपने
हाथ में एक टुकड़ा रोटी मेरे वास्ते लेती आना।”
12 उसने कहा, “ख़ुदावन्द तेरे ख़ुदा की हयात की कसम, मेरे
यहाँ रोटी नहीं सिर्फ़ मुट्ठी भर आटा एक मटके में, और थोड़ा सा
तेल एक कुप्पी में है। और देख, मैं दो एक लकड़ियाँ चुन रही हूँ,

ताकि घर जाकर अपने और अपने बेटे के लिए उसे पकाऊँ, और
हम उसे खाएँ, फिर मर जाएँ।"
13 और एलियाह ने उससे कहा, "मत डर; जा और जैसा कहती
है कर, लेकिन पहले मेरे लिए एक टिकिया उसमें से बनाकर मेरे
पास ले आ; उसके बाद अपने और अपने बेटे के लिए बना लेना।
14 क्यूँकि ख़ुदावन्द इस्राईल का ख़ुदा ऐसा फ़रमाता है, उस
दिन तक जब तक ख़ुदावन्द ज़मीन पर मेंह न बरसाए, न तो आटे
का मटका खाली होगा और न तेल की कुप्पी में कमी होगी।"
15 तब उसने जाकर एलियाह के कहने के मुताबिक़ किया, और
यह और वह और उसका कुन्बा बहुत दिनों तक खाते रहे।
16 और ख़ुदावन्द के कलाम के मुताबिक़ जो उसने एलियाह
की ज़रिए' फ़रमाया था, न तो आटे का मटका ख़ाली हुआ और
न तेल की कुप्पी में कमी हुई।
17 इन बातों के बाद उस 'औरत का बेटा, जो उस घर की
मालिक थी, बीमार पड़ा और उसकी बीमारी ऐसी सख़्त हो गई
कि उसमें दम बाक़ी न रहा।
18 तब वह एलियाह से कहने लगी, ऐ नबी, मुझे तुझ से क्या
काम? तू मेरे पास आया है, कि मेरे गुनाह याद दिलाए और मेरे
बेटे को मार दे!"
19 उसने उससे कहा, अपना बेटा मुझ को दे।" और वह उसे
उसकी गोद से लेकर उसकी बालाखाने पर, जहाँ वह रहता था, ले
गया और उसे अपने पलंग पर लिटाया।
20 और उसने ख़ुदावन्द से फ़रियाद की और कहा, "ऐ ख़ुदावन्द
मेरे ख़ुदा! क्या तू ने इस बेवा पर भी, जिसके यहाँ मैं टिका हुआ
हूँ, उसके बेटे को मार डालने से बला नाज़िल की?"
21 और उसने अपने आपको तीन बार उस लड़के पर पसार कर
ख़ुदावन्द से फ़रियाद की और कहा, "ऐ ख़ुदावन्द मेरे ख़ुदा! मैं
तेरी मिन्नत करता हूँ कि इस लड़के की जान इसमें फिर आ जाए।"

22 और ख़ुदावन्द ने एलियाह की फ़रयाद सुनी औए लड़के की
जान उसमें फिर आ गई और वह जी उठा।
23 तब एलियाह उस लड़के को उठाकर बालाख़ाने पर से नीचे
घर के अन्दर ले गया, और उसे उसकी माँ के ज़िम्मे किया, और
एलियाह ने कहा, “देख, तेरा बेटा ज़िन्दा है।”
24 तब उस 'औरत ने एलियाह से कहा, “अब मैं जान गई कि तू
नबी है, और ख़ुदावन्द का जो कलाम तेरे मुँह में है वह सच है।”

18

[illegible]

1 और बहुत दिनों के बाद ऐसा हुआ कि ख़ुदावन्द का यह
कलाम तीसरे साल एलियाह पर नाज़िल हुआ, कि “जाकर
अख़ीअब से मिल, और मैं ज़मीन पर मेंह बरसाऊँगा।”
2 इसलिए एलियाह अख़ीअब से मिलने को चला; और
सामरिया में सख़्त काल था।
3 और अख़ीअब ने 'अबदियाह को, जो उसके घर का दीवान
था, तलब किया और अबदियाह ख़ुदावन्द से बहुत डरता था,
4 क्यूँकि जब ईज़बिल ने ख़ुदावन्द के नबियों को क़त्ल किया
तो 'अबदियाह ने सौ नबियों को लेकर, पचास पचास करके उनको
एक ग़ार में छिपा दिया, और रोटी और पानी से उनको पालता
रहा —
5 इसलिए अख़ीअब ने 'अबदियाह से कहा, “मुल्क में गश्त
करता हुआ पानी के सब चश्मों और सब नालों पर जा, शायद
हम को कहीं घास मिल जाए, जिससे हम घोड़ों और ख़च्चरों को
ज़िन्दा बचा लें ताकि हमारे सब चौपाए जाया' न हों।”
6 तब उन्होंने उस पूरे मुल्क में गश्त करने के लिए, उसे आपस
में तक़सीम कर लिया; अख़ीअब अकेला एक तरफ़ चलाऔर
'अबदियाह अकेला दूसरी तरफ़ गया।

7 और 'अबदियाह रास्ते ही में था कि एलियाह उसे मिला, वह
उसे पहचान कर मुँह के बल गिरा और कहने लगा, “ऐ मेरे मालिक
एलियाह, क्या तू है?”
8 उसने उसे जवाब दिया, मैं ही हूँ जा अपने मालिक को बता
दे कि एलियाह हाज़िर है।
9 उसने कहा, “मुझ से क्या गुनाह हुआ है, जो तू अपने ख़ादिम
को अख़ीअब के हाथ में हवाले करना चाहता है, ताकि वह मुझे
क़त्ल करे।
10 ख़ुदावन्द तेरे ख़ुदा की हयात की क़सम, कि ऐसी कोई क़ौम
या हुकूमत नहीं जहाँ मेरे मालिक ने तेरी तलाश के लिए न भेजा
हो; और जब उन्होंने कहा कि वह यहाँ नहीं, तो उसने उस हुकूमत
और क़ौम से क़सम ली कि तू उनको नहीं मिला है।
11 और अब तू कहता है कि जाकर अपने मालिक को ख़बर कर
दे कि एलियाह हाज़िर है।
12 और ऐसा होगा कि जब मैं तेरे पास से चला जाऊँगा,
तो ख़ुदावन्द की रूह तुझ को न जाने कहाँ ले जाए; और मैं
जाकर अख़ीअब को ख़बर दूँ और तू उसको कहीं मिल न सके,
तो वह मुझको क़त्ल कर देगा। लेकिन मैं तेरा ख़ादिम लड़कपन
से ख़ुदावन्द से डरता रहा हूँ।
13 क्या मेरे मालिक को जो कुछ मैंने किया है नहीं बताया
गया, कि जब ईज़बिल ने ख़ुदावन्द के नबियों को क़त्ल किया, तो
मैंने ख़ुदावन्द के नबियों में से सौ आदमियों को लेकर, पचास —
पचास करके उनको एक ग़ार में छिपाया और उनको रोटी और
पानी से पालता रहा?
14 और अब तू कहता है कि जाकर अपने मालिक को ख़बर दे
कि एलियाह हाज़िर है; तब वह मुझे मार डालेगा।”
15 तब एलियाह ने कहा, “रब्ब — उल — अफ़वाज की हयात
की क़सम जिसके सामने मैं खड़ा हूँ, मैं आज उससे ज़रूर मिलूँगा।”

16 तब 'अबदियाह अख़ीअब से मिलने को गया और उसे ख़बर
दी; और अख़ीअब एलियाह की मुलाक़ात को चला।
17 और जब अख़ीअब ने एलियाह को देखा, तो उसने उससे
कहा, "ऐ इस्राईल के सताने वाले, क्या तू ही है?"
18 उसने जवाब दिया, "मैंने इस्राईल को नहीं सताया, बल्कि
तू और तेरे बाप के घराने ने, क्यूँकि तुमने ख़ुदावन्द के हुक्मों को
छोड़ दिया, और तू बा'लीम का पैरोकार हो गया।
19 इसलिए अब तू क़ासिद भेज; और सारे इस्राईल को और
बा'ल के साढ़े चार सौ नबियों को, और यसीरत के चार सौ नबियों
को जो ईज़बिल के दस्तरख़्वान पर खाते हैं कर्मिल की पहाड़ी पर
मेरे पास इकट्ठा कर दे।"
20 तब अख़ीअब ने सब बनी — इस्राईल को बुला भेजा, और
नबियों को कर्मिल की पहाड़ी पर इकट्ठा किया।
21 और एलियाह सब लोगों के नज़दीक आकर कहने लगा,
"तुम कब तक दो ख़्यालों में डाँवाडोल रहोगे? अगर ख़ुदावन्द
ही ख़ुदा है, तो उसकी पैरवी करो; और अगर बा'ल है, तो उसकी
पैरवी करो।" लेकिन उन लोगों ने उसे एक हर्फ़ जवाब न दिया।
22 तब एलियाह ने उन लोगों से कहा, "एक मैं ही अकेला
ख़ुदावन्द का नबी बच रहा हूँ, लेकिन बा'ल के नबी चार सौ पचास
आदमी हैं।
23 इसलिए हम को दो बैल दिए जाएँ, और वह अपने लिए एक
बैल को चुन लें और उसे टुकड़े टुकड़े काटकर लकड़ियों पर धरें और
नीचे आग न दें; और मैं दूसरा बैल तैयार करके उसे लकड़ियों पर
धरूँगा, और नीचे आग नहीं दूँगा।
24 तब तुम अपने मा'बूद से दुआ करना, और मैं ख़ुदावन्द से
दुआ करूँगा; और वह ख़ुदा जो आग से जवाब दे, वही ख़ुदा
ठहरे।" और सब लोग बोल उठे, "ख़ूब कहा!"
25 तब एलियाह ने बा'ल के नबियों से कहा कि "तुम अपने

लिए एक बैल चुनलो और पहले उसे तैयार करो क्यूँकि तुम बहुत
से हो; और अपने मा'बूद से दुआ करो, लेकिन आग नीचे न देना।"
26 इसलिए उन्होंने उस बैल को लेकर जो उनको दिया गया
उसे तैयार किया; और सुबह से दोपहर तक बा'ल से दुआ करते
और कहते रहे, ऐ बा'ल, हमारी सुन! "लेकिन न कुछ आवाज़ हुई
और न कोई जवाब देने वाला था। और वह उस मज़बह के पास
जो बनाया गया था कूदते रहे।
27 और दोपहर को ऐसा हुआ कि एलियाह ने उनको चिढ़ाकर
कहा, बुलन्द आवाज़ से पुकारो; क्यूँकि वह तो मा'बूद है, वह
किसी सोच में होगा, या वह तनहाई में है, या कहीं सफ़र में होगा,
या शायद वह सोता है, इसलिए ज़रूर है कि वह जगाया जाए।"
28 तब वह बुलन्द आवाज़ से पुकारने लगे, और अपने दस्तूर के
मुताबिक़ अपने आप को छुरियों और नश्तरों से घायल कर लिया,
यहाँ तक कि लहू लुहान हो गए।
29 वह दोपहर ढले पर भी शाम की क़ुर्बानी चढ़ाकर नबुव्वत
करते रहे; लेकिन न कुछ आवाज़ हुई, न कोई जवाब देने वाला,
न ध्यान करने वाला था।
30 तब एलियाह ने सब लोगों से कहा कि "मेरे नज़दीक आ
जाओ।" चुनाँचे सब लोग उसके नज़दीक आ गए। तब उसने
ख़ुदावन्द के उस मज़बह को, जो ढा दिया गया था, मरम्मत
किया।
31 और एलियाह ने या'क़ूब के बेटों के क़बीलों के गिनती के
मुताबिक़, जिस पर ख़ुदावन्द का यह कलाम नाज़िल हुआ था कि
"तेरा नाम इस्राईल होगा," बारह पत्थर लिए,
32 और उसने उन पत्थरों से ख़ुदावन्द के नाम का एक मज़बह
बनाया; और मज़बह के आस पास उसने ऐसी बड़ी खाई खोदी,
जिसमें दो पैमाने बीज की समाई थी,
33 और लकड़ियों को तरतीब से चुना और बैल भी टुकड़े —

टुकड़े काटकर लकड़ियों पर धर दिया, और कहा, चार मटके पानी
से भरकर उस सोख़्तनी क़ुर्बानी पर और लकड़ियों पर उँडेल दो।"
34 फिर उसने कहा, "दोबारा करो।" उन्होंने दोबारा किया; फिर
उसने कहा, "तिबारा करो।" तब उन्होंने तिबारा भी किया।
35 और पानी मज़बह के चारों तरफ़ बहने लगा, और उसने खाई
भी पानी से भरवा दी।
36 और शाम की क़ुर्बानी पेश करने के वक़्त एलियाह नबी
नज़दीक आया और उसने कहा "ऐ ख़ुदावन्द अब्रहाम और इज़्हाक़
और इस्राईल के ख़ुदा! आज मा'लूम हो जाए कि इस्राईल में तू
ही ख़ुदा है, और मैं तेरा बन्दा हूँ, और मैंने इन सब बातों को तेरे
ही हुक्म से किया है।
37 मेरी सुन, ऐ ख़ुदावन्द, मेरी सुन! ताकि यह लोग जान जाएँ
कि ऐ ख़ुदावन्द, तू ही ख़ुदा है; और तू ने फिर उनके दिलों को फेर
दिया है।"
38 तब ख़ुदावन्द की आग नाज़िल हुई और उसने उस सोख़्तनी
क़ुर्बानी को लकड़ियों और पत्थरों और मिट्टी समेत भसम कर
दिया, और उस पानी को जो खाई में था चाट लिया।
39 जब सब लोगों ने यह देखा, तो मुँह के बल गिरे और कहने
लगे, "ख़ुदावन्द वही ख़ुदा है, ख़ुदावन्द वही ख़ुदा है।"
40 एलियाह ने उनसे कहा, "बा'ल के नबियों को पकड़ लो, उनमें
से एक भी जाने न पाए।" इसलिए उन्होंने उनको पकड़ लिया,
और एलियाह उनको नीचे कोसोन के नाले पर ले आया और वहाँ
उनको क़त्ल कर दिया।
41 फिर एलियाह ने अख़ीअब से कहा, "ऊपर चढ़ जा, खा और
पी, क्यूँकि कसरत की बारिश की आवाज़ है।"
42 इसलिए अख़ीअब खाने पीने को ऊपर चला गया। और
एलियाह कर्मिल की चोटी पर चढ़ गया, और ज़मीन पर सरनगूं
होकर अपना मुँह अपने घुटनों के बीच कर लिया,

43 और अपने ख़ादिम से कहा, “ज़रा ऊपर जाकर समुन्दर की
तरफ़ तो नज़र कर।” इसलिए उसने ऊपर जाकर नज़र की और
कहा, “वहाँ कुछ भी नहीं है।” उसने कहा, “फिर सात बार जा।”
44 और सातवें मर्तबा उसने कहा, “देख, एक छोटा सा बादल
आदमी के हाथ के बराबर समुन्दर में से उठा है।” तब उसने कहा,
“जा और अख़ीअब से कह कि अपना रथ तैयार कराके नीचे उतर
जा, ताकि बारिश तुझे रोक न ले।”
45 और थोड़ी ही देर में आसमान घटा और आँधी से सियाह हो
गया और बड़ी बारिश हुई; और अख़ीअब सवार होकर यज़र'एल
को चला।
46 और ख़ुदावन्द का हाथ एलियाह पर था; और उसने अपनी
कमर कस ली और अख़ीअब के आगे — आगे यज़र'एल के
मदख़ल तक दौड़ा चला गया।

19

[illegible]

1 और अख़ीअब ने सब कुछ, जो एलियाह ने किया था और यह
भी कि उसने सब नबियों को तलवार से क़त्ल कर दिया, ईज़बिल
को बताया।
2 इसलिए ईज़बिल ने एलियाह के पास एक क़ासिद रवाना
किया और कहला भेजा कि “अगर मैं कल इस वक़्त तक तेरी
जान उनकी जान की तरह न बना डालूँ, तो मा'बूद मुझ से ऐसा
ही बल्कि इससे ज़्यादा करें।”
3 जब उसने यह देखा तो उठकर अपनी जान बचाने को भागा,
और बैरसबा' में, जो यहूदाह का है, आया और अपने ख़ादिम को
वहीं छोड़ा।
4 और ख़ुद एक दिन की मन्ज़िल दश्त में निकल गया और झाऊ
के एक पेड़ के नीचे आकर बैठा, और अपने लिए मौत माँगी और

कहा, “बस है; अब तू ऐ ख़ुदावन्द, मेरी जान को ले ले, क्यूँकि मैं
अपने बाप — दादा से बेहतर नहीं हूँ।”
5 और वह झाऊ के एक पेड़ के नीचे लेटा और सो गया; और
देखो, एक फ़रिश्ते ने उसे छुआ और उससे कहा, “उठ और खा।”
6 उसने जो निगाह की तो क्या देखा कि उसके सिरहाने, अंगारों
पर पकी हुई एक रोटी और पानी की एक सुराही रखी है; तब वह
खा पीकर फिर लेट गया।
7 और ख़ुदावन्द का फ़रिश्ता दोबारा फिर आया, और उसे छुआ
और कहा, “उठ और खा, कि यह सफ़र तेरे लिए बहुत बड़ा है।”
8 इसलिए उसने उठकर खाया पिया, और उस खाने की ताक़त
से चालीस दिन और चालीस रात चल कर ख़ुदा के पहाड़ होरिब
तक गया।
9 और वहाँ एक ग़ार में जाकर टिक गया, और देखो, ख़ुदावन्द
का यह कलाम उस पर नाज़िल हुआ कि “ऐ एलियाह, तू यहाँ
क्या करता है?”
10 उसने कहा, “ख़ुदावन्द लश्करों के ख़ुदा के लिए मुझे बड़ी
ग़ैरत आई, क्यूँकि बनी — इस्राईल ने तेरे 'अहद को छोड़ दिया
और तेरे मज़बहों को ढा दिया, और तेरे नबियों को तलवार से
क़त्ल किया, और एक मैं ही अकेला बचा हूँ; तब वह मेरी जान
लेने को पीछे पड़े हैं।”
11 उसने कहा, “बाहर निकल, और पहाड़ पर ख़ुदावन्द के
सामने खड़ा हो।” और देखो, ख़ुदावन्द गुज़रा; और एक बड़ी सख़्त
आँधी ने ख़ुदावन्द के आगे पहाड़ों को चीर डाला और चट्टानों के
टुकड़े कर दिए, लेकिन ख़ुदावन्द आँधी में नहीं था; और आँधी के
बाद ज़लज़ला आया, पर ख़ुदावन्द ज़लज़ले में नहीं था।
12 और ज़लज़ले के बाद आग आई, लेकिन ख़ुदावन्द आग में
भी नहीं था; और आग के बाद एक दबी हुई हल्की आवाज़ आई।
13 उसको सुनकर एलियाह ने अपना मुँह अपनी चादर से लपेट

लिया, और बाहर निकल कर उस ग़ार के मुँह पर खड़ा हुआ। और
देखो, उसे यह आवाज़ आई कि "ऐ एलियाह, तू यहाँ क्या करता
है?"
14 उसने कहा, "मुझे ख़ुदावन्द लश्करों के ख़ुदा के लिए बड़ी
ग़ैरत आई, क्यूँकि बनी — इस्राईल ने तेरे 'अहद को छोड़ दिया
और तेरे मज़बहों को ढा दिया, और तेरे नबियों को तलवार से
क़त्ल किया; एक मैं ही अकेला बचा हूँ, तब वह मेरी जान लेने को
पीछे पड़े हैं।"
15 ख़ुदावन्द ने उसे फ़रमाया, "तू अपने रास्ते लौट कर दमिश्क़
के बियाबान को जा, और जब तू वहाँ पहुँचे तो तू हज़ाएल को
मसह कर, कि अराम का बादशाह हो,
16 और निमसी के बेटे याहू को मसह कर, कि इस्राईल का
बादशाह हो, और अबील महोला के इलीशा' — बिन — साफ़त
को मसह कर, कि तेरी जगह नबी हो।
17 और ऐसा होगा कि जो हज़ाएल की तलवार से बच जाएगा
उसे याहू क़त्ल करेगा, और जो याहू की तलवार से बच रहेगा उसे
इलीशा क़त्ल कर डालेगा।
18 तोभी मैं इस्राईल में सात हज़ार अपने लिए रख छोड़ूँगा,
या'नी वह सब घुटने जो बा'ल के आगे नहीं झुके और हर एक मुँह
जिसने उसे नहीं चूमा।"
19 तब वह वहाँ से रवाना हुआ, और साफ़त का बेटा इलीशा'
उसे मिला जो बारह जोड़ी बैल अपने आगे लिए हुए जोत रहा
था, और वह ख़ुद बारहवें के साथ था; और एलियाह उसके बराबर
से गुज़रा, और अपनी चादर उस पर डाल दी।
20 तब वह बैलों को छोड़कर एलियाह के पीछे दौड़ा और कहने
लगा, "मुझे अपने बाप और अपनी माँ को चूम लेने दे, फिर मैं तेरे
पीछे हो लूँगा।" उसने उससे कहा कि "लौट जा; मैंने तुझ से क्या
किया है?"

21 तब वह उसके पीछे से लौट गया, और उसने उस जोड़ी बैल
को लेकर ज़बह किया, और उन ही बैलों के सामान से उनका गोश्त
उबाला और लोगों को दिया, और उन्होंने खाया; तब वह उठा और
एलियाह के पीछे रवाना हुआ, और उसकी ख़िदमत करने लगा।

20

[illegible]

1 और अराम के बादशाह बिन हदद ने अपने सारे लश्कर को
इकट्ठा किया, और उसके साथ बत्तीस बादशाह और घोड़े और रथ
थे; और उसने सामरिया पर चढ़ाई करके उसका घेरा किया और
उससे लड़ा।
2 और इस्राईल के बादशाह अख़ीअब के पास शहर में क़ासिद
रवाना किए और उसे कहला भेजा कि "बिन हदद ऐसा फ़रमाता
है: कि
3 'तेरी चाँदी और तेरा सोना मेरा है; तेरी बीवियों और तेरे
लड़कों में जो सबसे ख़ूबसूरत हैं वह मेरे हैं।"
4 इस्राईल के बादशाह ने जवाब दिया, "ऐ मेरे मालिक,
बादशाह! तेरे कहने के मुताबिक़, मैं और जो कुछ मेरे पास है
सब तेरा ही है।"
5 फिर उन क़ासिदों ने दोबारा आकर कहा कि "बिनहदद ऐसा
फ़रमाता है कि 'मैंने तुझे कहला भेजा था कि तू अपनी चाँदी और
अपनी बीवियाँ और अपने लड़के मेरे हवाले कर दे
6 लेकिन अब मैं कल इसी वक़्त अपने ख़ादिमों को तेरे पास
भेजूँगा; तब वह तेरे घर और तेरे ख़ादिमों के घरों की तलाशी
लेंगे, और जो कुछ तेरी निगाह में क़ीमती होगा वह उसे अपने
कब्ज़े में करके ले आएँगे।"
7 तब इस्राईल के बादशाह ने मुल्क के सब बुज़ुर्गों को बुला कर
कहा, "ज़रा ग़ौर करो और देखो, कि यह शख़्स किस तरह बुराई के
पीछे पड़ा है; क्यूँकि उसने मेरी बीवियाँ और मेरे लड़के और मेरी

चाँदी और मेरा सोना, मुझ से मंगा भेजा और मैंने उससे इन्कार
नहीं किया।"
8 तब सब बुज़गों और सब लोगों ने उससे कहा कि "तू मत सुन,
और मत मान।"
9 इसलिए उसने बिनहदद के कासिदों से कहा, "मेरे मालिक
बादशाह से कहना, 'जो कुछ तू ने अपने ख़ादिम से पहले तलब
किया, वह तो मैं करूँगा; पर यह बात मुझ से नहीं हो सकती।"
तब क़ासिद रवाना हुए और उसे यह जवाब सुना दिया।
10 तब बिन हदद ने उसको कहला भेजा कि "अगर सामरिया की
मिट्टी, उन सब लोगों के लिए जो मेरे पैरोकार हैं, मुट्ठियाँ भरने को
भी काफ़ी हो; तो मा'बूद मुझ से ऐसा ही बल्कि इससे भी ज़्यादा
करें।"
11 शाह — ए — इस्राईल ने जवाब दिया, "तुम उससे कहना,
'जो हथियार बाँधता है, वह उसकी तरह फ़ख़्र न करे जो उसे
उतारता है।"
12 जब बिन हदद ने, जो बादशाहों के साथ सायबानों में
मयनोशी कर रहा था, यह पैग़ाम सुना तो अपने मुलाज़िमों को
हुक्म किया कि "सफ़ बान्ध लो।" इसलिए उन्होंने शहर पर चढ़ाई
करने के लिए सफ़आराई की।
13 और देखो, एक नबी ने शाह — ए — इस्राईल अख़ीअब के
पास आकर कहा, 'ख़ुदावन्द ऐसा फ़रमाता है कि "क्या तू ने इस
बड़े हुजूम को देख लिया? मैं आज ही उसे तेरे हाथ में कर दूँगा,
और तू जान लेगा कि ख़ुदावन्द मैं ही हूँ।"
14 तब अख़ीअब ने पूछा, "किसके वसीले से?" उसने कहा,
ख़ुदावन्द ऐसा फ़रमाता है कि सूबों के सरदारों के जवानों के
वसीले से! "फिर उसने पूछा कि लड़ाई कौन शुरू करे।" उसने
जवाब दिया कि "तू।"
15 तब उसने सूबों के सरदारों के जवानों को शुमार किया, और

वह दो सौ बत्तीस निकले; उनके बाद उसने सब लोगों, या'नी सब
बनी — इस्राईल की हाजरी ली, और वह सात हज़ार थे।
16 यह सब दोपहर को निकले, और बिन हदद और वह बत्तीस
बादशाह, जो उसके मददगार थे, सायबानों में पी पीकर मस्त होते
जाते थे।
17 इसलिए सूबों के सरदारों के जवान पहले निकले। और बिन
हदद ने आदमी भेजे, और उन्होंने उसे ख़बर दी कि "सामरिया से
लोग निकले हैं।"
18 उसने कहा, "अगर वह सुलह के इरादे से निकले हों तो उनको
ज़िन्दा पकड़ लो, और अगर वह जंग को निकले हों तोभी उनको
ज़िन्दा पकड़ो।"
19 तब सूबों के सरदारों के जवान और वह लश्कर जो उनके
पीछे हो लिया था शहर से बाहर निकले;
20 और उनमें से एक एक ने अपने मुख़ालिफ़ को क़त्ल किया;
इसलिए अरामी भागे और इस्राईल ने उनका पीछा किया, और
शाह — ए — अराम बिन हदद एक घोड़े पर सवार होकर सवारों
के साथ भागकर बच गया।
21 और शाह — ए — इस्राईल ने निकल कर घोड़ों और रथों
को मारा, और अरामियों को बड़ी ख़ूँरेज़ी के साथ क़त्ल किया।
22 और वह नबी शाह — ए — इस्राईल के पास आया और
उससे कहा, "जा अपने को मज़बूत कर, और जो कुछ तू करे उसे
ग़ौर से देख लेना; क्यूँकि अगले साल शाह — ए — अराम फिर
तुझ पर चढ़ाई करेगा।"
23 और शाह — ए — अराम के ख़ादिमों ने उससे कहा, "उनका
ख़ुदा पहाड़ी ख़ुदा है, इसलिए वह हम पर ग़ालिब आए; लेकिन
हम को उनके साथ मैदान में लड़ने दे तो ज़रूर हम उन पर ग़ालिब
होंगे।
24 और एक काम यह कर, कि बादशाहों को हटा दे, या'नी
हर एक को उसके 'उहदे से हटा दे और उनकी जगह सरदारों को

मुक़र्रर कर;
25 और अपने लिए एक लश्कर अपनी उस फ़ौज की तरह, जो
तबाह हो गई, घोड़े की जगह घोड़ा और रथ की जगह रथ गिन
गिनकर तैयार कर ले। हम मैदान में उनसे लड़ेंगे और ज़रूर उन
पर ग़ालिब होंगे।" इसलिए उसने उनका कहा माना और ऐसा ही
किया।
26 और अगले साल बिन हदद ने अरामियों की हाज़री ली, और
इस्राईल से लड़ने के लिए अफ़ीक़ को गया।
27 और बनी — इस्राईल की हाज़री भी ली गई, और उनकी
ख़ूराक का इन्तज़ाम किया गया और यह उनसे लड़ने को गए;
और बनी — इस्राईल उनके बराबर ख़ेमाज़न होकर ऐसे मा'लूम
होते थे जैसे हलवानों के दो छोटे रेवड़, लेकिन अरामियों से वह
मुल्क भर गया था।
28 तब एक नबी इस्राईल के बादशाह के पास आया और उससे
कहा, "ख़ुदावन्द ऐसा फ़रमाता है कि चूँकि अरामियों ने ऐसा
कहा है कि ख़ुदावन्द पहाड़ी ख़ुदा है, और वादियों का ख़ुदा नहीं;
इसलिए मैं इस सारे बड़े हुजूम को तेरे ज़िम्मे में कर दूँगा, और
तुम जान लोगे कि मैं ख़ुदावन्द हूँ।"
29 और वह एक दूसरे के मुक़ाबिल सात दिन तक ख़ेमाज़न रहे;
और सातवें दिन जंग छिड़ गई, और बनी — इस्राईल ने एक दिन
में अरामियों के एक लाख प्यादे क़त्ल कर दिए;
30 और बाक़ी अफ़ोक को शहर के अन्दर भाग गए, और वहाँ
एक दीवार सताईस हज़ार पर जो बाकी रहे थे गिरी। और बिन
हदद भागकर शहर के अन्दर एक अन्दरूनी कोठरी में घुस गया।
31 और उसके ख़ादिमों ने उससे कहा, "देख, हम ने सुना है कि
इस्राईल के घराने के बादशाह रहीम होते हैं; इसलिए हम को ज़रा
अपनी कमरों पर टाट और अपने सिरों पर रस्सियाँ बाँध कर शाह
— ए — इस्राईल के सामने जाने दे; शायद वह तेरी जान बख़्शी
करे।"

32 इसलिए उन्होंने अपनी कमरों पर टाट और सिरों पर
रस्सियाँ बाँधी, और शाह — ए — इस्राईल के सामने आकर कहा,
“तेरा ख़ादिम बिनहदद यह दरख़्वास्त करता है कि 'महेरबानी
करके मुझे जीने दे।” उसने कहा, “क्या वह अब तक ज़िन्दा है?
वह मेरा भाई है।”
33 वह लोग बड़ी ध्यान से सुन रहे थे; इसलिए उन्होंने उसका
दिली इरादा दरियाफ़्त करने के लिए झट उससे कहा कि “तेरा
भाई बिन हदद।” तब उसने फ़रमाया कि “जाओ, उसे ले आओ।”
तब बिन हदद उससे मिलने को निकला, और उसने उसे अपने रथ
पर चढ़ा लिया।
34 और बिनहदद ने उससे कहा, “जिन शहरों को मेरे बाप ने
तेरे बाप से ले लिया था, मैं उनको लौटा दूँगा; और तू अपने
लिए दमिश्क़ में सड़कें बनवा लेना, जैसे मेरे बाप ने सामरिया में
बनवाई।” अख़ीअब ने कहा, “मैं इसी 'अहद पर तुझे छोड़ दूँगा।”
इसलिए उसने उससे 'अहद बाँधा और उसे छोड़ दिया।
35 इसलिए अम्बियाज़ादों में से एक ने ख़ुदावन्द के हुक्म से
अपने साथी से कहा, “मुझे मार।” लेकिन उसने उसे मारने से
इन्कार किया।
36 तब उसने उससे कहा, “इसलिए कि तू ने ख़ुदावन्द की बात
नहीं मानी, सो देख, जैसे ही तू मेरे पास से रवाना होगा एक शेर
तुझे मार डालेगा।” सो जैसे ही वह उसके पास से रवाना हुआ,
उसे एक शेर मिला और उसे मार डाला।
37 फिर उसे एक और शख़्स मिला, उसने उससे कहा, “मुझे
मार।” उसने उसे मारा, और मार कर ज़ख़्मी कर दिया।
38 तब वह नबी चला गया और बादशाह के इन्तज़ार में रास्ते
पर ठहरा रहा, और अपनी आँखों पर अपनी पगड़ी लपेट ली और
अपना भेस बदल डाला।
39 जैसे ही बादशाह उधर से गुज़रा, उसने बादशाह की दुहाई
दी और कहा कि “तेरा ख़ादिम जंग होते में वहाँ चला गया था;

और देख, एक शख़्स उधर मुड़कर एक आदमी को मेरे पास ले
आया, और कहा कि "इस आदमी की हिफ़ाज़त कर; अगर यह
किसी तरह ग़ायब हो जाए, तो उसकी जान के बदले तेरी जान
जाएगी, और नहीं तो तुझे एक क़िन्तार' चाँदी देनी पड़ेगी।
40 जब तेरा ख़ादिम इधर उधर मसरूफ़ था, वह चलता बना।"
शाह — ए — इस्राईल ने उससे कहा, "तुझ पर वैसा ही फ़तवा
होगा, तू ने ख़ुद इसका फ़ैसला किया।"
41 तब उसने झट अपनी आँखों पर से पगड़ी हटा दी, और शाह
— ए — इस्राईल ने उसे पहचाना कि वह नबियों में से है।
42 और उसने उससे कहा, ख़ुदावन्द ऐसा फ़रमाता है, "इसलिए
कि तू ने अपने हाथ से एक ऐसे शख़्स को निकल जाने दिया,
जिसे मैंने क़त्ल के लायक़ ठहराया था, इसलिए तुझे उसकी जान
के बदले अपनी जान और उसके लोगों के बदले अपने लोग देने
पड़ेंगे।"
43 इसलिए शाह — ए — इस्राईल उदास और नाख़ुश होकर
अपने घर को चला और सामरिया में आया।

21

[illegible]

1 इन बातों के बाद ऐसा हुआ कि यज़र एली नबोत के पास
यज़र'एल में एक ताकिस्तान था, जो सामारिया के बादशाह
अख़ीअब के महल से लगा हुआ था।
2 इसलिए अख़ीअब ने नबोत से कहा कि "अपना ताकिस्तान
मुझ को दे ताकि मैं उसे तरकारी का बाग बनाऊँ, क्यूँकि वह मेरे
घर से लगा हुआ है; और मैं उसके बदले तुझ को उससे बेहतर
ताकिस्तान दूँगा; या अगर तुझे मुनासिब मा'लूम हो, तो मैं तुझ
को उसकी क़ीमत नक़द दे दूँगा।"
3 नबोत ने अख़ीअब से कहा, "ख़ुदावन्द मुझ से ऐसा न कराए
कि मैं तुझ को अपने बाप — दादा की मीरास दे दूँ।"

4 और अख़ीअब उस बात की वजह से जो यज़र'एली नबोत ने
उससे कही उदास और ना ख़ुश हो कर अपने घर में आया, क्यूँकि
उसने कहा था मैं तुझ को अपने बाप — दादा की मीरास नहीं
दूँगा। इसलिए उसने अपने बिस्तर पर लेट कर अपना मुँह फेर
लिया, और खाना छोड़ दिया।
5 तब उसकी बीवी ईज़बिल उसके पासआकर उससे कहने लगी,
“तेरा जी ऐसा क्यूँ उदास है कि तू रोटी नहीं खाता?”
6 उसने उससे कहा, “इसलिए कि मैंने यज़र'एली नबोत से
बातचीत की, और उससे कहा कि तू अपना ताकिस्तान की क़ीमत
लेकर मुझे दे दे; या अगर तू चाहे तो मैं उसके बदले दूसरा
ताकिस्तान तुझे दे दूँगा। लेकिन उसने जवाब दिया, 'मैं तुझ को
अपना ताकिस्तान नहीं दूँगा'।”
7 उसकी बीवी ईज़बिल ने उससे कहा, “इस्राईल की बादशाही
पर यही तेरी हुकुमत है? उठ रोटी खा, और अपना दिल बहला;
यज़र एली नबोत का ताकिस्तान मैं तुझ को दूँगी।”
8 इसलिए उसने अख़ीअब के नाम से ख़त लिखे, और उन पर
उसकी मुहर लगाई, और उनको उन बुज़ुर्गों और अमीरों के पास
जो नबोत के शहर में थे और उसी के पड़ोस में रहते थे भेज दिया।
9 उसने उन ख़तों में यह लिखा कि “रोज़ा का 'एलान कराके
नबोत को लोगों में ऊँची जगह पर बिठाओ।
10 और दो आदमियों को, जो बुरे हों, उसके सामने कर दो कि
वह उसके ख़िलाफ़ यह गवाही दें कि तू ने ख़ुदा पर और बादशाह
पर ला'नत की, फिर उसे बाहर ले जाकर पथराव करो ताकि वह
मर जाए।”
11 चुनाँचे उसके शहर के लोगों या'नी बुज़ुर्गों और अमीरों ने,
जो उसके शहर में रहते थे, जैसा ईज़बिल ने उनको कहला भेजा
वैसा ही उन ख़ुतूत के मज़मून के मुताबिक़, जो उसने उनको भेजे
थे, किया।
12 उन्होंने रोज़ा का 'एलान कराके नबोत को लोगों के बीच

ऊँची जगह पर बिठाया।

13 और वह दोनों आदमी जो बुरे थे, आकर उसके आगे बैठ गए;
और उन बुरों ने लोगों के सामने उसके, या'नी नबोत के ख़िलाफ़
यह गवाही दी कि "नबोत ने ख़ुदा पर और बादशाह पर ला'नत
की है।" तब वह उसे शहर से बाहर निकाल ले गए, और उसको
ऐसा पथराव किया कि वह मर गया।

14 फिर उन्होंने ईज़बिल को कहला भेजा कि "नबोत पर पथराव
कर दिया गया और मर गया।"

15 जब ईज़बिल ने सुना कि नबोत पर पथराव कर दिया गया
और मर गया, तो उसने अख़ीअब से कहा, "उठ और यज़र'एली
नबोत के ताकिस्तान पर क़ब्ज़ा कर, जिसे उसने क़ीमत पर भी
तुझे देने से इन्कार किया था; क्यूँकि नबोत ज़िन्दा नहीं बल्कि मर
गया है।"

16 जब अख़ीअब ने सुना कि नबोत मर गया है, तो अख़ीअब
उठा ताकि यज़र'एली नबोत के ताकिस्तान को जाकर उस पर
क़ब्ज़ा करे।

17 और ख़ुदावन्द का यह कलाम एलियाह तिशबी पर नाज़िल
हुआ कि

18 उठ और शाहए — इस्राईल अख़ीअब से, जो सामरिया में
रहता है, मिलने को जा। देख, वह नबोत के ताकिस्तान में है, और
उस पर क़ब्ज़ा करने को वहाँ गया है।

19 इसलिए तू उससे यह कहना कि "ख़ुदावन्द ऐसा फ़रमाता
है कि क्या तू ने जान भी ली और क़ब्ज़ा भी कर लिया?" तब तू
उससे यह कहना कि "ख़ुदावन्द ऐसा फ़रमाता है कि उसी जगह
जहाँ कुत्तों ने नबोत का लहू चाटा, कुत्ते तेरे लहू को भी चाटेंगे।"

20 और अख़ीअब ने एलियाह से कहा, "ऐ मेरे दुश्मन, क्या
मैं तुझे मिल गया?" उसने जवाब दिया कि "तू मुझे मिल गया;
इसलिए कि तू ने ख़ुदावन्द के सामने बदी करने के लिए अपने

आपको बेच डाला है।

21 देख, मैं तुझ पर बला नाज़िल करूँगा और तेरी पूरी सफ़ाई
कर दूँगा, और अख़ीअब की नसल के हर एक लड़के को, या'नी हर
एक को जो इस्राईल में बन्द है, और उसे जो आज़ाद छुटा हुआ
है काट डालूँगा।

22 और तेरे घर को नबात के बेटे युरब'आम के घर, और
अख़ियाह के बेटे बाशा के घर की तरह बना दूँगा; उस ग़ुस्सा
दिलाने की वजह से जिससे तू ने मेरे ग़ज़ब को भड़काया और
इस्राईल से गुनाह कराया।

23 और ख़ुदावन्द ने ईज़बिल के हक़ में भी यह फ़रमाया कि
यज़र'एल की फ़सील के पास कुत्ते ईज़बिल को खाएँगे।

24 अख़ीअब का जो कोई शहर में मरेगा उसे कुत्ते खाएँगे, और
जो मैदान में मरेगा उसे हवा के परिन्दे चट कर जाएँगे।"

25 क्यूँकि अख़ीअब की तरह कोई नहीं हुआ था, जिसने
ख़ुदावन्द के सामने बदी करने के लिए अपने आपको बेच डाला
था और जिसे उसकी बीवी ईज़बिल उभारा करती थी।

26 और उसने बहुत ही नफ़रतअंगेज़ काम यह किया कि
अमोरियों की तरह, जिनको ख़ुदावन्द ने बनी — इस्राईल के आगे
से निकाल दिया था, बुतों की पैरवी की।

27 जब अख़ीअब ने यह बातें सुनीं, तो अपने कपड़े फाड़े और
अपने तन पर टाट डाला और रोज़ा रख्खा और टाट ही में लेटने
और दबे पाँव चलने लगा।

28 तब ख़ुदावन्द का यह कलाम एलियाह तिशबी पर नाज़िल
हुआ कि

29 "तू देखता है कि अख़ीअब मेरे सामने कैसा ख़ाकसार बन
गया है? लेकिन चूँकि वह मेरे सामने ख़ाकसार बन गया है,
इसलिए मैं उसके दिनों में यह बला नाज़िल नहीं करूँगा, बल्कि
उसके बेटे के दिनों में उसके घराने पर यह बला नाज़िल करूँगा।"

22

□□□□□□□□ □□ □□□□

1 तीन साल वह ऐसे ही रहे और इस्राईल और अराम के बीच
लड़ाई न हुई;
2 और तीसरे साल यहूदाह का बादशाह यहूसफ़त शाह — ए
— इस्राईल के यहाँ आया,
3 और शाह — ए — इस्राईल ने अपने मुलाज़िमों से कहा,
“क्या तुम को मा'लूम है कि रामात जिल'आद हमारा है? लेकिन
हम ख़ामोश हैं और शाह — ए — अराम के हाथ से उसे छीन
नहीं लेते?”
4 फिर उसने यहूसफ़त से कहा, क्या तू मेरे साथ रामात
जिल'आद से लड़ने चलेगा? यहूसफ़त ने शाह — ए — इस्राईल
को जवाब दिया, “मैं ऐसा हूँ जैसा तू मेरे लोग ऐसे हैं जैसे तेरे
लोग और मेरे घोड़े ऐसे हैं जैसे तेरे घोड़े।”
5 और यहूसफ़त ने शाह — ए — इस्राईल से कहा, “ज़रा आज
ख़ुदावन्द की मर्ज़ी भी तो मा'लूम कर ले।”
6 तब शाह — ए — इस्राईल ने नबियों को जो क़रीब चार सौ
आदमी थे इकट्ठा किया और उनसे पूछा, “मैं रामात जिल'आद से
लड़ने जाऊँ, या बाज़ रहूँ?” उन्होंने कहा, जा “क्यूँकि ख़ुदावन्द
उसे बादशाह के क़ब्ज़े में कर देगा।”
7 लेकिन यहूसफ़त ने कहा, “क्या इनको छोड़कर यहाँ
ख़ुदावन्द का कोई नबी नहीं है, ताकि हम उससे पूछें?”
8 शाह — ए — इस्राईल ने यहूसफ़त से कहा, कि “एक शख़्स,
इमला का बेटा मीकायाह है तो सही, जिसके ज़रिए' से हम
ख़ुदावन्द से पूछ सकते हैं; लेकिन मुझे उससे नफ़रत है, क्यूँकि
वह मेरे हक़ में नेकी की नहीं बल्कि बदी की पेशीनगोई करता है।”
यहूसफ़त ने कहा, “बादशाह ऐसा न कहे।”

9 तब शाह — ए — इस्राईल ने एक सरदार को बुलाकर कहा,
कि “इमला के बेटे मीकायाह को जल्द ले आ।”
10 उस वक़्त शाह — ए — इस्राईल और शाह — ए — यहूदाह
यहूसफ़त सामरिया के फाटक के सामने, एक खुली जगह में,
अपने — अपने तख़्त पर शाहाना लिबास पहने हुए बैठे थे, और
सब नबी उनके सामने पेशीनगोई कर रहे थे।
11 और कन'आना के बेटे सिदक़ियाह ने अपने लिए लोहे के
सींग बनाए और कहा, ख़ुदावन्द ऐसा फ़रमाता है कि “तू इन से
अरामियों को मारेगा, जब तक वह मिट न जाएँ।”
12 और सब नबियों ने यही पेशीनगोई की और कहा कि रामात
जिल'आद पर चढ़ाई कर और कामयाब हो, क्यूँकि ख़ुदावन्द उसे
बादशाह के क़ब्ज़े में कर देगा।
13 और उस क़ासिद ने जो मीकायाह को बुलाने गया था उससे
कहा, “देख, सब नबी एक ज़बान होकर बादशाह को ख़ुशख़बरी
दे रहे हैं, तो ज़रा तेरी बात भी उनकी बात की तरह हो और तू
ख़ुशख़बरी ही देना।”
14 मीकायाह ने कहा, “ख़ुदावन्द की हयात की क़सम, जो कुछ
ख़ुदावन्द मुझे फ़रमाए मैं वही कहूँगा।”
15 इसलिए जब वह बादशाह के पास आया, तो बादशाह ने
उससे कहा, “मीकायाह, हम रामात जिल'आद से लड़ने जाएँ
या रहने दें?” उसने जवाब दिया, “जा और कामयाब हो, क्यूँकि
ख़ुदावन्द उसे बादशाह के क़ब्ज़े में कर देगा।”
16 बादशाह ने उससे कहा, मैं कितनी मर्तबा तुझे क़सम देकर
कहूँ, कि “तू ख़ुदावन्द के नाम से हक़ के 'अलावा और कुछ मुझ
को न बताए?”
17 तब उसने कहा, मैंने सारे इस्राईल को उन भेड़ों की तरह,
जिनका चौपान न हो, पहाड़ों पर बिखरा देखा; और ख़ुदावन्द ने
फ़रमाया कि “इनका कोई मालिक नहीं; तब वह अपने अपने घर

सलामत लौट जाएँ।"

18 तब शाह — ए — इस्राईल ने यहूसफ़त से कहा, "क्या मैंने
तुझ को बताया नहीं था कि यह मेरे हक़ में नेकी की नहीं बल्कि
बदी की पेशीनगोई करेगा?"

19 तब उसने कहा, अच्छा, तू ख़ुदावन्द की बात को सुन ले; मैंने
देखा कि ख़ुदावन्द अपने तख़्त पर बैठा है, और सारा आसमानी
लश्कर उसके दहने और बाएँ खड़ा है।

20 और ख़ुदावन्द ने फ़रमाया, 'कौन अख़ीअब को बहकाएगा,
ताकि वह चढ़ाई करे और रामात जिल'आद में मारे ग़ए?' तब
किसी ने कुछ कहा, और किसी ने कुछ।

21 लेकिन एक रूह निकल कर ख़ुदावन्द के सामने खड़ी हुई,
और कहा, 'मैं उसे बहकाऊँगी।

22 ख़ुदावन्द ने उससे पूछा, "किस तरह?" उसने कहा, "मैं
जाकर उसके सब नबियों के मुँह में झूठ बोलने वाली रूह बन
जाऊँगी, उसने कहा "तू उसे बहका देगी और ग़ालिब भी होगी,
रवाना हो जा और ऐसा ही कर।

23 इसलिए देख, ख़ुदावन्द ने तेरे इन सब नबियों के मुँह में झूठ
बोलने वाली रूह डाली है; और ख़ुदावन्द ने तेरे हक़ में बदी का
हुक्म दिया है।"

24 तब कन'आना का बेटा सिदक़ियाह नज़दीक आया, और
उसने मीकायाह के गाल पर मार कर कहा, "ख़ुदावन्द की रूह
तुझ से बात करने को किस रास्ते से होकर मुझ में से गई?"

25 मीकायाह ने कहा, "यह तू उसी दिन देख लेगा, जब तू अन्दर
की एक कोठरी में घुसेगा ताकि छिप जाए।"

26 और शाह — ए — इस्राईल ने कहा, मीकायाह को लेकर
उसे शहर के नाज़िम अमून और यूआस शहज़ादे के पास लौटा ले
जाओं;

27 और कहना, "बादशाह यूँ फ़रमाता है कि इस शख़्स को

क़ैदख़ाने में डाल दो, और इसे मुसीबत की रोटी खिलाना और
मुसीबत का पानी पिलाना, जब तक मैं सलामत न आऊँ।"
28 तब मीकायाह ने कहा, "अगर तू सलामत वापस आ जाए,
तो ख़ुदावन्द ने मेरी ज़रिए' कलाम ही नहीं किया।" फिर उसने
कहा, "ऐ लोगो, तुम सब के सब सुन लो।"
29 इसलिए शाह — ए — इस्राईल और शाह — ए — यहूदाह
यहूसफ़त ने रामात जिल'आद पर चढ़ाई की।
30 और शाह — ए — इस्राईल ने यहूसफ़त से कहा, "मैं अपना
भेस बदलकर लड़ाई में जाऊँगा; लेकिन तू अपना लिबास पहने
रह।" तब शाह — ए — इस्राईल अपना भेस बदलकर लड़ाई में
गया।
31 उधर शाह — ए — अराम ने अपने रथों के बत्तीसों सरदारों
को हुक्म दिया था, "किसी छोटे या बड़े से न लड़ना, 'अलावा
शाह — ए — इस्राईल के।"
32 इसलिए जब रथों के सरदारों ने यहूसफ़त को देखा तो कहा,
"ज़रूर शाह — ए — इस्राईल यही है।" और वह उससे लड़ने को
मुड़े, तब यहूसफ़त चिल्ला उठा।
33 जब रथों के सरदारों ने देखा कि वह शाह — ए — इस्राईल
नहीं, तो वह उसका पीछा करने से लौट गए।
34 और किसी शख़्स ने ऐसे ही अपनी कमान खींची और शाह
— ए — इस्राईल को जौशन के बन्दों के बीच मारा, तब उसने
अपने सारथी से कहा, बाग "फेर कर मुझे लश्कर से बाहर निकाल
ले चल, क्यूँकि मैं ज़ख़्मी हो गया हूँ।"
35 और उस दिन बड़े घमसान का रन पड़ा, और उन्होंने बादशाह
को उसके रथ ही में अरामियों के मुक़ाबिल संभाले रखा; और वह
शाम को मर गया, और ख़ून उसके ज़ख़्म से बह कर रथ के पायदान
में भर गया।
36 और आफ़ताब ग़ुरूब होते हुए लश्कर में यह पुकार हो गई,

“हर एक आदमी अपने शहर, और हर एक आदमी अपने मुल्क को
जाए।”
37 इसलिए बादशाह मर गया और वह सामरिया में पहुँचाया
गया, और उन्होंने बादशाह को सामरिया में दफ़न किया;
38 और उस रथ को सामरिया के तालाब में धोया कस्बियाँ यहीं
ग़ुस्ल करती थीं, और ख़ुदावन्द के कलाम के मुताबिक़ जो उसने
फ़रमाया था, कुत्तों ने उसका ख़ून चाटा।
39 और अख़ीअब की बाक़ी बातें, और सब कुछ जो उसने किया
था, और हाथी दाँत का घर जो उसने बनाया था, और उन सब
शहरों का हाल जो उसने ता'मीर किए, तो क्या वह इस्राईल के
बादशाहों की तवारीख़ की किताब में क़लमबन्द नहीं?
40 और अख़ीअब अपने बाप — दादा के साथ सो गया, और
उसका बेटा अख़ज़ियाह उसकी जगह बादशाह हुआ।
41 और आसा का बेटा यहूसफ़त शाह — ए — इस्राईल
अख़ीअब के चौथे साल से यहूदाह पर हुकूमत करने लगा।
42 जब यहूसफ़त हुकूमत करने लगा तो पैंतीस साल का था,
और उसने येरूशलेम में पच्चीस साल हुकूमत की। उसकी माँ का
नाम 'अज़ूबाह था, जो सिल्ही की बेटी थी।
43 वह अपने बाप आसा के नक़्श — ए — क़दम पर चला;
उससे वह मुड़ा नहीं और जो ख़ुदावन्द की निगाह में ठीक था उसे
करता रहा, तोभी ऊँचे मक़ाम ढाए न गए लोग उन ऊँचे मक़ामों
पर ही क़ुर्बानी करते और बख़ूर जलाते थे।
44 और यहूसफ़त ने शाह — ए — इस्राईल से सुलह की।
45 और यहूसफ़त की बाक़ी बातें और उसकी ताक़त जो उसने
दिखाई, और उसके जंग करने की क़ैफ़ियत, तो क्या वह यहूदाह
के बादशाहों की तवारीख़ की किताब में क़लमबन्द नहीं?
46 और उसने बाक़ी लूतियों को जो उसके बाप आसा के 'अहद
में रह गए थे, मुल्क से निकाल दिया।

47 और अदोम में कोई बादशाह न था, बल्कि एक नाइब
हुकूमत करता था।
48 और यहूसफ़त ने तरसीस के जहाज़ बनाए ताकि ओफ़ीर
को सोने के लिए जाएँ, लेकिन वह गए नहीं, क्यूँकि वह "अस्यून
जाबर ही में टूट गए।
49 तब अख़ीअब के बेटे अख़ज़ियाह ने यहूसफ़त से कहा,
'अपने ख़ादिमों के साथ मेरे ख़ादिमों को भी जहाज़ों में जाने दे।"
लेकिन यहूसफ़त राज़ी न हुआ।
50 और यहूसफ़त अपने बाप — दादा के साथ सो गया, और
अपने बाप दाऊद के शहर में अपने बाप — दादा के साथ दफ़्न
हुआ; और उसका बेटा यहूराम उसकी जगह बादशाह हुआ।
51 और अख़ीअब का बेटा अख़ज़ियाह शाह — ए — यहूदाह
यहूसफ़त के सत्रहवें साल से सामरिया में इस्राईल पर हुकूमत
करने लगा, और उसने इस्राईल पर दो साल हुकूमत की।
52 और उसने ख़ुदावन्द की नज़र में बदी की, और अपने बाप
की रास्ते और अपनी माँ के रास्ते और नबात के बेटे युरब'आम की
रास्ते पर चला, जिससे उसने बनी — इस्राईल से गुनाह कराया;
53 और अपने बाप के सब कामों के मुताबिक़ बा'ल की इबादत
करता और उसको सिज्दा करता रहा, और ख़ुदावन्द इस्राईल के
ख़ुदा को ग़ुस्सा दिलाया।

इंडियन रिवाइज्ड वर्जन (IRV) उर्दू - 2019

The Holy Bible in the Urdu language of India: इंडियन रिवाइज्ड वर्जन (IRV) उर्दू - 2019

copyright © 2019 Bridge Connectivity Solutions Pvt. Ltd.

Language: اردو (Urdu)

Contributor: Bridge Connectivity Solutions Pvt. Ltd.

This translation is made available to you under the terms of the Creative Commons Attribution Share-Alike license 4.0.
You have permission to share and redistribute this Bible translation in any format and to make reasonable revisions and adaptations of this translation, provided that:

- You include the above copyright and source information.
- If you make any changes to the text, you must indicate that you did so in a way that makes it clear that the original licensor is not necessarily endorsing your changes.
- If you redistribute this text, you must distribute your contributions under the same license as the original.

Pictures included with Scriptures and other documents on this site are licensed just for use with those Scriptures and documents. For other uses, please contact the respective copyright owners.
Note that in addition to the rules above, revising and adapting God's Word involves a great responsibility to be true to God's Word. See Revelation 22:18-19.

2023-01-03

PDF generated using Haiola and XeLaTeX on 18 Apr 2025 from source files dated 19 Apr 2023
4a2fe4e0-ffe8-5377-87c7-19b3106ba2bc